अंतस
अर्धवार्षिक पत्रिका अंक-28, 15 अगस्त 2025

समकालिक शिक्षा के उद्देश्य

ज्ञान आधारित कौशल अथवा
कौशल आधारित ज्ञान

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख होना चाहिए।
- अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

साभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल

निर्देशन
प्रोफेसर ब्रज भूषण

कुलसचिव
श्री विश्व रंजन

मुख्य संपादक
प्रोफेसर अर्क वर्मा

संपादक
श्री विजय कुमार पाण्डेय

संपादन सहयोग
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बालानी
प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र
प्रोफेसर ललित सारस्वत
प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा
प्रोफेसर हिमांशु यादव

अनुवाद एवं साहित्यिक सहयोग
श्री जगदीश प्रसाद
श्री दुर्गेश कुमार मिश्र

वर्तनी शोधन
श्री अरविन्द कुमार सैनी

अभिकल्प
श्री नितेश कुमार

छायाचित्र
श्री गिरीश पंत

विशेष सहयोग: प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार, समस्त संस्थान कर्मी एवं हिंदी साहित्य सभा।

संकेतक

शुभेच्छा
निदेशक 03
उप निदेशक 04
कुलसचिव 05
संपादकीय
मुख्य संपादक 06
रिपोर्ट
58वां दीक्षान्त समारोह 07
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नौवीं बैठक 09
साक्षात्कार
श्री अभिषेक आनन्द 10
गुरु दक्षिणा
डॉ. अजय कुमार 13
साहित्यिक यात्रा
मन फागुन-बसंत हो जाए 18
नटखट सहेली 19
गर्मी का मौसम आया है 19
समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान 20
थमा नहीं, थका हूं 21
डिग्रियों के भीड़ में खोया शिक्षा मूल्य 22
मां 22
अच्छे स्वास्थ्य की वापसी 23
सिंदूरी कसम 24
समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान........ 25
बच्चों की भी सुने, कोई 27
करके सीखें: डिग्री अप्रेंटिसशिप क्रांति 27
समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान 29
भारत मां के वीरों 32
मौन में पुस्तकालय 32
समर निमंत्रण 33
ए शहर 33
मेरा बनारस 34
मेरे देश का सिपाही 35
समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान 36
भाषा-विमर्श
समान्तर कहानी 37
तकनीकी लेख
ऊर्जा रूपांतरण एवं संरक्षण 38
विरासत
बहता पानी निर्मला 42
अतिथि रचनाकार
समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान 45
बाल बत्तीसी
कभी खाली न होने वाले घड़े की कहानी 48

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

आप सभी को 79वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

सर्वप्रथम मैं संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' के संपादन से जुड़े सभी सदस्यों को इस नवीनतम अंक के समयबद्ध प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूं। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि यह पत्रिका निरंतर बौद्धिक विमर्श, रचनात्मक लेखन और भाषिक सौंदर्य के माध्यम से संस्थान की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। इस अंक का विषय 'समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान' समसामयिक शैक्षणिक, सामाजिक एवं तकनीकी परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक और विचारणीय है।

वर्तमान समय सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान के महत्व का भी है। आधुनिक समाज, उद्योग, प्रशासन और मानव जीवन का हर क्षेत्र ऐसे व्यक्तियों की अपेक्षा कर रहा है, जिनमें गहन सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ इष्टतम व्यावहारिक एवं नवाचार युक्त कौशल हो।

यह संस्थान देश के उन प्रतिष्ठित संस्थानों में से है जहां शिक्षा केवल पाठ्यक्रम की परिधि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नवाचार, अनुसंधान, विश्लेषणात्मक सोच और व्यावहारिक कौशल को साथ लेकर चलने वाली एक जीवंत प्रक्रिया है। यहां के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में ज्ञान और कौशल का परस्पर संवर्धन होता है। वर्तमान शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गई है, अपितु उसका उद्देश्य ज्ञान को व्यावहारिक कौशल में रूपांतरित करना और कौशल को सैद्धांतिक ज्ञानार्जन से समृद्ध करना बन गया है। ऐसी समन्वित शिक्षा ही विद्यार्थियों को न केवल आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि उन्हें नवाचार, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सजग भी करती है।

यह संस्थान सदैव से विद्यार्थियों के शैक्षणिक उत्कृष्टता और समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है। हमें गर्व है कि हम एक ऐसे शैक्षणिक तंत्र का निर्माण कर रहे हैं जहां ज्ञान और कौशल का समन्वित संतुलन स्वर्णिम भारत को दिशा देने वाले प्रतिभाशाली नागरिकों का निर्माण करता है।

मैं पूर्णतयः आशान्वित हूं कि 'अंतस' का यह प्रयास संस्थान में भाषा और विचारों को समृद्ध करने के साथ-साथ संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को सैद्धांतिक एवं तकनीकी शैक्षणिक विमर्श से भी आप्लावित करेगा ।

एक बार पुनः स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं के साथ!

मणीन्द्र अग्रवाल
निदेशक

शुभेच्छा

उप निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

आप सभी को 79वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

आकर्षक कलेवर व रोचक सामग्री से समृद्ध, संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का नवीनतम अंक आपके पठन-पाठन हेतु प्रस्तुत है। लेखन न केवल स्वयं के भावों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है, बल्कि यह अपने द्वारा दूसरों को भी आह्लादित करता है। जब वही लेखन अपनी मौलिक भावनाओं के साथ जनमानस तक पहुंचता है, तो लेखक को भी असीम प्रसन्नता होती है।

यद्यपि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर एक तकनीकी शिक्षण संस्थान है तथापि यहां के संकाय सदस्यों / विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित रचनाएं संस्थान के बहुआयामी परिवेश तथा राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों के अपार स्नेह को निरुपित करती हैं।

वस्तुतः जब हिंदी भाषा को सरकारी काम-काज में राजभाषा के रुप में अपनाने की कल्पना की गई तो साथ में यह संकल्पना भी की गयी कि "इसका पल्लवन और पोषण इस प्रकार से हो ताकि यह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बने।" आज के वैश्विक उदारतावादी वातावरण में राजभाषा हिंदी जब तक दुनिया की अन्य भाषाओं के साहचर्य से अपने को विकसित नहीं करेगी तब तक वह अपने ही लोगों के पूर्वाग्रहों के चलते आम जनता से विमुख रहेगी। अतः अब आवश्यकता है कि राजभाषा हिंदी विज्ञान की भाषा बने, प्रौद्योगिकी की भाषा बने। मेरा विश्वास है कि इस संस्थान के विद्यार्थी और संकाय सदस्य इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाएंगे।

'अंतस' ने संस्थान परिसरवासियों को अपनी प्रतिभा को हिंदी भाषा में लिपिबद्ध करके प्रस्तुत करने का एक सहज-सशक्त माध्यम उपलब्ध कराया है। मुझे हर्ष है कि संस्थान के परिसरवासियों ने पत्रिका के अन्य सहयोगियों के समन्वय से इस पत्रिका में अपनी सहभागिता निरंतर बढ़ाई है और हिंदी साहित्य में अपनी प्रतिभा को और उच्च स्थान पर स्थापित किया है।

राजभाषा प्रकोष्ठ बड़ी सजगता से विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, संस्थान-कर्मियों और परिसरवासियों की सहभागिता से इस 'अंतस' पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन कर रहा है। इसी श्रृंखला में पत्रिका का अट्ठाइसवां अंक पाठकों को समर्पित है। सभी रचनाकारों और पाठकों को इस विश्वास के साथ बहुत-बहुत साधुवाद कि पत्रिका के सतत प्रकाशन में आपका सहयोग अनवरत जारी रहे।

सस्नेह एवं शुभकामनाओं सहित,

ब्रज भूषण
उप निदेशक
3

शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों,

संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का प्रस्तुत अंक 'समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान' जैसे समृद्ध विषय को लेकर प्रकाशित हो रहा है।

ज्ञान और कौशल एक-दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान-आधारित कौशल और कौशल-आधारित ज्ञान दोनों ही किसी परियोजना के सफलतापूर्वक निष्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दोनों शिक्षा और कार्यस्थल में महत्वपूर्ण हैं। एक ओर जहां ज्ञान-आधारित कौशल, जैसे कि सिद्धांत और अवधारणाएं एक मजबूत नींव प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर कौशल-आधारित ज्ञान, वास्तविक दुनिया में ज्ञान को लागू करने की क्षमता, व्यावहारिक अनुप्रयोग और समस्या-समाधान में मदद करता है। संस्थान भी शासन एवं समाज के स्तर पर कई कठिन समस्याओं के समाधान में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

संस्थान के विद्यार्थी शिक्षण के एक भाग के रूप में जहां शिक्षण संबंधी व्याख्यानों के माध्यम से अपने सैद्धांतिक ज्ञान को समृद्ध करते हैं वहीं शिक्षण के दूसरे भाग के रूप में विभिन्न प्रयोगशालाओं में होने वाले प्रयोगों के माध्यम से अपने व्यावहारिक कौशल को संवर्धित करने का प्रयास करते हैं। संस्थान के विद्यार्थी ज्ञान और कौशल दोनों में समृद्ध हैं जिसके फलस्वरूप वह देश-विदेश में अपनी प्रतिभा की चमक बिखेर रहे हैं। सरकार की योजनाओं के अनुरूप संस्थान में कौशल संवर्धन से संबंधित कई परियोजनाएं संचालित हो रही हैं, उनमें से ऐसी ही एक प्रमुख परियोजना 'रोजी शिक्षा केन्द्र' के नाम से संचालित हो रही है जहां अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से संस्थान परिसर के आस-पास के नागरिकों में कौशल विकसित कर उन्हें स्वावलंबी बनाने का कार्य किया जा रहा है।

'अंतस' पत्रिका के प्रस्तुत अंक में कई रचनाकारों ने भी अपने लेख के माध्यम से इस विषय पर अपने अनुभव साझा किए हैं जिससे पत्रिका के पाठकों को 'समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान' पर उपयोगी जानकारी मिलेगी। पत्रिका के संपादन मंडल के सभी सदस्यों को पत्रिका के समयबद्ध प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

79वें स्वतंत्रता दिवस की ढ़ेरों शुभकामनाओं के साथ!

विश्व रंजन
कुलसचिव

संपादकीय

मुख्य संपादक की कलम से...

अंतस परिवार से जुड़े सभी सदस्यों एवं पाठकों को सादर प्रणाम!

आप सभी को 'अंतस' के 28वें अंक के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं 79वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

'समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान' वर्तमान समय में मानव एवं समसामयिक समाज की अपरिहार्य आवश्यकताओं में से एक है। हमारा संस्थान तकनीकी संस्थान होने के कारण इस विषय की प्रासंगिकता काफी अधिक है। आज हमारे देश के युवाओं की सोच इस दिशा में काफी समीचीन है कि उनका ज्ञान कौशल आधारित हो या उनका कौशल ज्ञान आधारित हो।

विद्यार्थी हर संस्थान की शोभा एवं अमूल्य धरोहर होते हैं एवं विद्यार्थियों के लिए दीक्षान्त समारोह से बढ़कर कोई समारोह नहीं होता है। अतएव इस अंक की शुरुआत 58वें दीक्षान्त समारोह से ही है जिसका आयोजन 23 जून 2025 को संस्थान के मुख्य ऑडिटोरियम में किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री संजय मल्होत्रा रहे जिन्होंने विद्यार्थियों को हमेशा सीखते रहने तथा विफलता से न डरने के लिए प्रेरित किया।

गुरु दक्षिणा में इस बार आपकी मुलाकात होगी **पूर्व रक्षा सचिव एवं वर्तमान में संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार** से जो कि इस संस्थान के पूर्व छात्र रहे हैं। साक्षात्कार में इस बार हम मिलेंगे श्री अभिषेक आनन्द से जो कि जापान की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम में चयनित हैं तथा मैन्यू लाइफ जापान में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रुप में कार्यरत हैं। विरासत लेख के अंतर्गत सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा **'बहता पानी निर्मला'** शीर्षक से उद्धृत है जो कि विद्यार्थियों के वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है।

साहित्य यात्रा में इस बार प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु' का **मन फागुन बसंत हो जाए,** सुश्री ज्योति मिश्रा का **समर निमंत्रण,** श्रीमती अभिलाषा विश्वकर्मा का **मेरा बनारस,** एकता बब्बर का **मेरे देश का सिपाही** आदि उत्कृष्ट रचनाएं सम्मिलित हैं। इस पत्रिका की विषय वस्तु पर ही दो लेख सुश्री शहाना सुल्ताना एवं श्री मनोज कुमार वर्मा द्वारा प्रस्तुत हैं जो कि इसकी प्रासंगिकता को और सारगर्भित करते हैं। इस बार का तकनीकी लेख प्रोफेसर सुब्रत सरकार एवं डॉ. सी एस गोस्वामी द्वारा ऊर्जा रुपांतरण एवं संरक्षण को समर्पित है जो कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है।

श्री चेतनादित्य आलोक द्वारा अतिथि रचनाकार के रुप में इस पत्रिका के विषय वस्तु पर ही एक लेख प्रस्तुत किया है जो कि काफी उपयोगी होने के साथ साथ ज्ञान एवं कौशल के बीच में समन्वय भी स्थापित करता है। **बाल बत्तीसी** के अंतर्गत **कभी खाली न होने वाले घड़े की कहानी** भी इसमें प्रस्तुत है जो कि विद्यार्थी जीवन में संयम एवं दिशा-निर्देशों की महत्ता को परिलक्षित करता है।

अंत में, मै सभी पाठकों से अनुरोध करता हूं कि आप भी एक रचनाकार के रुप में 'अंतस' का हिस्सा बनने का प्रयास करें एवं अपनी श्रेष्ठ रचनाओं से इसे श्रेष्ठतम बनाने में अपना योगदान दें। इस अंक के सभी रचनाकारों तथा संपादन से जुड़े सभी सदस्यों को साधुवाद।

सादर धन्यवाद!

अर्क वर्मा

अर्क वर्मा
मुख्य संपादक

58वां दीक्षान्त समारोह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थी, संस्थान की विशिष्ट शिक्षण पद्धति तथा प्रयोगशालाओं में होने वाले अनुसंधान कार्यों को अपनी शैक्षणिक दिनचर्या का अभिन्न अंग बना लेते हैं। विद्यार्थियों को देर रात तक परिसर में अपनी अनुसंधान संबंधी परियोजनाओं पर कार्य करते हुए देखा जा सकता है। पठन-पाठन के दौरान कई विद्यार्थियों के अपने शिक्षकों के साथ आत्मीय संबंध बन जाते हैं जिन्हें वह जीवन भर संजोए रखते हैं। विद्यार्थी चाहे जहां भी रहें लेकिन वह अपने शिक्षकों (गुरुओं) के प्रति हमेशा समर्पण एवं कर्तव्य निष्ठा की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं। संस्थान भी गुरु-शिष्य की इस परंपरा का निर्वहन करते हुए अपने विद्यार्थियों को उनकी अनिवार्य शिक्षा समाप्त होने के पश्चात उपाधियां प्रदान करता है। इसी क्रम में, शिक्षा एवं दीक्षा को एक ही मंच से सम्मान प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 23 जून 2025 को संस्थान के मुख्य ऑडिटोरियम में 58वें दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया।

इस दीक्षान्त समारोह के अवसर पर 2848 विद्यार्थियों को उपाधियां दी गईं। इनमें से 269 विद्यार्थियों को पीएचडी की उपाधियां प्रदान की गई। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि आरबीआई गवर्नर श्री संजय मल्होत्रा ने छात्र-छात्राओं का आह्वान किया कि अपनी क्षमता को बढ़ाएं और सवाल पूछने से न चूकें। जब सवाल पूछे जाते हैं तभी नये विचारों का जन्म होता है। उन्होंने छात्र-छात्राओं से कहा कि एक प्रतिष्ठित संस्थान से डिग्री और एक अच्छी नौकरी होने पर यह न सोचें कि आपने अपना मुकाम हासिल कर लिया है। जिस क्षण आपको लगेगा कि आपने मुकाम हासिल कर लिया है, उस समय आप स्थिर हो जाएंगे। जिस क्षण आपको लगेगा कि आप सब कुछ जानते हैं, आप आगे बढ़ना बंद कर देंगे। उन्होंने छात्र-छात्राओं को सफलता के चार मंत्र दिए, कहा कि क्षमता में लगातार बढ़ोत्तरी, सीखते रहने की आदत, विफलता से निर्भय रहना और विश्वास करना है, यही सफलता के चार मंत्र हैं। इनका पालन कर लिया तो जीवन की हर परिस्थिति में सफलता मिलेगी। अपनी योग्यता के साथ क्षमताओं को आगे बढ़ाना आवश्यक है। किसी काम को करने में जितना समय लग रहा है, सोचें कि ऐसा क्या किया जाए कि अल्पावधि में काम खत्म हो जाए। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में आपकी क्षमता ही आपकी शक्ति है।

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर बोलते हुए संचालक मंडल के कार्यवाहक संचालक श्री महेश गुप्ता ने युवाओं से कहा कि आपने दुनिया के प्रतिष्ठित संस्थान से डिग्री ली है, अब चाहे देश में रहो या दुनिया के किसी भी कोने में, बस 'मेक नेम एण्ड कैप्चर वर्ल्ड' के सिद्धान्त पर आगे बढ़ते रहना। यह आपके लिए सुनहरा समय है। क्योंकि अधिकांश इंडस्ट्री चीन छोड़कर हमारे देश में मैन्युफैक्चरिंग यूनिट स्थापित कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन और सस्टेनेबिल्टी जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान जरूर करें।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल ने दीक्षान्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी कि जल्द ही संस्थान में 'सेंटर फॉर रिसर्च एण्ड टीचिंग' की शुरुआत की जाएगी। यह शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिए लाभकारी होगा। उन्होंने आगे जानकारी दी कि संस्थान में डिजिटल आईडी की व्यवस्था की जाएगी तथा इस बार पीएचडी सहित सर्वाधिक उपाधियां प्रदान की गई हैं। 239 छात्र-छात्राओं को 8.5 से ऊपर सीपीआई मिली है। संस्थान में वाधवानी स्कूल ऑफ एडवांस आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस एण्ड इंटेलीजेंट सिस्टम की स्थापना की जा रही है जिसके माध्यम से संस्थान को एआई-रिसर्च का सुपर हब बनाया जाएगा। तकनीक का क्षेत्र रोमांचक दौर से गुजर रहा है, जो नई चीजों तथा दुनिया के लिए प्रासंगिक अनुप्रयोगों के लिए महान अवसर प्रदान कर रहा है, विशेष रूप से भारत के लिए। उन्होंने आगे कहा कि मुझे यकीन है कि अपनी क्षमताओं और प्रशिक्षण के साथ, इस परिवर्तन में आपकी

भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

इस दीक्षान्त समारोह में 2848 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं। इनमें से पीएचडी के 269 विद्यार्थी सम्मिलित थे। पाठ्यक्रमानुसार विस्तृत विवरण निम्नलिखित है:

उपाधि		विद्यार्थियों की संख्या
पीएचडी	–	269
एमटेक-पीएचडी (संयुक्त उपाधि)	–	29
एमडेस-पीएचडी (संयुक्त उपाधि)	–	02
एमएसआर-पीएचडी (संयुक्त उपाधि)	–	02
एमटेक	–	480
एमबीए	–	145
एमडेस	–	20
एम एस (बाय रिसर्च)	–	83
पीजीपीईएक्स- वीएलएफएम	–	40
एमएससी (द्विवर्षीय)	–	194
ई-मास्टर्स	–	361
डबल्स मेजर	–	26
दोहरी उपाधि	–	93
एमएस-पीडी (एमएस पार्ट ऑफ ड्यूल डिग्री)	–	26
बीटेक	–	874
बीएस	–	204
कुल	–	2848

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर संस्थान के प्रतिभावान छात्रों को विशिष्ट पुरस्कारों एवं मेडल से सम्मानित किया गया। पुरस्कार एवं मेडल प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार से है।

प्रेसिडेंट गोल्ड मेडलः श्री तलिन गुप्ता, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

निदेशक स्वर्ण पदकः श्री कलश तलाटी, भौतिकी विभाग

निदेशक स्वर्ण पदकः श्री ध्रुव मिश्रा, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

रतन स्वरूप मेमोरियल पुरस्कारः श्री वरुण टोकस, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

डॉ. शंकर दयाल शर्मा पदकः श्री अभिषेक कुमार यादव, रसायन विभाग

इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रवीणता पदक और सामुदायिक सेवा के मामलों में नेतृत्व करने तथा कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में योगदान देने के लिए अनेक पुरस्कारों एवं पदकों से सम्मानित किया गया।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल ने पुरस्कार, पदक एवं उपाधि ग्रहण करने वाले समस्त छात्र-छात्राओं एवं उनके परिवार के सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दीं तथा दीक्षान्त समारोह में उपस्थित समस्त अतिथियों का स्वागत किया एवं आभार प्रकट किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नौवीं बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-3) कानपुर की नौवीं बैठक का आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण की अध्यक्षता में दिनांक 16 मई 2025 को संपन्न हुआ। इस बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी, इस संस्थान के कुलसचिव श्री विश्व रंजन, राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर डॉ. अर्क वर्मा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-3 कानपुर के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय के साथ-साथ समिति के सदस्य कार्यालयों के 36 कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

बैठक से पूर्व सभा कक्ष में हिंदी गीत बजाया गया। तत्पश्चात सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय ने समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी, कुलसचिव श्री विश्व रंजन, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ डॉ. अर्क वर्मा एवं उपस्थित समस्त कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत तथा हार्दिक अभिनंदन किया।

तत्पश्चात, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी ने सभी सदस्य कार्यालय प्रमुखों का स्वागत किया। उन्होंने विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट की समीक्षा करते हुए कहा कि नराकास सचिवालय को अपनी छमाही रिपोर्ट निर्धारित प्रपत्र में भरकर समय पर उपलब्ध कराएं। रिपोर्ट में स्पष्ट एवं वास्तविक आंकड़े भरें। राजभाषा नियम-5 एवं राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करें। जो कार्यालय नराकास की बैठकों में नहीं आ रहे हैं उनसे संपर्क कर बैठक में भागीदारी करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करें। उन्होंने आगे यह भी कहा कि ऐसे विभागों से क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के माध्यम से राजभाषा विभाग द्वारा संपर्क स्थापित कर भविष्य में

आयोजित होने वाली बैठकों के लिए निर्देशित करने का कार्य किया जाएगा।

तत्पश्चात, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-3) कानपुर के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण ने उपस्थित समस्त सदस्यों को प्रेरित करते हुए कहा कि आप लोग राजभाषा हिंदी के प्रति विशेष स्नेह और लगाव रखते हैं क्योंकि जब कर्मचारी अथवा अधिकारी सायंकाल 5 बजे ड्यूटी पूरी करके अपने घर की ओर जाते हैं उस समय आप इस बैठक में भागीदारी करने के लिए यहां पहुंचे हैं। उन्होंने आगे कहा कि पिछली नराकास बैठकों की अपेक्षा इस बार अधिक सदस्य भागीदारी कर रहे हैं जो कि एक अच्छा संकेत है।

उन्होंने नराकास की ओर से प्रकाशित पत्रिका 'अभिव्यक्ति' की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह पत्रिका पहले 32 पेज की बननी थी लेकिन बाद में इसको 42 पेज में बनाया गया जो नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-3) कानपुर की उत्तरोतर प्रगति का संकेत है और यह संकेत बहुत अच्छा है।

इस अवसर पर सदस्य सचिव ने सभी कार्यालय प्रमुखों और अधिकारियों से आह्वान करते हुए कहा कि इस पत्रिका के लिए सदस्य कार्यालय अधिक से अधिक संख्या में गुणवत्तापूर्ण लेख उपलब्ध कराने की कृपा करें जिससे इस पत्रिका को और अधिक संवर्धित एवं लोकप्रिय बनाया जा सके।

छमाही के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों की सूची ।

1. कर्मचारी राज्य बीमा निगम चिकित्सालय जाजमऊ, कानपुर
2. भारत संचार निगम लिमिटेड, कानपुर
3. स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, कानपुर

गत छमाही के दौरान नराकास कार्यालयों द्वारा हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका परिणाम इस प्रकार से है:

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड कानपुर द्वारा दिनांक 19.02.2025 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री सूर्य प्रकाश राठौर	सहायक श्रेणी प्रथम–लेखा	भारतीय खाद्य निगम, कानपुर	प्रथम
2	सुश्री छवि श्रीवास्तवा	वरिष्ठ सहायक	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	द्वितीय
3	श्री अभिषेक जैन	स्नातकोत्तर शिक्षक (गणित)	केन्द्रीय विद्यालय भा.प्रौ.सं. कानपुर	तृतीय

केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर द्वारा दिनांक 24.02.2025 को कार्यालयी शब्दावली प्रतियोगिता

क्रं सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री सुमित कुमार	यू.डी.सी.	भारतीय खाद्य निगम, कानपुर	प्रथम
2	श्रीमती रितु त्रिपाठी	परास्नातक शिक्षक	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	प्रथम
3	श्री मनोज कुमार कुशवाह	अवर दूरसंचार अधिकारी	भारत संचार निगम लिमिटेड कानपुर	द्वितीय
4	श्री गीत कौशल	सहायक महाप्रबंधक	स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड कानपुर	तृतीय

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यालयों द्वारा आगामी छमाही के दौरान हिंदी की प्रतियोगिताओं को आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

(1) ईसीजीसी – जून माह
(2) कर्मचारी राज्य बीमा निगम – जुलाई माह
(3) एचएएल – अगस्त माह

बैठक के अंत में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-3) कानपुर के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय ने सभी का सादर धन्यवाद ज्ञापित किया तथा राष्ट्रगान के साथ बैठक संपन्न हुई।

श्री अभिषेक आनन्द

संस्थान की पत्रिका 'अंतस' के माध्यम से साक्षात्कार कॉलम के अंतर्गत हर बार हम आपका परिचय किसी व्यक्ति विशेष से कराते हैं। पत्रिका के 28वें अंक के माध्यम से इस बार हम आपका परिचय करा रहे हैं श्री अभिषेक आनंद से। जिन्होंने अच्छे शैक्षणिक रिकार्ड के बावजूद, क्रिकेट के प्रति अपने जुनून को जारी रखा। उनकी लगन के कारण ही उन्हें जापान की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम में चुना गया। वह वर्तमान में मैन्यू लाइफ जापान में सॉफ्टवेयर इंजीनियर (Software Engineer at Manulife Japan) के रूप में कार्यरत हैं। आइए जानते हैं श्री आनंद के जीवन से जुड़े हुए कुछ दिलचस्प अनुभवों एवं यादों के बारे में...

अंतस परिवारः शुरुआत से बात करते हैं- भा.प्रौ.सं. कानपुर का सफर कैसे शुरू हुआ? क्या क्रिकेट शुरू से प्लान में था या बाद में गुगली की तरह आ गया?

श्री अभिषेक आनन्दः क्रिकेट हमेशा मेरे दिल के करीब रहा है। स्कूल के दिनों से ही मुझे इसका जुनून था। लेकिन मुझे यह भी पता था कि अगर मुझे बिना पेरेंट्स की नाराजगी के क्रिकेट खेलना है, तो पढ़ाई में भी अच्छा करना पड़ेगा। उसी संतुलन ने मुझे फोकस करने में मदद की और मैं भा.प्रौ.सं. की एंट्रेंस निकाल पाया।

भा.प्रौ.सं. कानपुर आने से पहले मैं सिर्फ सॉफ्टबॉल क्रिकेट खेला करता था। लेकिन कैंपस में आते ही मैं लेदर बॉल क्रिकेट से रू-ब-रू हुआ। वहां भा.प्रौ.सं. और बाहर के कुछ

बेहतरीन खिलाड़ियों के साथ खेलने का मौका मिला। तभी लगा कि शायद मैं इतना पीछे नहीं हूं। यहीं से मैंने क्रिकेट को एक शौक की बजाय गंभीरता से लेना शुरू किया।

अंतस परिवारः भा.प्रौ.सं. कानपुर ने आपकी व्यक्तिगत और पेशेवर यात्रा को कैसे आकार दिया? क्या कैंपस के दिनों में ऐसा कोई टर्निंग प्वाइंट आया, जिसने आपकी राह को आगे बढ़ाने की शुरुआत की?

श्री अभिषेक आनन्दः भा.प्रौ.सं. ने मुझे अनुशासन, समय-प्रबंधन और खुद पर विश्वास करना सिखाया। वहीं मैंने पढ़ाई और क्रिकेट के बीच संतुलन बनाकर महसूस किया कि क्रिकेट को एक गंभीर विकल्प की तरह लिया जा सकता है।

टर्निंग प्वाइंट तब आया जब मैं मजबूत खिलाड़ियों से मुकाबला कर रहा था और अच्छे से टिक पा रहा था। उसने मुझे यह आत्मविश्वास दिया कि मुझमें भी क्षमता है, और शायद सही अवसर मिलने पर मैं इससे कुछ बड़ा कर सकता हूं।

अंतस परिवारः भा.प्रौ.सं. की कठिन पढ़ाई के साथ क्रिकेट का जुनून कैसे जिंदा रखा? दोनों के बीच आपने कैसे संतुलन बनाया?

श्री अभिषेक आनन्दः आसान नहीं था, लेकिन दोनों चीजों से मुझे अलग-अलग ऊर्जा मिलती थी। क्रिकेट से उत्साह और उद्देश्य मिलता था, जबकि पढ़ाई से स्थिरता। मैंने सोचा था कि अगर पढ़ाई ठीक से कर लूंगा तो फिर मेरे क्रिकेट खेलने पर कोई सवाल नहीं उठाएगा। इसलिए मैंने निरंतरता बनाए रखी। कभी परफेक्ट बनने की कोशिश नहीं की, लेकिन हमेशा संतुलन बनाए रखने की कोशिश जरूर की।

मैं क्लासेज और लैब्स के बीच जो भी समय मिलता, उसे प्रैक्टिस या फिटनेस में लगाता। धीरे-धीरे यह आदत बन गई।

अंतस परिवारः क्या कभी ऐसा भी वक्त आया जब पढ़ाई और क्रिकेट दोनों रास्ते आपस में टकरा गए हों? ऐसे मौकों पर आपने क्या किया, कैसे संभाला?

श्री अभिषेक आनन्दः हां, कई बार। कभी टूर्नामेंट और परीक्षा साथ में आ जाते थे और मुझे कई बार मुश्किल फैसले लेने पड़ते थे। कुछ जरूरी मैच छोड़ने पड़े और कभी-कभी पढ़ाई भी छूटी। लेकिन मैंने हर बार टीम और फैकल्टी से खुलकर बात की। मैंने यह भी मान लिया था कि हर समय दोनों को 100% देना संभव नहीं था। बस अपनी प्राथमिकताओं को सही ढंग से तय करना और फिर उन्हें दिल से स्वीकार करना था।

अंतस परिवारः आपने भा.प्रौ.सं. क्रिकेट टीम की कप्तानी की- उस अनुभव से क्या सीखा जो क्लासरूम से नहीं सीख सकते थे? कोई ऐसा मैच का पल जो आज भी आपकी यादों में बसा हुआ हो?

श्री अभिषेक आनन्दः टीम को लीड करना अपने आप में एक बड़ी सीख थी। वहां समझ में आया कि दबाव झेलना क्या होता है, हर खिलाड़ी अलग होता है- उन्हें समझना, जोड़कर चलना और हर जीत-हार की जिम्मेदारी खुद पर लेना क्या मायने रखता है। हम सेमीफाइनल तक पहुंच गए थे, लेकिन तभी हमारी टीम का एक अहम खिलाड़ी बुरी तरह से घायल हो गया और उसे अस्पताल ले जाना पड़ा। हम लगभग मैच हारने की कगार पर थे- पूरी टीम ऑल आउट हो चुकी थी, सिर्फ वही घायल खिलाड़ी बचा था।

सबके लिए हैरानी की बात ये थी कि वो खिलाड़ी बिल्कुल वक्त पर लौट आया- किट पहनकर सीधा बल्लेबाजी करने मैदान में उतर गया। अस्पताल में रहते हुए भी वो स्कोरकार्ड लगातार देख रहा था। उसकी हिम्मत और सही वक्त पर लौटने ने मैच का रुख ही बदल दिया और हमने टूर्नामेंट जीत लिया। वो पल टीम वर्क के जज्बे और आपसी भरोसे की ऐसी मिसाल थी, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता।

अंतस परिवारः जापान, क्रिकेट और सॉफ्टवेयर- सुनने में तो ये किसी नेटफ्लिक्स डॉक्यूमेंट्री का टाइटल लग रहा है। हमें बताइए कि आप जापान कैसे पहुँचे और फिर जापान क्रिकेट एसोसिएशन का हिस्सा कैसे बने?

श्री अभिषेक आनन्दः सच कहूं तो जापान कभी प्लान में नहीं था। प्लेसमेंट के दौरान मुझे एक्सेंचर जापान से ऑफर आया। मेरे पास यह तय करने के लिए बस कुछ ही घंटे थे कि उस ऑफर को स्वीकार करूं या नहीं। मैंने जल्दी से गूगल किया कि वहां क्रिकेट होता भी है या नहीं और जी-20 क्वालिफायर में जापान की भागीदारी का एक लेख मिल गया। उसी पल तय किया कि जाऊंगा।

वहां जाकर मैं जापान क्रिकेट एसोसिएशन से संपर्क किया,

लोकल मैच खेले, और धीरे-धीरे नेशनल सेटअप का हिस्सा बन गया।

अंतस परिवारः एक्सेंचर जापान और अब मैन्यू लाइफ में काम का अनुभव कैसा रहा? आपकी टेक्नोलॉजी से जुड़ी यात्रा अब तक कैसे आगे बढ़ी है? जापान के कार्य-संस्कृति में काम करने के दौरान कोई विशेष पेशेवर या सांस्कृतिक अनुभव जो आप सीखे हों?

श्री अभिषेक आनन्दः जापान में काम करना एक बिल्कुल अलग और खास अनुभव रहा है। यहां की संस्कृति, अनुशासन, टीमवर्क और विनम्रता को बहुत महत्व देती है। पेशेवर रूप से मैंने काफी विकास किया है- एक्सेंचर से शुरुआत की और अब मैन्यू लाइफ में काम कर रहा हूं। इस दौरान कई रोचक टेक प्रोजेक्ट्स पर काम किया और एक बिल्कुल अलग कार्य-संस्कृति के साथ खुद को ढालना भी सीखा। शुरुआत में भाषा और संवाद एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन समय के साथ मैं इसमें सहज होता गया। इसने मुझे न केवल एक पेशेवर के रूप में, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में भी विकसित होने में मदद की।

अंतस परिवारः आलोचना खेल और जीवन का हिस्सा है। ऐसे हालातों से आप कैसे गुजरते हैं? क्या कभी ऐसा भी पल आया जब किसी फैसले को लेकर दुविधा रही हो या खुद पर शक हुआ हो? और फिर आपने उस दुविधा या शंका को कैसे दूर किया?

श्री अभिषेक आनन्दः बिल्कुल। हर किसी की जिंदगी में उतार-चढ़ाव आते हैं। कभी-कभी परफॉर्मेंस खराब होती है या चीजें प्लान के मुताबिक नहीं होतीं। उस समय खुद पर शक होता है। ऐसे कई मौके आए जब मुझे लगा कि क्या मैं सही कर रहा हूं- खासकर तब जब परफॉर्मेंस अच्छा नहीं था या चीजें योजना के मुताबिक नहीं चल रही थीं। लेकिन ऐसे पलों में मैं बस खुद को यह याद दिलाता हूं कि मैंने इसकी शुरुआत क्यों की थी। मैं ऐसे लोगों से बात करने की कोशिश करता हूं जिन पर मुझे भरोसा है, जो मेरी यात्रा को समझते हैं। उनका साथ

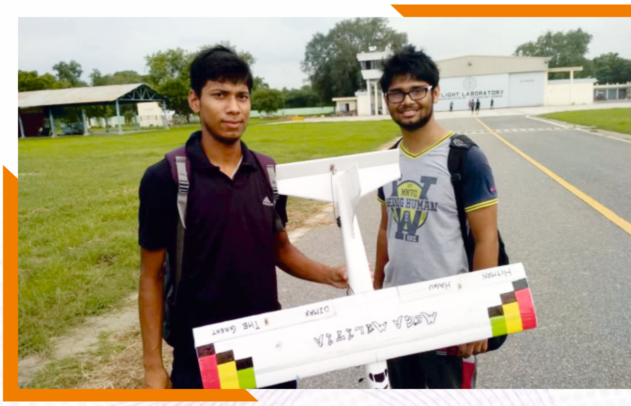

बहुत सहारा देता है।

अंतस परिवारः आगे क्या? क्या हम आपको स्टार्टअप फाउंडर, फुल-टाइम क्रिकेटर या क्लाउड आर्किटेक्ट के रूप में देखेंगे या फिर इन सभी के तौर पर?

श्री अभिषेक आनन्दः सच कहूं तो मैं हर रास्ता खुला रख रहा हूं। फिलहाल क्रिकेट और टेक्नोलॉजी- दोनों में बेहतर करने पर ध्यान है। आगे स्पोर्ट्स टेक जैसी किसी चीज में दोनों का मेल करना चाहता हूं। धीरे-धीरे चल रहा हूं, किसी तय रास्ते पर नहीं चल रहा हूं। मैं बस हर कदम सोच-समझकर उठा रहा हूं और देख रहा हूं कि ये रास्ता मुझे कहां ले जाता है।

अंतस परिवारः भा.प्रौ.सं. के छात्रों के लिए आपका क्या संदेश है- खासकर उनके लिए जो अकादमिक दबाव, अपने जुनून और एक अनिश्चित भविष्य के बीच उलझे हुए हैं?

श्री अभिषेक आनन्दः इस बात को लेकर ज्यादा टेंशन न लें कि सब अभी समझ आ जाए। उलझन होना ठीक है। बस जो चीज आपको उत्साहित करती है, उसे नजर अंदाज मत करें- चाहे म्यूजिक हो, स्पोर्ट्स, राइटिंग या कुछ और।

संतुलन बनाए रखें। तुम्हें हर चीज में सबसे बेहतरीन बनने की जरूरत नहीं है, लेकिन अगर आप सच्चे दिल से लगातार मेहनत करते रहेंगे, तो एक दिन सब समझ में आने लगेगा, और याद रखो- तुम्हारा सफर तुम्हारा अपना है। खुद की किसी और से तुलना मत करो।

अंतस परिवारः रैपिड फायर!

अंतस परिवारः क्रिकेट या कोडिंग? किससे ज्यादा जोश और रोमांच महसूस होता है?

श्री अभिषेक आनन्दः क्रिकेट-हमेशा! आखिरी ओवर का दबाव और बल्ले से सही टाइमिंग पर गेंद की टक-सी आवाज... उसका कोई मुकाबला नहीं।

अंतस परिवारः भा.प्रौ.सं. की कैंटीन की चाय या टोक्यो की सुशी?

श्री अभिषेक आनन्दः भा.प्रौ.सं. की चाय- दोस्तों के साथ उसकी बात ही कुछ और है।

अंतस परिवारः अगर जिंदगी फिल्म होती, तो उसका टाइटल क्या होता?

श्री अभिषेक आनन्दः बिहारी जलवाः कानपुर से जापान तक

अंतस परिवारः भा.प्रौ.सं. मेस का पसंदीदा खाना?

श्री अभिषेक आनन्दः हॉल-12 की चिकन करी।

अंतस परिवारः सबसे मजेदार भा.प्रौ.सं. की याद?

श्री अभिषेक आनन्दः हमारे कोच सुब्रत रॉय सर- जब मैं अच्छा खेलता, तो वे मुझे तारीफों से नवाज देते, जैसे मैं अगला उभरता सितारा हूं। लेकिन आउट होते ही उनका मूड 180 डिग्री पलट जाता। जैसे वो अचानक बिल्कुल किसी और इंसान में बदल जाते हों। ये देखना काफी दिलचस्प होता था कि कैसे वो सीधा चियरलीडर से आलोचक बन जाते थे।

अंतस परिवारः वो प्रोफेसर जिनकी क्लास कभी मिस नहीं की?

श्री अभिषेक आनन्दः जिनकी अटेंडेंस सबसे ज्यादा जरूरी थी।

अंतस परिवारः अगर इंडिया बनाम जापान मैच हो और आप लास्ट ओवर में बैटिंग कर रहे हों, तो सामने कौन बॉलर हो?

श्री अभिषेक आनन्दः किसी भी भारतीय गेंदबाज को बैटिंग करना सपना होगा- अगर चुनना हो, तो बुमराह को फेस करना चाहूंगा।

अंतस परिवारः अगर आप अपने पहले दिन भा.प्रौ.सं. लौट सकें, तो उस छोटे अभिषेक को क्या कहेंगे?

श्री अभिषेक आनन्दः भरोसा रखो, तुम बिल्कुल सही जगह पर हो- बस धैर्य बनाए रखो।

अंतस परिवारः धन्यवाद...

गुरु दक्षिणा

डॉ. अजय कुमार

भारतीय जीवन पद्धति में गुरु-शिष्य संबंधों की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। चाहे पौराणिक कथाओं की बात करें या फिर आज के विकसित समाज की बात करें, हम हर समय पाते हैं कि एक समर्थ गुरु की छाप छात्र के संपूर्ण जीवन पर बहुत मुखर होकर दिखाई पड़ती है। समर्थ गुरु और मेधावी शिष्य ही मिलकर किसी शैक्षणिक संस्था को चिरस्थायी बनाते हैं । गुरु जहां संस्था की परंपरा का परिष्कार करता है तो वहीं छात्र संपूर्ण जीवन अपनी मातृ-संस्था के प्रति श्रद्धावनत रहते हुए अहर्निश उनकी सेवा में तत्पर रहते हैं। संस्थान के पूर्व छात्र और साथ ही देश के आईआईटी सिस्टम से पढ़कर निकलने वाले हमारे पूर्व-छात्र संप्रति पूरी दुनिया में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं और साथ ही अपनी मातृ संस्था एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों का भी सफलतापूर्वक निर्वहन करते हैं।

संस्थान की गृह पत्रिका अंतस के इस 28वें अंक के माध्यम से 'गुरु-दक्षिणा' शीर्षक के अंतर्गत संस्थान के पूर्व मेधावी छात्र एवं यूपीएससी के वर्तमान अध्यक्ष श्री अजय कुमार जी से रु-ब-रु करा रहें हैं। आइए जानते है श्री अजय कुमार जी से जुड़े हुए कुछ अनुभवों, यादों, सफलताओं एवं उपलब्धियों के बारे में !

अंतस परिवारः अपने शुरुआती दिनों के बारे में कुछ बताइए।

डॉ. अजय कुमारः मेरे पिताजी रेलवे में थे। मेरी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद (अब प्रयागराज) और फिर कानपुर में हुई। जब मैं

चौथी कक्षा में था, उनका स्थानांतरण कानपुर हो गया। मैंने चौथी से ग्यारहवीं तक की पढ़ाई कानपुर में की और फिर आईआईटी में दाखिला लिया। इतना कुछ सोचा नहीं था कि आईआईटी जाएंगे। बस ये पता था कि इंजीनियरिंग करनी है और आईआईटी का नाम मशहूर था ही तो इसीलिए आईआईटी की परीक्षा दी और चयन हो गया। बाद में आईएएस में आने के बाद केरल कैडर मिला तो एक तरह से केरल और दिल्ली ऐसी दो जगह हैं जहां मैंने सबसे ज्यादा समय बिताया। कानपुर से सबसे ज्यादा यादें जुड़ी हुई हैं क्योंकि बचपन का एक बहुत यादगार समय यहां बीता।

अंतस परिवार: भा.प्रौ.सं. कानपुर का आपके जीवन पर क्या प्रभाव रहा है क्योंकि ये शुरुआती दिन किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने में बहुत विशेष महत्व रखते हैं।

डॉ. अजय कुमार: मैं एक मध्यम वर्गीय परिवार से हूं जहां बचपन खुशहाल बीता। पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहा, लेकिन आईआईटी आने पर महसूस हुआ कि यहां सभी अपने-अपने स्कूलों के टॉपर हैं। मुझे इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में दाखिला मिला, जो उस समय का सबसे प्रतिष्ठित विभाग था।

हॉस्टल जीवन नया अनुभव था- रात भर टेबल-टेनिस, म्यूजिक रूम, कैंटीन की चाय और दोस्तों संग अनगिनत पल। पहले सेमेस्टर में 6.8 सीपीआई आई, तब एहसास हुआ कि मेहनत किए बिना आगे बढ़ना संभव नहीं। आईआईटी जैसे माहौल में आपकी सीपीआई आपको बयां करती है कि लोग आपको कितनी इज्जत देते हैं इसके बाद पहली बार मैंने अकादमिक में मेहनत करनी शुरू की क्योंकि तब तक ये समझ आ गया था कि दुनिया में कुछ भी हासिल करने के लिए मेहनत बहुत ही जरूरी है। मेरा ऐसा मानना है कि अगर आपके अंदर यह क्षमता है कि आप हालातों से घबराए बिना मेहनत करते रहें, तो आप कुछ भी हासिल कर सकते हैं। यह मैंने आईआईटी से ही सीखा है और इस बात पर मैंने जीवन भर अमल किया।

अंतस परिवार: आईआईटी कानपुर से जुड़े कुछ ऐसे लोगों के नाम बताइए जिन्होंने आपके जीवन पर अहम छाप छोड़ी है कोई सहपाठी, प्रोफेसर या स्टाफ?

डॉ. अजय कुमार: मैं शुरू में किसी फैकल्टी से बहुत घनिष्ठ नहीं था, अपने काम में लगा रहता था। जैसे-जैसे प्रदर्शन बेहतर होता गया, फैकल्टी से पहचान भी बढ़ी। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में प्रोफेसर सुरेंद्र गुप्ता और प्रोफेसर एल. पी. सिंह, तथा साइकोलॉजी में प्रोफेसर ओ. पी. तायल से विशेष जुड़ाव रहा। इलेक्ट्रिकल में प्रोफेसर एल. पी. सिंह थे जिनके साथ

गहरा जुड़ाव रहा। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर के. आर. शर्मा, प्रोफेसर के. आर. श्रीवास्तव, प्रोफेसर सदगोपन के साथ भी काफी अच्छा जुड़ाव रहा।

प्रोफेसर तायल का वैकल्पिक साइकोलॉजी कोर्स किया था, जो बहुत पसंद आया। उसी प्रेरणा से सिविल सर्विस में साइकोलॉजी को वैकल्पिक विषय चुना। पढ़ाई के लिए लाइब्रेरी ही पर्याप्त थी, और शिक्षकों का सहयोग बहुत काम आया। आईआईटी कानपुर की यही खूबी है कि छात्र कभी भी फैकल्टी से पढ़ाई में मदद ले सकते हैं। मैं अक्सर प्रोफेसर तायल के पास जाकर सवाल पूछा करता था। 1984 में मैंने प्रोफेसर तायल से पूछा था कि क्या मैं आईएएस बन पाऊंगा। उन्होंने विश्वास से कहा- 'तुम जरूर बनोगे, और जितना तुम सोचते हो, उससे कहीं आगे जाओगे।'

उनकी यह बात कभी नहीं भूली, और सच साबित हुई। मेरा आईएएस में चयन हुआ, अच्छी रैंक भी आई, और केरल कैडर मिला। अब इस सेवा में 40 साल हो गए हैं जो कि एक लंबा, जिम्मेदार और संतोषजनक सफर रहा है।

अंतस परिवार: जिस संस्था से आपने अपनी यात्रा की शुरुआत की, आज उसी संस्था का आप नेतृत्व कर रहे हैं- यूपीएससी के चेयरमैन के रूप में अब आपको कैसा अनुभव हो रहा है?

डॉ. अजय कुमार: यूपीएससी चेयरमैन तो मैं अभी बना हूं और अभी सब कुछ बहुत नया है कुछ भी कह पाने के लिए। मेरे करियर में कई संतोषजनक और सार्थक कार्यकाल रहे हैं लेकिन सबसे सफल कार्यकाल रक्षा सचिव के रूप में मेरा अंतिम कार्यकाल रहा जहां पर मुझे बहुत काम करने का मौका मिला और सिर्फ काम ही नहीं बल्कि रक्षा क्षेत्र में बहुत से बदलाव करने का मौका मिला। मैं प्रधानमंत्री जी का बहुत आभारी हूं कि मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ। बहुत से लोग इस बात को समझते नहीं हैं कि यूपीएससी को संविधान में क्यों शामिल किया गया। यूपीएससी को संविधान में शामिल करने के लिए पीछे की

कल्पना यह थी कि सिविल सर्विस जो कि सरकार की कार्यकारी शाखा है यह राजनीति से प्रभावित न हो, निष्पक्ष रहे और देश के कल्याण के लिए काम कर सके। इसकी निष्पक्षता के लिए जो 3 काम यूपीएससी को करने होते हैं वो ये हैं कि भर्ती के समय या केंद्र सरकार के प्रमोशन में कोई पक्षपात न हो, किसी राजनीतिक पार्टी का प्रभाव न हो और गलत कारणों की वजह से किसी को सजा न दी जा सके। यूपीएससी की सलाह इन सभी में अनिवार्य है और मैं समझता हूं कि बहुत सोच-समझ के ये सब कुछ तय किया गया। यूपीएससी निष्पक्षता का प्रतीक है जो न तो राजनीतिक रूप से और न ही किसी अन्य रूप में समझौता करता है, और पूरी प्रामाणिकता तथा नैतिकता को बनाए रखता है। आप सिफारिश कर के यूपीएससी परीक्षा में सफलता नहीं पा सकते। यह बहुत गर्व की बात है कि पूरी निष्पक्षता और कुशलतापूर्वक यूपीएससी काम कर रहा है।

अंतस परिवार: जैसा कि हमे पता है कि आप रक्षा मंत्रालय में सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले सचिव रहे हैं और आपने बहुत सारी चीजें क्रियान्वित की हैं जैसे आईडीई एक्स लाना, सीडीएस है या अग्निवीर लाना। ये परिवर्तन अत्यंत चुनौतीपूर्ण थे। जैसा कि अग्निवीर के समय भी काफी विरोध हुआ था और इन सब विरोध के बीच इन परिवर्तनों को लाना कितना चुनौतीपूर्ण रहा?

डॉ. अजय कुमार: दो बातें जिन्हें मैंने सबसे ज्यादा मददगार माना वो ये हैं कि हर लंबी यात्रा की शुरुआत एक छोटे से कदम से होती है। दूसरा यह कि अगर मुझे भरोसा है कि जो काम मैं करने जा रहा हूं वह बिल्कुल सही है, तो मैं वह करता हूं। मैं हमेशा अपने विचारों को स्वीकारने और बदलने के लिए तैयार रहता हूं। बाकी जब भी आप कोई नया सुधार लाते हैं तो उसका थोड़ा विरोध तो होता ही है। कुछ पश्चिमी शक्तियां ऐसी भी हैं जो आपके विरोध में सक्रिय रहने का प्रयास करती हैं; सामूहिक ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत तौर पर भी आपके खिलाफ काम करती हैं। ये दोनों चीजें होती ही हैं और इससे मुझे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। मैं अपने फैसलों की समीक्षा करने और सही दिशा में बदलाव करने के लिए हमेशा तैयार रहता हूं। सबसे बड़ी बात जो मुझे लगती है, वह यह है कि सिविल सेवाओं में लोग 100% सही विकल्प की ओर भागते हैं। अगर आपको ऐसा लगता है कि यह विकल्प 90% सही है तो फैसला ले लेना ही उचित होता है और जो 10% मुझे लगता है कि गलत हो सकता है, उसमें यदि कुछ सुधार की संभावना है तो मैं उसको बदल सकता हूं। 90 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक पहुंचना न केवल अत्यधिक समय लेने वाला होता है, बल्कि संसाधनों के लिहाज से भी महंगा पड़ता है और अक्सर यह आपके निर्णयों को बेहतर बनाने में

कोई विशेष मदद नहीं करता। 100% तो कोई चीज होती नहीं है।

अंतस परिवार: आपने जीवन प्रमाण, GeM, MyGov आदि में बहुत काम किया। इस तरह के बदलाव लाने के लिए बहुत प्रयत्न लगे होंगे आपने बहुत सारे जोन में काम किया है। आपने इसकी कैसे कल्पना की और फिर अमल में कैसे लाए?

डॉ. अजय कुमार: डिजिटल परिवर्तन की दिशा में असली गति 2014 में मिली, जब प्रधानमंत्री मोदी जी ने MyGov जैसे प्लेटफॉर्म की परिकल्पना की। उस समय मैं इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय में संयुक्त सचिव था और साथ ही डीजी, एनआईसी का कार्यभार भी संभाल रहा था। प्रधानमंत्री जी ने सोशल मीडिया आधारित एक नागरिक भागीदारी प्लेटफॉर्म की कल्पना की- जो एनआईसी ने पहले कभी नहीं किया था।

टीम ने दिन-रात मेहनत की और प्लेटफॉर्म तैयार हुआ। 26 जुलाई 2014 को प्रधानमंत्री जी ने MyGov लॉन्च किया। प्रधानमंत्री बनने के बाद यह उनका पहला डिजिटल उद्घाटन था। लॉन्च के एक घंटे के भीतर लाखों यूजर्स ने रजिस्ट्रेशन शुरू किया, जिससे सिस्टम क्रैश हो गया। हम सब परेशान थे, लेकिन टीम ने 36 घंटे की लगातार मेहनत से प्लेटफॉर्म को बहाल किया।

इसके बाद मेडिसन स्क्वायर, न्यूयॉर्क (संयुक्त राष्ट्र महासभा) और सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) जैसे मंचों पर प्रधानमंत्री जी ने जब-जब इसका जिक्र किया, हर बार हजारों-लाखों लोग एक साथ प्लेटफॉर्म से जुड़ने लगे। हर बार सिस्टम पर दबाव बढ़ा लेकिन हमने सीखा, सुधारा और मजबूत किया।

अंतस परिवार: आज MyGov पर करोड़ों उपयोगकर्ता हैं, और यह भारत का एक सफलतम डिजिटल प्लेटफॉर्म बन चुका है।

डॉ. अजय कुमारः मैंने डिजिटल इंडिया को सिर्फ कागज पर नहीं, जमीन पर साकार होते देखा है। यह प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व, दूरदृष्टि और दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण संभव हुआ। एक बार एक बैठक में जब मैंने उनसे कहा कि अगर सिस्टम फेल हो गया तो क्या होगा, उन्होंने बहुत सादगी से जवाब दियाः

जब तक काम के प्रति समर्पण, सच्चाई और स्वयं को बेहतर करने की चाह है तब तक इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। यह हमारे लिए भी एक सीख थी।

अंतस परिवारः आप निजी जिन्दगी और काम के बीच ताल-मेल कैसे बैठाते हैं?

डॉ. अजय कुमारः मेरे परिवार वाले मेरी जिम्मेदारियों को समझते हैं और मुझे काम करने की पूरी आजादी देते हैं। जीवन के हर उतार-चढ़ाव में वे मेरे साथ खड़े रहे हैं। यही मेरी सबसे बड़ी ताकत है और मैं खुद को वाकई खुशनसीब मानता हूं।

जब आप सिविल सेवा का रास्ता चुनते हैं, तो बहुत-सी चीजों का त्याग करना पड़ता है- वो सुविधाएं और निजी स्वतंत्रताएं, जिनका आनंद आपके कई समकक्ष व्यक्ति निजी या कॉर्पोरेट क्षेत्र में लेते हैं।

जब प्रधानमंत्री जी का यह प्रस्ताव मेरे सामने आया कि मैं यूपीएससी से जुड़ूं, तो मैंने सबसे पहले अपनी पत्नी से बात की। उन्होंने मुझे पूरा समर्थन और प्रोत्साहन दिया। इसके बाद मैंने निजी क्षेत्र की भूमिका को पूरी तरह से छोड़ने का फैसला किया। यह आसान नहीं था, क्योंकि पहले भी प्राइवेट सेक्टर से कई अच्छे प्रस्ताव आ चुके थे, जिन्हें मैंने सिरे से ठुकराया।

हर किसी को ऐसा अवसर नहीं मिलता कि वह देश की नीति, दिशा और भविष्य को आकार देने में योगदान दे सके। भले ही निजी जीवन में कुछ सुविधाएं कम हो जाएं, पर यह जिम्मेदारी और सेवा का मौका हर त्याग से कहीं बड़ा होता है।

अंतस परिवारः आपने सदैव ऐसे पदों पर कार्य किया है, जहां बदलाव लाने की जिम्मेदारी रही है। आज की नयी पीढ़ी यूपीएससी को लाभदायक करियर की तरह देखती है और बहुत चुनौतीपूर्ण मानती है। क्या आप बता सकते हैं कि एक सिविल सेवक में वे कौन-सी गुणात्मक विशेषताएं होनी चाहिए, जो उसे जनसेवा के योग्य और प्रभावी बनाती हैं जिससे कि वो आपके जितना ऊपर उठ सकें?

डॉ. अजय कुमारः हम एक बड़े परिवर्तनशील दौर से गुजर रहे हैं। आज के सिविल सेवकों की तुलना हमारे समय के अधिकारियों से करना सही नहीं होगा, क्योंकि देश सामाजिक, तकनीकी और आर्थिक रूप से पूरी तरह बदल चुका है। जब हम सेवा में आए थे, तब अवसर सीमित थे और सिविल सेवा का मूलभाव यह था कि आप गुमनामी में रहकर, निःस्वार्थ भाव से सेवा करें। लेकिन आज की पीढ़ी डिजिटल युग में पली-बढ़ी है। वे सोशल मीडिया पर पहले ही प्रसिद्ध हो जाते हैं, और आत्मविश्वास से भरे होते हैं।

नई पीढ़ी अपने विचार खुलकर रखती है, निर्णय लेने में स्वतंत्र है और किसी भी बदलाव को लेकर जिज्ञासु भी। हमारे समय में आज्ञाकारी और अनुशासनप्रिय होना प्राथमिकता थी; आज की पीढ़ी सवाल पूछती है, संवाद चाहती है और नई राहें बनाना चाहती है। इसलिए अब वही नियम लागू करना संभव नहीं है जो हमारे समय में थे, क्योंकि समाज और समय, दोनों बदल चुके हैं।

देश की वैश्विक स्थिति को लेकर भी दृष्टिकोण बदला है। पहले विदेश जाना, 9-10 साल की सेवा के बाद, बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी। आज की पीढ़ी के लिए यह आम बात है। हम खुश होते थे जब भारत को कम विकसित से विकासशील देशों की श्रेणी में लाया जाता था। अब युवा पूछते हैं कि भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था कब बनेगा।

आज की चुनौती यह नहीं है कि कोई विदेशी कंपनी भारत में प्लांट लगाए, बल्कि यह है कि भारत खुद ऐसी तकनीक विकसित करे जो विश्व में सबसे श्रेष्ठ हो। अब सिविल सेवकों की भूमिका सिर्फ प्रशासन चलाने की नहीं है, बल्कि उन्हें भारत को वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने का दायित्व निभाना होगा।

आने वाले 25-30 साल भारत के लिए निर्णायक होंगे। नए सिविल सेवकों को यह समझना होगा कि अब उनका काम केवल प्रक्रियाएं निभाना नहीं, बल्कि देश को दिशा देना है- नीति निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हुए, भारत को वैश्विक शक्ति बनाने में योगदान देना ही उनका असली उत्तरदायित्व होगा।

अंतस परिवार: क्या इतनी व्यस्तता के बाद भी कुछ शौक निभा पाते हैं?

डॉ. अजय कुमार: पहले मैं टेबल-टेनिस, क्रिकेट और बैडमिंटन खूब खेलता था। मैं आधे मैराथन दौड़ता रहा हूं- हालांकि पिछले कुछ वर्षों से इसमें विराम आ गया है, लेकिन उम्मीद है कि इस साल फिर से दौड़ पाऊंगा, अगर सब ठीक रहा। शायद आपको पता न हो, लेकिन मेरा एक नियमित कॉलम 'बिजनेस स्टैंडर्ड' और 'दैनिक जागरण' में आता है, जो हर महीने दो बार प्रकाशित होता है, और हां, पढ़ाना हमेशा से मेरा जुनून रहा है। आईआईटी कानपुर में मैंने पढ़ाने का अवसर पाया, जहां मैंने दो नए कोर्स भी शुरू किए- एक ई-मास्टर्स प्रोग्राम के अंतर्गत और दूसरा इन-पर्सन कोर्स था, दोनों ही अर्थशास्त्र विभाग से संबंधित थे। छात्रों से जो सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली, उसके लिए मैं बेहद आभारी हूं। पढ़ाने का अनुभव बहुत ही संतोषजनक और आनंददायक रहा। उम्मीद है कि भविष्य में समय मिला तो मैं दोबारा पढ़ाना जरूर शुरू करूंगा। आईआईटी कानपुर आज भी वैसी ही समृद्ध संस्कृति और आकर्षण बनाए हुए है, जैसी हमारे समय में थी। वहां बिताया गया समय मेरे लिए अब भी बेहद प्रिय है।

अंतस परिवार: आईआईटी कानपुर को कोई सन्देश देना चाहेंगे?

डॉ. अजय कुमार: अगर पीछे मुड़कर देखूं, तो सबसे अहम बात यही लगती है कि किसी भी बड़े सफर की शुरुआत छोटे-छोटे कदमों से होती है। मेरे पास कोई गॉडफादर नहीं था, न कोई सिफारिश। जब मैं केरल गया, तो वहां का स्थानीय भी नहीं था, फिर भी प्रमाणिकता और लगन से काम किया। भारत सरकार में भी मैंने कभी किसी से कोई 'फेवर' नहीं मांगा और इस बात पर मुझे गर्व है।

मेरी एक यादगार कहानी है, जिसे मैं साझा करना चाहता हूं। मैंने अपनी मास्टर्स और पीएचडी मिनेसोटा विश्वविद्यालय से की। उस समय कॉमनवेल्थ देशों के लिए एक विदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलता था, जिसमें चयन बहुत कठिन होता था। मैं कई वर्षों तक आवेदन करता रहा लेकिन सफल नहीं हो पाया, फिर मैंने मेहनत की और GRE दिया, और पीएचडी में चयनित हुआ। मुझे हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से भी कॉल आया, लेकिन वहां फंडिंग

के लिए अलग से आवेदन करना पड़ता था। वहीं मिनेसोटा यूनिवर्सिटी के मेरे इंटरव्यू में प्रोफेसर आलोक गुप्ता ने मुझसे पूछा, ''मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?'' मैंने बस इतना कहा, ''मैं केवल मेरिट पर खड़ा हूं और वर्षों से इस अवसर के लिए प्रयास कर रहा हूं।'' उन्होंने न केवल मुझे चयनित किया, बल्कि उन्होंने उसी क्षण मुझे फेलोशिप और रिसर्च की पेशकश की, जिससे मैं पढ़ाई करते हुए कुछ कमाई भी कर सका। पीएचडी के दौरान मैंने अर्थशास्त्र के कुछ कोर्स भी लिए, जिनमें अच्छा प्रदर्शन किया। मेरी पीएचडी सिर्फ तीन वर्षों में पूरी हुई- जो वहां आज तक का रिकॉर्ड है।

तीसरे वर्ष में मुझे विश्वविद्यालय से एक मेल आया, जिसमें लिखा था कि चूंकि मैंने अर्थशास्त्र के अधिकांश कोर्स पहले ही पूरे कर लिए हैं, यदि मैं दो और कोर्स तथा एक रिसर्च पेपर (थीसिस) पूरा कर लूं तो मैं मास्टर्स डिग्री भी ले सकता हूं। उन्होंने यह भी कहा कि उसकी सारी ट्यूशन फीस माफ कर दी जाएगी।

यह मेरे लिए न केवल सम्मान की बात थी, बल्कि यह अनुभव दिखाता है कि जब आप लगातार मेहनत करते हैं, तो संस्थान खुद आपके लिए रास्ता बनाते हैं। मुझे लगता है कि भारत के संस्थानों- विशेषकर आईआईटी जैसे संस्थानों में भी ऐसी ही प्रोएक्टिव सोच होनी चाहिए, जहां संस्थाएं खुद आगे बढ़कर प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करें और अवसरों को सुलभ बनाएं।

अंतस परिवार: आपका जीवन एक प्रेरणास्रोत है। इस सकारात्मक ऊर्जा को आप कैसे बनाए रखते हैं?

डॉ. अजय कुमार: मुझे लगता है कि इस सकारात्मक सोच तक पहुंचने के लिए व्यक्ति को अपनी कठिनाइयों से होकर गुजरना पड़ता है; और कोई तरीका नहीं है। ये चीजें उम्र के साथ ही आती हैं।

अंतस परिवार: धन्यवाद...

मन फागुन-बसंत हो जाए

मन फागुन-बसंत हो जाए
फागुन की गुनगुनी सी रुन-झुन,
बिछड़ी जाती थी बिन सुध-बुध
पेड़ों की चोटी भी उधड़ी,
पत्तों की रंगत भी बिगड़ी।
देख हुआ उसका मन विचलित,
जैसे कस्तूरी को विचरित।
मन थोड़ा सा सुर्ख हुआ था,
आँखों पे ज्यों चढ़ा धुआं था।
उन धुंधली परतों के पीछे,
ज्यों उसका व्यक्तित्व खड़ा था।
इतना जब संज्ञान लिया तो,
थोड़ा मन में ठान लिया तो।
बस इच्छा पूरी हो जाए,
तन रंगो से भले ढके ना,
मन सतरंगी हो जाए।
ऐसा कुछ जीवन में आए,
शून्य पलट अनंत हो जाए।
मन फागुन-बसंत हो जाए...

ऐसी इसकी क्या परिभाषा
जो अधरों बिन जन्मी भाषा।
जैसा कौतुहल बाहर में
हृदय में जन्मे कोई आशा।
ऐसा ही है ये दिखलाता,
जो जीवन में 'जीवन रस' हो,
वो जो चला जा रहा था भी,
बहुत शीघ्र ही फिर से आता।
बस जड़ की 'जड़ता' को छोडो,
अपने रास्तों को नित जोड़ो,
मन में एक विश्वास जगा कर,
पूर्ण प्रक्रिया वाद-बढ़ाकर,
करते जाओ जो भी ऐच्छिक,
हर गिरना उठने का शैक्षिक।
तब देखो फागुन जाते ही,
थोड़े पत्ते गिर जाते ही,
कैसे जकड़ स्वतंत्र हो जाए...
मन फागुन बसंत हो जाए...

–प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु'
बी.एस.बी.ई.
भा.प्रौ.सं. कानपुर

कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होइ तात तुम पाहीं।।

भावार्थ
यह चौपाई किष्किंधाकाण्ड में उद्धृत है। हे पवनसुत हनुमान जी जगत में ऐसा कौन सा कार्य है जिसे आप नहीं कर सकते, संसार का कठिन से कठिन कार्य भी आपके स्मरण मात्र से सरल हो जाता है। अर्थात आपकी कृपा से जगत के सभी दुष्कर कार्य क्षणभर में पूर्ण हो जाते हैं।

नटखट सहेली

वो एक नटखट सहेली सी
साथ मेरे चलती है।

मैं जितने कदम बढ़ाऊं
वो भी उतना बढ़ती है।
जो रुक जाऊं कहीं
तो साथ मेरे वो रुकती है।
वो एक नटखट सहेली सी
साथ मेरे चलती है।

दिन की दोपहरी में
मुझसे अठखेली करती है,
कभी छोटी कभी लंबी होकर
मुझे चिढ़ाया करती है।
वह एक नटखट सहेली सी
साथ मेरे चलती है।

कभी शाम की तन्हाई में
साथ मेरे जब होती है,
जो चाहूं बात करना तो
खामोशी से सुनती है।
वह एक नटखट सहेली सी
साथ मेरे चलती है।

प्रकाश देता उसको अस्तित्व
पर कहलाती वो मेरी है,
सुख दुख में जो साथ न छोड़े
ऐसी परछाई मेरी है।
वह एक नटखट सहेली सी
साथ मेरे चलती है।

–रंगोली अवस्थी
सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

गर्मी का मौसम आया है

गर्मी का मौसम आया है,
साथ अपने कड़कती धूप लाया है।
सूरज चाचू ने फैलाई अपनी माया है,
और हम लोगों को खूब सताया है।

सूख गया है जल नदियों का,
पंछी प्यासा भटक रहा,
ए.सी. कूलर कुछ काम न कर रहे,
आदमी पसीना पोछते-पोछते थक रहा।

गलियां सूनी हो जाती हैं,
सूरज जब शिखर पर होता है,
उस पर बिजली कट जाए तो,
सोने पे सुहागा हो जाता है।

कुल्फी वाले भैया की घंटी से,
थोड़ी हलचल होती है,
जिसको खाकर थोड़ी
राहत तो सबको मिलती है।
दिन जल्दी न ढ़लते है,
लोग पैदल चलने से बचते हैं,
कहीं छांव न मिलती सड़को पे,
क्यूंकि पेड़ तो हमने ही काटे हैं,
फिर अब पसीने से क्यों घबराते हैं।

गर्मी का मौसम आया है,
साथ अपने कड़कती धूप लाया है।

–छवि श्रीवास्तवा
वरिष्ठ सहायक
विद्युत अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समकालिक शिक्षा के उद्देश्य
ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान

भूमिका

21 वीं सदी में शिक्षा के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक परिवर्तन ने पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों को चुनौती दी हैं और एक नए प्रकार की शिक्षा प्रणाली की मांग उत्पन्न की हैं, जिसे हम समकालिक शिक्षा कह सकते हैं। यह शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान देने पर केंद्रित है, बल्कि छात्रों को व्यावहारिक कौशल और जीवनोपयोगी क्षमताओं से भी लैस करती है। समकालिक शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान आधारित कौशल (Knowledge-based Skills) और कौशल आधारित ज्ञान (Skill-based Knowledege) के बीच संतुलन स्थापित करना। यह लेख इसी विचारधारा पर केंद्रित है कि आज की शिक्षा प्रणाली में इन दोनों तत्वों का क्या महत्व है और शिक्षा नीति किस दिशा में अग्रसर हो रही है।

समकालिक शिक्षा की परिभाषा

समकालिक शिक्षा वह है जो वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी संदर्भों में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें ज्ञान और कौशल दोनों प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ऐसा सक्षम बनाना है कि वे बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में खुद को ढाल सकें और सार्थक योगदान दे सकें।

ज्ञान आधारित कौशलः अवधारणा और महत्व

ज्ञान आधारित कौशल का अर्थ है- किसी विशेष विषय या क्षेत्र में गहन जानकारी के आधार पर कौशल विकसित करना। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर को चिकित्सा विज्ञान का गहरा ज्ञान आवश्यक है ताकि वह सटीक निदान और उपचार कर सके। इसी प्रकार, एक इंजीनियर को तकनीकी सिद्धांतों की समझ होनी चाहिए ताकि वह नवाचार कर सके।

इस प्रकार के कौशल में निम्नलिखित विशेषताएं शामिल होती हैं:

1. सैद्धांतिक गहराई
2. तर्क एवं विश्लेषण क्षमता
3. अनुसंधान और नवाचार की क्षमता

कौशल आधारित ज्ञानः अवधारणा और महत्व

कौशल आधारित ज्ञान का तात्पर्य है व्यावहारिक कौशल के माध्यम से ज्ञान अर्जित करना। इसमें प्राथमिकता क्रियाशीलता और अनुभव को दी जाती है। उदाहरण के लिए एक बढ़ई, मिस्त्री, रसोइया या तकनीशियन अपने कार्यों के दौरान अनुभव से जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह कौशल आधारित ज्ञान कहलाता है।

इसमें प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. हस्त–निर्मित अनुभव पर आधारित
2. प्रयोगात्मक शिक्षा
3. उद्योगोन्मुखता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और समकालिक शिक्षा

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP 2020) में समकालिक शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की गई है। इस नीति में शिक्षा को बहुआयामी, लचीला, समावेशी और कौशल उन्मुख बनाने पर बल दिया गया है। नीति में स्पष्ट उल्लेख है कि शिक्षा केवल परीक्षा पास करने का माध्यम नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह जीवन जीने और समाज में योगदान देने की क्षमता भी विकसित करे।

नीति के प्रमुख बिंदुः

- स्कूल स्तर पर कौशल शिक्षा को अनिवार्य बनाना
- इंटरडिसिप्लिनरी लर्निंग की अवधारणा को लागू करना
- प्रैक्टिकल आधारित लर्निंग पर जोर देना
- स्कूल से कॉलेज स्तर तक शिक्षा को रोजगार से जोड़ना

ज्ञान बनाम कौशलः क्या श्रेष्ठ है?

यह प्रश्न अक्सर उठता है कि ज्ञान अधिक महत्वपूर्ण है या कौशल? इसका उत्तर यह है कि दोनों ही समान रूप से आवश्यक हैं। ज्ञान बिना कौशल अधूरा है और कौशल बिना ज्ञान दिशाहीन हो सकता है।

– केवल ज्ञान व्यक्ति को सैद्धांतिक रूप से सक्षम बना सकता है, परंतु व्यावहारिकता में असमर्थ कर सकता है।

– केवल कौशल व्यक्ति को क्रियाशील बना सकता है, परंतु बिना ज्ञान के नवाचार और निर्णय में कठिनाई आती है।

इसलिए शिक्षा में दोनों का संतुलन अनिवार्य है।

वर्तमान चुनौतियां और समाधान

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों से जूझ रही है:

कंठस्थ प्रणाली का वर्चस्व

- कौशल आधारित पाठ्यक्रमों की कमी
- शिक्षकों का प्रशिक्षण अपर्याप्त

समाधानः

1. शिक्षा में परियोजना आधारित सीख को अपनाना।

2. प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का आयोजन

3. उद्योग और शिक्षा संस्थानों के बीच समन्वय।

4. तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

समकालिक शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण करना है। आज के समय में विद्यार्थियों को ज्ञान आधारित कौशल और कौशल आधारित ज्ञान, दोनों से सुसज्जित करना आवश्यक है। यह न केवल उन्हें रोजगार योग्य बनाएगा, बल्कि उन्हें एक उत्तरदायी नागरिक और सामाजिक नवोन्मेषक भी बनाएगा। जब शिक्षा ज्ञान और कौशल दोनों का संतुलन बनाकर चलती है, तभी वह वास्तव में पूर्ण और सार्थक मानी जाती है।

–क्षमा जायसवाल
अधीक्षक
कार्यालय अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य
भा.प्रौ.सं. कानपुर

अंतस के 27 वें अंक के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार

जैसा कि आप सभी को विदित है कि अंतस पत्रिका में प्रकाशित तीन सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के लेखकों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में अवगत कराया जाता है कि 27वें अंक की शीर्ष तीन रचनाएं इस प्रकार हैं:

1. **अद्भुत अमेजन : डॉ. अर्णव भट्टाचार्य**
   संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
2. **पगली अम्मा: ज्योति मिश्रा, पीएचडी छात्रा, बीएसबीई**
3. **उच्च-दांव वाला सबक: डॉ. अमर कुमार बेहेरा**
   डिजाइन विभाग

थमा नहीं, थका हूं!!

आज खुद को बहुत दूर खड़ा पाता हूं,
जैसे भीड़ में भी एक अजनबी सा नजर आता हूं।
वक्त की चाल तेज थी, मैं थम सा गया,
जिम्मेदारियों के बोझ में कहीं खो सा गया।

जो कभी दिल के करीब था, वो सपना अब धुंधला है,
जुनून की आग अब राख मे बदली हुई शोला है।
धूल जम गई है उन पन्नों पर, जहां ख्वाब लिखे थे,
कभी जिन रास्तों पर चलने की कसमें खाई थीं,
अब वो रास्ते ही बिछड़ने लगे हैं।

पर शायद...
कहीं भीतर अब भी एक हल्की सी लौ जल रही है,
जो कहती है --
तू थमा नहीं है, बस थका हुआ है।
तू थमा नहीं है, बस थका हुआ है।

–आशीष शर्मा 'अनमोल'
कनिष्ठ तकनीशियन
पदार्थ विज्ञान पाठ्यक्रम
भा.प्रौ.सं. कानपुर

डिग्रियों की भीड़ में खोया शिक्षा का मूल्य

कंधों पर बस्ते, आंखों में ख्वाब, कभी डॉक्टर, कभी इंजीनियर का नकाब।

पढ़ते हैं बच्चे सालों-साल, मगर अंत में मिलता है एक खाली सवाल।

कक्षा में रटा-रटाया पाठ, ना सोचने की छूट, ना सवालों की बात।

सर्टिफिकेटों की माला पहनाई जाती है, पर हुनर की बात कहां बताई जाती है?

डिग्री मिली, पर दिशा नहीं, कौशल है अधूरा, शिक्षा में गहराई नहीं

इंटरव्यू की कुर्सी पर जब बैठते हैं, तब जिंदगी के सवालों से हार मान लेते हैं।

ना संवाद है, ना समझदारी, ना सामाजिक चेतना, ना कोई तैयारी।

मशीन बन गए हैं छात्रगण सब, कहां खो गया वो सीखने का अद्भुत रब?

शिक्षा थी कभी दीप जलाने का नाम, अब बन गई है बस नंबरों का जाम।

गुरु कहां हैं? वो मूल्य कहां हैं? जो बनाते थे इंसान, अब वो उसूल कहां हैं?

जरूरत है अब कौशल आधारित ज्ञान की, ना कि सिर्फ ज्ञान आधारित कौशल की।

ताकि डिग्री नहीं, दक्षता हो पहचान, और शिक्षा बने फिर से परिवर्तन का प्रमाण।

–क्षमा जायसवाल
अधीक्षक
कार्यालय अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मां

मां...
घर से दूर ये घर कहलाता है...
पर आंगन तो सिर्फ तेरे घर में ही खिलता है...
खुशबू तो यहां भी आती है इन ब्रांडेड परफ्यूम्स की...
पर पेट भरने वाली खुशबू तो तेरे हाथों से ही आती है...
सूरज तो कहने को यहां भी उगता है...
पर सुबह तो तेरे डांटने से ही शुरू होती है...
कहने को रूई जैसे तकिए तो हैं...
पर परियों के सपने तो तेरी गोद में ही आते हैं...
झूठी ख्वाहिशें तो रोज डरा देती हैं...
सुकून के वो सपने न जाने कहां गुम हो जाते हैं...
ऐसे ही कभी जब खुद से रूठ जाती हूं...
मां... रो-रो के तुझे याद बहुत करती हूं...
हां मां...
तुझे बहुत याद करती हूं।

–स्वातिस्मिता मंत्री
कैंपस स्कूल
भा.प्रौ.सं. कानपुर

अच्छे स्वास्थ्य की वापसी

मैंने सुना भूल गया। मैंने देखा कुछ याद रहा। मैंने करके देखा समझ गया।

स्वास्थ्य के शारीरिक और भावनात्मक पहलुओं के बारे में सटीक ज्ञान प्राप्त करना साथ ही आहार और पोषण को समझना और स्वच्छ हरे-भरे परिवेश में रहना एक स्वस्थ खुशहाल जीवन जीने के लिए जरूरी है। पौधा-आधारित संपूर्ण खाद्य आहार का उपयोग प्रतिदिन की दिनचर्या में व शारीरिक गतिविधि को शामिल कर स्वस्थ्य परिवेश में रह कर ही जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

वर्तमान समाज अक्सर भागदौड़ भरी संस्कृति और तेज-तर्रार जीवनशैली का महिमामंडन करता है हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर इसका असर स्पष्ट है। भागदौड़ भरी जिंदगी व जीवनशैली से सेहत संबंधी गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। कार्यस्थल पर बढ़ता काम का दबाव खासकर युवाओं में तनाव का कारण बन रहा है। लंबे समय तक कार्य करना देर रात में कार्य करना अल्पावधि समय-सीमा में काम करना और नियोक्ता की बढ़ती मांगों के कारण दबाव महसूस कर रहे हैं। सभी का मानना है कि स्वस्थ रहने के लिए तीन पहलू अति आवश्यक है एक तो मानसिक स्वास्थ्य, दूसरा शारीरिक स्वास्थ्य और तीसरा स्वच्छ हरा-भरा परिवेश। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता। है प्रायोगिक तौर पर हमें कुछ आदत डालनी चाहिए।

प्रयोग करें: घर के आस पास पेड़ पौधे लगाकर अवलोकन अवश्य करें घर को प्राकृतिक सुंदरता से सजाएं। पेड़ हवा को शुद्ध करते हैं, हमें बीमारियों से बचाते हैं, हमारी सड़कों और शहरों को ठंडा रखते है, बाढ़ और जल प्रदूषण से बचाते हैं, तनाव पूर्ण समय में पेड़ मन को शांति देते हैं।

प्रयोग करें: प्रतिदिन कही भी किसी समय कुछ मिनट का ध्यान, व प्रार्थना अवश्य करें तो अद्भुत मानसिक स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति होना निश्चित है। हर धर्म में संभव है तरीके अलग हो सकते है पर इससे मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जरुरी यह नहीं कि आप किसका ध्यान करते है जरुरी यह है कि आप ध्यान प्रार्थना कर मन को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी नियंत्रित रख पाते है।

शारीरिक स्वास्थ्य का सही मतलब है बीमारियों को कैसे दूर रखें, अच्छे स्वास्थ्य के लिए सही भोज्य पदार्थ का सेवन और शारीरिक कसरत दोनों अति आवश्यक है। नयी शोध में ये निकल के आया है कि सही खानपान से 80 प्रतिशत स्वास्थ्य लाभ होता है।

<u>शोधित जीवनशैली:</u>

- सुबह सबसे पहले कम से कम आधा लीटर पानी और रात को सोने से पहले एक गिलास पानी पिएं। प्रतिदिन लगभग दस हजार कदम चलने की आदत डालें।
- रोजाना कम से कम सात से नौ घंटे सोने की आदत डालें ।
- सूर्यास्त होने के पहले शाम का भोजन करें।
- प्रतिदिन खाने की विंडो आठ घंटे की बनाएं बाकी के सोलह घंटे पानी के ऊपर निर्भर रहे।
- सप्ताह में एक दिन पानी पीकर व्रत रखें, साल में एक या दो बार नवरात्रि का व्रत अवश्य रखें।
- प्रतिदिन अपने शरीर के वजन का एक प्रतिशत विभिन्न प्रकार की सब्जियां व फल खाने की आदत डालें।
- मोटे अन्न का सेवन करें ।
- परिष्कृत, एवं अत्यधिक तले खाद्य पदार्थ, रिफाइंड, चीनी, मांस मछली और डेयरी उत्पाद से बचें।
- लगभग एक गिलास या दो सौ मिलीलीटर प्रतिदिन हरी सब्जियों और फलों के मिश्रित जूस का सेवन करें।

प्रयोग करे: फ्रेश ग्रीन अमृत जूस- 5 से 10 ग्राम आंवला, 50 से 80 ग्राम गाजर, 30 से 50 ग्राम चुकंदर, 100 ग्राम लौकी, 100 ग्राम खीरा, 25 से 50 ग्राम टमाटर, 5 से 10 ग्राम कच्ची हल्दी, 5 से 10 ग्राम अदरक, पांच पत्ती पालक की, पांच पत्ते धनिया की, 5 से 10 ग्राम शहजन पत्ती, 5 से 10 ग्राम एलोवेरा, 50 से 80 ग्राम संतरा, 50 से 80 ग्राम अनार या सेव, इन सभी को ग्राइंडर में

पीसकर छन्नी या सूती कपड़े से छान कर या जूसर मशीन से रस निकाल लें। स्वादानुसार नींबू और नमक मिला सकते है। इसका प्रतिदिन सुबह खाली पेट सेवन करने से अनगिनत बीमारियों में अदभुत लाभ होता हैं।

ग्रीन जूस सिर्फ एक चलन नहीं है- यह पोषण का एक पावरहाउस है।

पोषक तत्वः ग्रीन जूस विटामिन, मिनरल और इलेक्ट्रोलाइट्स का एक अच्छा स्रोत है। यह आपको पत्तेदार सब्जियों से पोषक तत्व प्राप्त करने में मदद कर सकता है, जिन्हें आप अन्यथा नहीं खा सकते हैं।

पाचनः ग्रीन जूस पाचन में मदद कर सकता है और इसमें प्रीबायोटिक्स हो सकते हैं जो आपके पाचन तंत्र में लाभकारी बैक्टीरिया का समर्थन करते हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमताः ग्रीन जूस में मौजूद पोषक तत्व आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं।

सूजनः ग्रीन जूस सूजन को कम करने में मदद करता है।

वजन घटानाः ग्रीन जूस नाश्ते, नाश्ते या दोपहर के भोजन के लिए कम कैलोरी वाला विकल्प हो सकता है। यह आपके मेटाबॉलिज्म को बढ़ाने में भी मदद कर सकता है।

त्वचा का स्वास्थ्यः ग्रीन जूस में विटामिन 'ए', 'सी' और 'के' होते हैं, जो आपकी त्वचा को हाइड्रेटेड, दृढ़ और चमकदार बनाए रखने में मदद करते हैं।

विषहरणः ग्रीन जूस आपके शरीर को साफ और विषहरण करने में मदद करता है।

–तीर्थराज प्रजापति
वरिष्ठ तकनीशियन
संगणक केंद्र
भा.प्रौ.सं. कानपुर

सिंदूरी कसम

सेना सजग हमारी है,
पूरी अब तैयारी है
दांया बाजू काट चुके,
अब बाएं की बारी है
सेना सजग हमारी है।

65 में सबक सिखाया,
लाहौर में आईना दिखाया,
कारगिल में भी पटकाया,
अब पीओके की बारी है
सेना सजग हमारी है।

पहले भी समझौता निभाया,
शिशुपाल भांति सदैव समझाया
अब यह 100वीं गलती कर डाली है,
सेना सजग हमारी है,
पूरी सब तैयारी है।

भारत माता के चरणों में,
नभ-जल-थल का मस्तक है
लाव लश्कर के साथ भारत का,
दुश्मन दरवाजे पर दस्तक है

चुन-चुन कर मारे जाओगे,
ऐसी सिदूंरी कसम हमारी है
पूरी सब तैयारी है,
सेना सजग हमारी है।

–अभिनव मिश्रा
कनिष्ठ सहायक
भर्ती अनुभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समकालिक शिक्षा के उद्देश्य
ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान

समकालिक शिक्षा के उद्देश्य- ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि ये दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। एक दूसरे के अभाव में यह किसी कार्य को करने की अवधारणा में मात्र एक सामान्य स्थिति है। मनुष्य ने विज्ञान को अपने बुद्धि कौशल का माध्यम बनाकर बड़े आश्चर्यजनक आविष्कार किए हैं। वस्त्र, भोजन और भवन के क्षेत्र में, औषधि निर्माण और शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में मनुष्य की विजय दुंदुभी बज रही है। प्रकृति पर मनुष्य की इस विजय यात्रा में महान सहयोग देने वाला कुछ यदि है तो वह कौशल ही है जो समय के साथ अनवरत रूप से अद्यतन ताल-मेल बिठाकर एक से बढ़कर एक, मनुष्य को नवीनतम आविष्कार करने हेतु प्रेरित कर रहा है।

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। आविष्कार, ज्ञान एवं कौशल के समग्र रूप से ही संभव है। ज्ञान एवं कौशल शिक्षा के अमूल्य तत्व हैं। इसी क्रम में यह भी कहा जा सकता है कि शिक्षा भी जीवन का एक अभिन्न अंग है। जीवन को परिपूर्ण एवं उन्नतिशील बनाने के लिये शिक्षित होना अति आवश्यक है। शिक्षित मनुष्य न केवल स्वयं का विकास करता है बल्कि वह अपने साथ-साथ अपने आस-पास के परिवेश से लेकर संपूर्ण राष्ट्र को विश्व पटल पर अपने ज्ञान एवं कौशल से प्रकाशित करता है। प्राचीन काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होती रही है। शिक्षा का वर्तमान स्वरूप ज्ञान एवं कौशल पर आधारित है। इसके माध्यम से व्यक्ति नैतिक, शारीरिक, चारित्रिक, सैद्धांतिक, व्यावहारिक एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त करके अपने गुणों को विकसित करता हैं। शिक्षा किसी समाज या राष्ट्र का ऐसा दर्पण होती है जो उस समाज या देश की समृद्धि, विकसित या विकासशील अवस्था को दर्शाती है। समकालिक शिक्षा का मूल उद्देश्य शिक्षार्थियों में तार्किक, बौद्धिक, सैद्धांतिक, व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भी विकसित करना है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रभावशाली परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा के बढ़ते स्तर से आर्यभट्ट, रामानुजन जैसे महान गणितज्ञों, चरक जैसे महान चिकित्सक, महात्मा गांधी, सावित्रीबाई फुले एवं डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैसे महान वैज्ञानिकों ने भारत को गौरवशाली राष्ट्र की संज्ञा प्रदान की है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली अध्यात्म, धर्म, दर्शन से प्रभावित थी जबकि वर्तमान शिक्षा, सैद्धांतिक ज्ञान के

साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा नई शिक्षा नीति 2020 जो कि कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन, एक महान वैज्ञानिक एवं पूर्व चेयरमैन, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, की अध्यक्षता में गठित हुई थी, उसमें भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगोचर करते हुए महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए हैं जिसकी मुख्य विशेषताएं- भाषा का उपयोग, डिजिटल परिवर्तन, समावेशी शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण आदि शामिल हैं। यह शिक्षा नीति 21 वीं सदी के भारत की पहली शिक्षा नीति है। इस शिक्षा नीति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को प्रतिस्थापित किया है जो कि अत्यन्त पुरानी हो चुकी थी एवं राष्ट्र को विकसित करने की दिशा में इस शिक्षा नीति में यह परिवर्तन आवश्यक था। इसके अंतर्गत शिक्षा में कई ऐसे पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया है जिनके गहन अध्ययन, प्रयोगात्मक प्रशिक्षण से विभिन्न क्षेत्रों में कौशल आधारित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए सरकार द्वारा अलग से संबंधित कौशल के प्रशिक्षकों को भी नियुक्त किया गया है। भारत में समकालीन शिक्षा के उद्देश्य व्यापक हैं जिनके माध्यम से व्यक्तियों में ज्ञान, कौशल और क्षमता विकसित करना, सामाजिक और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना और जीवन की चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार करना शामिल है। ये उद्देश्य व्यक्तिगत विकास, राष्ट्रीय विकास और सामाजिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

मनुष्य के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। शिक्षित व्यक्ति जीवन के कठिन से कठिन पड़ावों को सहजता से पार कर लेते हैं। वे समाज के लिये उच्च आदर्शों का निर्माण कर एक अच्छा वातावरण तैयार करते हैं। उच्च शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं जो कि नागरिकों को आत्मनिर्भर बनाने में अमूल्य सहयोग प्रदान करते हैं। साक्षर एवं प्रतिभावान नागरिक देश को अंतर्राष्ट्रीय

स्तर पर सम्मान दिलाते हैं। यह भी सत्य है कि शिक्षा राष्ट्र को व्यापक स्तर पर प्रभावित करती है।

ज्ञान आधारित कौशल से तात्पर्य गहन अध्ययन, विश्लेषण से प्राप्त किया गया ऐसा सैद्धांतिक ज्ञान जो व्यक्ति में कार्य कुशलता एवं दक्षता का विकास करता है। किसी भी क्षेत्र में कौशल प्राप्त करने से पूर्व संबंधित क्षेत्र का गूढ़ ज्ञान होना अति आवश्यक है क्योंकि बिना अध्ययन से प्राप्त कौशल व्यावहारिक दृष्टि से तो उपयुक्त होता है किन्तु उसमें तर्कशीलता और सैद्धांतिक गहराई की कमी होती है। उदाहरणार्थ डॉक्टर, अध्यापक, वैज्ञानिक इत्यादि ऐसे पेशे या स्किल हैं जिनमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक एवं सैद्धांतिक ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

वहीं कौशल आधारित ज्ञान अनुकूल प्रशिक्षण एवं निरंतर अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है। कौशल (स्किल) का महत्व इतना व्यापक है कि किसी भी क्षेत्र में बेहतर तरीके से कार्य करने हेतु प्रशिक्षण लेना ही पड़ता है। व्यक्ति को सैद्धांतिक ज्ञान के अतिरिक्त सामाजिक जीवन में उसका प्रयोग कैसे करना है, का ज्ञान होना भी बहुत जरूरी है क्योंकि जीवन की विभिन्न परिस्थितियां ऐसी होती हैं जिनमें व्यावहारिक ज्ञान ही अधिक काम आता है। अंग्रेजी में एक कहावत भी है- 'Practical knowledge is better than bookish knowledge' इसलिए सरकार भी विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में कौशल विकास योजना से संबंधित वोकेशनल कार्यक्रमों का संचालन कर रही है जिससे व्यक्तियों में स्वरोजगार की भावना विकसित हो सके तथा वे आत्मनिर्भर बन सकें। विभिन्न कौशल योजनाओं में प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, लखपति दीदी योजना, हस्तशिल्प कौशल एवं कौशल विकास योजना आदि शामिल हैं जिनके अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रम, इंटर्नशिप एवं छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही हैं जिससे युवाओं में बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जा सके।

भारत का रक्षा क्षेत्र भी आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर है जिसमें रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, हिन्दुस्तान एरोनॉटिकल लिमिटेड, आयुध विनिर्माणी, भारत इलेक्ट्रॉनिक लिमिटेड इत्यादि ने राष्ट्र को विकसित होने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सरकार द्वारा घोषित ऑपरेशन सिंदूर में भी भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का विश्व पटल पर अपना लोहा मनवाया है जिसमें भारत ने स्वदेश निर्मित ब्रह्मोस मिसाइल का प्रयोग कर अपनी युद्ध कला कौशल का वीरता एवं अदम्य साहस के साथ निर्धारित लक्ष्य का सटीकता से निरूपण कर, ऑपरेशन को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई राष्ट्राध्यक्षों ने भी भारत की इस त्वरित एवं सटीक कार्रवाई की भूरि-भूरि प्रशंसा तथा रक्षा क्षेत्र में इस आत्मनिर्भरता की सराहना की।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेक तकनीकी एवं डिजिटल उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग ने समकालिक शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान की है। एआई द्वारा संचालित कक्षाएं, प्रोजेक्टर, ऑनलाइन कक्षाओं, चैट जीपीटी, कोर्सएरा, स्वयं आदि वेबसाइटों, दीक्षा ऐप इत्यादि की मदद से कई कठिन विषयों को आसानी से पढ़ा जा सकता है एवं भिन्न-भिन्न तरीके से अध्ययन, शोध कार्य इत्यादि किए जा सकते हैं। वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण अधिकतम कार्यालयों (सरकारी/निजी क्षेत्र) के कार्य भी कर्मचारियों द्वारा घर से ही डिजिटल माध्यम से संपन्न किए जा रहे थे जिसे वर्क फ्रॉम होम नाम दिया गया तथा स्कूली छात्रों की कक्षाएं भी ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की जा रही थीं।

समकालीन शिक्षा में डिजिटलीकरण, विभिन्न वोकेशनल पाठ्यक्रम एवं निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण ने भारत में शिक्षा के नए एवं प्रभावशाली स्वरूप को जन्म दिया है। इस प्रकार हम जान सकते हैं कि समकालिक शिक्षा में कौशल एवं ज्ञान दोनों समय एवं परिस्थिति के अनुसार समान महत्व रखते हैं। किसी भी देश की समृद्धि, उन्नति एवं विकास के लिए, उस देश की शिक्षा में ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान का संतुलन होना आवश्यक है क्योंकि ज्ञान एवं कौशल अलग न होकर एक दूसरे के पूरक हैं।

–मनोज कुमार वर्मा
अधीक्षक
आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

बच्चों की भी सुने, कोई

आओ सभी, सुनते है बच्चों की भी
बच्चों के मन की भी कोई सुन ले
कहते है वो हम भी नही हैं किसी से कम,
पानी की बोतल, बोझ बस्तो से झुकी कमर
हर चीज में अव्वल आने की होड़
आखें भी उनकी होती है नम!
बेटा, बेटी तुमको टॉप है करना,
सम्मान, प्रथम श्रेणी के अंक है पाना,
थाली में रखा हे जो खाना,
सब काम, पढ़ने के बाद तुमको है खाना!
पापा! मम्मी! बाल मन को समझो आप भी,
सता रहा है नंबर वन नहीं आने का गम,
पापा? मै भी कभी नही था, थी, किसी से कम,
मम्मी दबाव के कारण,
निकल रहा अब दम!
कौन समझेगा, इन बच्चों की भी
न डालो उम्मीदों का दबाव अभी से
जी लेने दो, हमें भी अपना बचपन।।

—विकास यादव
कनिष्ठ सहायक
संगणक केंद्र
भा.प्रौ.सं. कानपुर

करके सीखें: डिग्री अप्रेंटिसशिप क्रांति

छात्र और शिक्षक हमारे विश्वविद्यालय के जीवंत गलियारों में चलते हैं। कक्षाओं, गलियारों और करियर मेलों में आज एक महत्वपूर्ण प्रश्न पहले से कहीं ज्यादा जोर से गूंजता है कि आज शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या होना चाहिए- ज्ञान आधारित कौशल या कौशल आधारित ज्ञान? हालांकि यह एक अर्थपूर्ण पहेली की तरह लग सकता है, लेकिन इसके निहितार्थ बहुत गहरे हैं, खासकर ऐसी दुनिया में जहां पारंपरिक डिग्री अक्सर विकसित हो रहे उद्योगों के साथ सामंजस्य बैठाने के लिए संघर्ष करती है।

पारंपरिक विभाजन

ऐतिहासिक रूप से, विश्वविद्यालय ज्ञान बनाम कौशल में ज्ञान के स्रोत रहे है। छात्र दर्शन, विज्ञान, साहित्य आदि विषयों को इस इरादे के साथ पढ़ते थे कि यह उन्हें किसी भी करियर के लिए तैयार करेगा। इस बीच, कौशल को अक्सर व्यावसायिक प्रशिक्षण का क्षेत्र माना जाता था। यह द्विआधारी-ज्ञान बनाम कौशल-काफी हद तक निर्विवाद रहा।

हालांकि, आधुनिक कार्यस्थल ने इस मॉडल को बाधित कर दिया है। नियोक्ता तेजी से ऐसे स्नातकों की तलाश कर रहे हैं जो न केवल जानकार हों बल्कि तुरंत तैनात किए जा सकने वाले हों तथा टीमवर्क, आलोचनात्मक सोच, डेटा प्रवाह और डिजिटल टूल में निपुण हों। परिणामस्वरूप, उच्च शिक्षा के सामने एक चुनौती है कि किसी चीज के बारे में सीखने और कुछ करने के बीच की सीमाओं को धुंधला करना है।

वैश्विक बदलाव

डिग्री अप्रेंटिसशिप के उदय के क्रम में यू.के. का डिग्री अप्रेंटिसशिप कार्यक्रम इस बात का एक जीवंत केस स्टडी प्रस्तुत करता है कि कैसे इस संतुलन को फिर से परिभाषित किया जा रहा है। 2015 में शुरू किए गए, ये कार्यक्रम पूर्णकालिक भुगतान वाले काम को अंशकालिक विश्वविद्यालय अध्ययन के साथ जोड़ते हैं। प्रशिक्षु अपना समय व्याख्यान कक्ष और कार्यस्थल के बीच विभाजित करते हैं, वेतन और विश्वविद्यालय की डिग्री दोनों कमाते हैं- बिना उस ऋण बोझ के जो अक्सर पारंपरिक विश्वविद्यालय शिक्षा के साथ होता है।

आश्चर्यजनक लाभ

छात्र व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं और एक मजबूत रिज्यूम के साथ स्नातक होते हैं। नियोक्ता एक ऐसा कार्यबल तैयार करते हैं जो उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप हो। विश्वविद्यालय उद्योग से जुड़े रहते हैं, पाठ्यक्रम को प्रासंगिक

बनाए रखते हैं।

यह मॉडल अब जर्मनी (जिसकी लंबे समय से चली आ रही दोहरी प्रणाली है), ऑस्ट्रेलिया और नीदरलैंड जैसे देशों में इसी तरह की योजनाओं को प्रेरित कर रहा है। भारत में भी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 व्यावसायिक और शैक्षणिक शिक्षा के लिए अधिक एकीकृत दृष्टिकोण का संकेत देती है, जिसमें बहु-विषयक शिक्षा और उद्योग-संबंधी इंटर्नशिप की वकालत की गई है।

कौशल-आधारित ज्ञान

एक नया शैक्षणिक दर्शन डिग्री अप्रेंटिसशिप और इसी तरह के मॉडल जो कौशल-आधारित ज्ञान के दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, एक साइबर सुरक्षा प्रशिक्षु केवल अमूर्त क्रिप्टोग्राफिक एल्गोरिदम नहीं सीखता है, बल्कि वास्तविक समय के डिजिटल बुनियादी ढांचे की सुरक्षा करते हुए उन्हें लागू करता है।

यह दृष्टिकोण प्रासंगिक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देता है- जिसमें छात्र न केवल यह समझते हैं कि कोई चीज कैसे काम करती है, बल्कि यह भी कि वास्तविक दुनिया में यह क्यों मायने रखती है। यह अनुकूलनशीलता को बढ़ावा देता है, जिससे शिक्षार्थी ऐसे युग में भविष्य के लिए तैयार होते हैं जब करियर और आवश्यक कौशल-पाठ्यक्रम तेजी से विकसित हो रहे हैं।

विश्वविद्यालयों की भूमिका

आइवरी टावर्स से इनोवेशन हब तक इस विकास का मतलब यह नहीं है कि विश्वविद्यालयों को गौरवशाली प्रशिक्षण केंद्र बन जाना चाहिए। इसके बजाय, उन्हें लागू ज्ञान और आलोचनात्मक सोच के इनक्यूबेटर के रूप में अपनी भूमिका को फिर से परिभाषित करना चाहिए। ज्ञान अभी भी मायने रखता है लेकिन इसकी डिलीवरी अनुभवात्मक, पुनरावृत्ति और प्रामाणिक समस्याओं से जुड़ी होनी चाहिए।

विश्वविद्यालय ये कर सकते हैं

पाठ्यक्रम बनाने के लिए उद्योगों के साथ साझेदारी करें। मॉड्यूलर और स्टैकेबल क्रेडेंशियल प्रदान करें। सभी विषयों में लाइव प्रोजेक्ट, फील्डवर्क और सिमुलेशन एम्बेड करें। माइक्रो-क्रेडेंशियल और री-स्किलिंग प्रोग्राम के माध्यम से आजीवन सीखने की सुविधा प्रदान करें।

छात्रों के लिए

छात्रों को स्वयं से न केवल यह पूछना चाहिए कि मुझे कौन सी डिग्री लेनी चाहिए बल्कि यह भी कि मैं इसके साथ अभी और क्या कर सकता हूं? ऐसे कार्यक्रमों की तलाश करें जो वास्तविक दुनिया के अनुभवों को एकीकृत करें। उद्योग के पेशेवरों से सलाह प्रदान करें। अंतःविषयक अन्वेषण को प्रोत्साहित करें।

छात्रों को न केवल समस्याओं को हल करने के लिए बल्कि उन्हें ज्ञान व कौशल के बीच इष्टतम समन्वय स्थापित करने हेतु तैयार रहना चाहिए।

निष्कर्ष

वास्तव में, भविष्य में ज्ञान आधारित कौशल और कौशल आधारित ज्ञान के बीच का अंतर कम हो रहा है। भविष्य की शिक्षा व्यावहारिक कार्य समझ को मजबूत करने और समझ व्यावहारिक कार्य को समृद्ध करने वाली होनी चाहिए। कक्षा और कार्यस्थल अब अलग-अलग क्षेत्र नहीं हैं बल्कि एक सशक्त, प्रबुद्ध शिक्षार्थी के सह-निर्माता हैं।

डिग्री अप्रेंटिसशिप केवल डिग्री हासिल करने का एक नया तरीका नहीं है बल्कि शिक्षित होने के मतलब को परिभाषित करने का एक नया तरीका है।

आइए, हम इस बदलाव को अपनाएं- शिक्षा और उद्योग के बीच एक समझौते के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा की ओर एक साहसिक कदम के रूप में अपनाएं जो सार्थक और रोजगार योग्य, सैद्धांतिक और सामरिक, गहन और व्यावहारिक दोनों हो।

–प्रोफेसर अमर कुमार बेहरा
डिजाइन विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समकालिक शिक्षा के उद्देश्य
ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान

देश को उच्च स्तर के कौशल और कौशल आधारित ज्ञान वाले व्यक्तियों की आवश्यकता है, समकालिक शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान और कौशल के बीच संतुलन स्थापित करना है। यह केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि ज्ञान को व्यावहारिक कौशल में परिवर्तित करने पर भी बल देता है। आइए हम इस बारे में विस्तार से चर्चा करते हैं।

ज्ञान आधारित कौशल से यह मतलब है कि पहले व्यक्ति को विषय की गहरी समझ हो, जिससे वह अपने कौशल को और अधिक प्रभावशाली ढंग से लागू कर सके। जैसे कि एक इंजीनियर को तकनीकी सिद्धांतों का व्यापक ज्ञान होना आवश्यक है ताकि वह अपनी तकनीकी कुशलता को सही दिशा में ले कर जा सके। इंजीनियरिंग, भौतिकी और गणित जैसे क्षेत्रों में सभी छात्रों को पहले सैद्धांतिक ज्ञान दिया जाता है। उदाहरण के रूप में, इंजीनियरिंग में पहले थ्योरी पढ़ाई जाती है जैसे यांत्रिकी, विद्युत सर्किट आदि, फिर लैब में उसका व्यावहारिक अनुप्रयोग कराया जाता है।

कौशल आधारित ज्ञान में व्यक्ति पहले व्यावहारिक कौशल प्राप्त करता है और फिर धीरे-धीरे उससे जुड़ा ज्ञान विकसित करता है। उदाहरण के रूप में, एक लकड़ी का काम करने वाला पहले लकड़ी का काम करना सीखता है, फिर उसे तरह-तरह की लकड़ी की किस्मों, उनके गुणों और उपयोगों की समझ विकसित होती है। कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और तकनीकी डिजाइन में छात्र पहले व्यावहारिक कोडिंग और डिजाइन टूल्स का उपयोग सीखते हैं, फिर धीरे-धीरे जटिल एल्गोरिथम और सैद्धांतिक अवधारणाओं को समझते हैं।

हमारे देश के प्रधानमंत्री द्वारा भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली के तहत अब भारतवर्ष में भी अन्य विकसित देशों की तरह ही दोनों दृष्टिकोणों को अपनाकर विद्यार्थियों को सक्षम बनाने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे वे न केवल सैद्धांतिक रूप से जानकार हों, बल्कि व्यावहारिक रूप से दक्ष भी हों। इसके लिए हमारे देश में कई तरह की योजनाएं भी चलायी जा रही हैं जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4 (पीएमकेवीवाई 4) यह कौशल प्रमाणन योजना लोगों को उद्योग से संबंधित कौशल प्रशिक्षण लेने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई है ताकि उन्हें बेहतर आजीविका प्राप्त करने में मदद मिल सके।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 3 (पीएमकेवीवाई 3) 2020-21 भारत सरकार के कौशल विकास और उद्यमिता

मंत्रालय (एमएसडीई) का एक आई. डी. 1 कार्यक्रम है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 2 (पीएमकेवीवाई 2) 2016-20) 2015 में शुरू की गई प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) युवा कौशल प्रमाणन के लिए निःशुल्क अल्पकालिक प्रशिक्षण और मौद्रिक पुरस्कारों के माध्यम से कौशल विकास को बढ़ावा देती है।

प्रधान मंत्री कौशल केंद्र (पीएमकेके) पीएमकेके रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए देश के प्रत्येक जिले में आदर्श प्रशिक्षण केंद्र हैं। ये केंद्र उच्च गुणवत्ता वाले उद्योग संचालित पाठ्यक्रम चलाने के लिए सुसज्जित हैं।

जन शिक्षण संस्थान (जेएसएस) यह योजना कक्षा 8 तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले या कक्षा 8 और 12 के बीच स्कूल छोड़ने वाले व्यक्तियों के व्यावसायिक कौशल और तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने पर केंद्रित है। इसका लक्ष्य उत्पादकता को बढ़ावा देना और आजीविका के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध कराना है।

शिल्पकार प्रशिक्षण योजना (सीटीएस) यह योजना भारत के घरेलू उद्योगों में विभिन्न नौकरियों के लिए कुशल श्रमिकों का निरंतर प्रवाह सुनिश्चित करती है। व्यवस्थित प्रशिक्षण के माध्यम से, लक्ष्य औद्योगिक उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा दोनों को बढ़ावा देना है। यह युवा पीढ़ी में रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए एक तकनीकी मानसिकता को बढ़ावा देगा।

शिल्प अनुदेशक प्रशिक्षण योजना (सीआईटीएस) शिल्प प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण डीजीटी की अनिवार्य जिम्मेदारी है और यह शिल्पकार प्रशिक्षण योजना (सीटीएस) योजना (सीटीएस) की शुरुआत से ही चालू है। प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को कौशल और प्रशिक्षण पद्धति दोनों में व्यापक प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे तकनीकों से परिचित हो सकें।

उन्नत व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना यह उन्नत

व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना (एवीटीएस) अल्पकालिक मॉड्यूलर पाठ्यक्रमों के माध्यम से चयनित कौशल क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करती है जो एक से छह सप्ताह की अवधि के लिए संचालित होते हैं। इसका उद्देश्य ऐसे पाठ्यक्रमों की पेशकश करना भी है जो औद्योगिक प्रतिष्ठानों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल हों।

महिलाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम यह महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम सभी महिलाओं को विभिन्न उद्योगों में काम करने के लिए कौशल सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह उन्हें प्रशिक्षक बनने, अपना व्यवसाय शुरू करने, महिलाओं के अनुकूल विशिष्ट व्यवसायों की पहचान करने और तद्नुसार इस प्रशिक्षण को लागू करने की योजना बनाने में मदद करता है।

आईटीआई के उन्नयन के लिए योजनाएं- इस पहल में ऐसी योजनाएं शामिल हैं, जिनका उद्देश्य आईटीआई को ऐसे संस्थानों में बदलना है जो सर्वोत्तम प्रथाओं, कुशल और उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण को प्रदर्शित करते हैं और उद्योगों के साथ स्थायी और प्रभावी संबंध स्थापित करते हैं।

भारतीय कौशल संस्थानों (आईआईएस) की स्थापना कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में उपलब्ध वर्तमान कार्यक्रमों से परे प्रशिक्षण मानकों को बढ़ाने के लिए की जा रही है। यह स्थानीय/क्षेत्रीय उद्योग आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उद्योग के सहयोग से विशेष क्षेत्रों में प्रशिक्षुओं को 'कौशल प्रशिक्षण' प्रदान करता है।

कौशल ऋण योजना

कौशल ऋण योजना जुलाई 2015 में राष्ट्रीय व्यवसाय मानकों और योग्यता पैक से जुड़े कौशल विकास पाठ्यक्रमों के लिए व्यक्तियों को संस्थागत ऋण प्रदान करने के लिए शुरू की गई थी और राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचा (एनएसक्यूएफ) योग्यता ढांचे (एनएसक्यूएफ) के अनुसार प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रमाण पत्र/डिप्लोमा/डिग्री प्रदान की गई थी।

ज्ञान आधारित कौशल और कौशल आधारित ज्ञान- इन दोनों दृष्टिकोणों के अलग-अलग प्रभाव होते हैं और शिक्षा तथा कार्यक्षेत्र में अलग-अलग परिस्थितियों में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

1. ज्ञान आधारित कौशल के प्रभाव:

- **गहरी विषयगत समझ:** इस दृष्टिकोण में व्यक्ति पहले विषय की सैद्धांतिक समझ विकसित करता है, जिससे वह जटिल समस्याओं को अधिक प्रभावी ढंग से हल करने में सक्षम होता है।
- **अनुसंधान और नवाचार:** यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास में अधिक सहायक होता है, क्योंकि मजबूत ज्ञान आधार के बिना नवाचार कठिन हो सकता है।
- **लंबे समय तक स्थायित्व:** जब व्यक्ति को किसी क्षेत्र का व्यापक ज्ञान होता है, तो वह बदलते समय और तकनीक के अनुरूप अपने कौशल को अनुकूलित करने में सक्षम होता है।

2. कौशल आधारित ज्ञान के प्रभाव:

- **त्वरित व्यावसायिक दक्षता:** यह दृष्टिकोण व्यक्ति को बिना अधिक सैद्धांतिक अध्ययन के सीधे काम करने की क्षमता प्रदान करता है।
- **हाथों-हाथ सीखने की प्रवृत्ति:** व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से व्यक्ति सीखते समय स्वयं समस्याओं का हल निकालता है, जिससे उसका ज्ञान अधिक व्यावहारिक और प्रासंगिक बनता है।
- **कम समय में रोजगार के अवसर:** जिन क्षेत्रों में कौशल प्रशिक्षण अधिक महत्वपूर्ण होता है, जैसे कि मशीन ऑपरेशन, बढ़ईगिरी, या ग्राफिक्स डिजाइन, वहां यह दृष्टिकोण जल्दी रोजगार दिलाने में मदद करता है।

समकालिक शिक्षा में इन दोनों का संतुलन आवश्यक

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन दोनों दृष्टिकोणों को मिलाकर एक समावेशी मॉडल अपनाया जा रहा है। जैसे मेडिकल शिक्षा में पहले सैद्धांतिक ज्ञान दिया जाता है (शरीर विज्ञान और दवा के सिद्धांत), फिर व्यावहारिक कौशल विकसित किए जाते हैं (सर्जरी और रोग निदान)।

इस संतुलन से व्यक्ति न केवल सैद्धांतिक रूप से सक्षम बनता है बल्कि व्यावहारिक रूप से भी दक्ष होता है, जिससे उसे अपने ज्ञान और कौशल का सर्वोत्तम उपयोग करने की सुविधा मिलती है।

दुनिया में कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने ज्ञान और कौशल के सही संतुलन से सफलता हासिल की है। यहां कुछ प्रमुख उदाहरण हैं:

- **इलॉन मस्क**– टेस्ला और स्पेसएक्स के संस्थापक, जिन्होंने तकनीकी क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किए।
- **ओपरा विनफ्रे**– एक प्रसिद्ध टेलीविजन होस्ट और उद्यमी, जिन्होंने कठिनाइयों के बावजूद सफलता प्राप्त की।
- **विराट कोहली**– भारतीय क्रिकेटर, जिन्होंने अपने कौशल और मेहनत से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई।
- **गौतम अडानी**– भारतीय उद्योगपति, जिन्होंने व्यापार जगत में बड़ी उपलब्धियां हासिल की।
- **नेल्सन मंडेला**– दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति, जिन्होंने सामाजिक न्याय और समानता के लिए संघर्ष किया।
- **मार्क जुकेरबर्ग**– फेसबुक के संस्थापक, जिन्होंने सोशल मीडिया को नया रूप दिया।
- **मुकेश अंबानी**– रिलायंस इंडस्ट्रीज के प्रमुख, जिन्होंने भारत में व्यापार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।
- **मैरी कॉम**– भारतीय बॉक्सर, जिन्होंने खेल जगत में कई उपलब्धियां हासिल की।
- **बानू मुश्ताक**– भारतीय लेखिका जिन्हें अभी हाल में ही लघु कथाएं हार्ट लैंप के लिए बुकर पुरस्कार से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सम्मानित किया गया।

ज्ञान आधारित कौशल और कौशल आधारित ज्ञान के दृष्टिकोण विभिन्न शैक्षणिक क्षेत्रों में अलग-अलग तरीकों से लागू होते हैं। कुछ विषयों में सैद्धांतिक ज्ञान का गहन अध्ययन आवश्यक होता है, जबकि कुछ में व्यावहारिक अनुभव अधिक महत्वपूर्ण होता है। आइए कुछ प्रमुख शैक्षणिक क्षेत्रों में इनकी भूमिका को समझते हैं:

1. विज्ञान और तकनीक

- **ज्ञान आधारित कौशल:** इसमें पहले छात्रों को थ्योरी का ज्ञान प्रदान किया जाता है उसके बाद ही वे उसका व्यावहारिक तौर पर प्रयोग करते हैं।
- **कौशल आधारित ज्ञान:** कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और तकनीकी डिजाइन में छात्र पहले व्यावहारिक कोडिंग और डिजाइन टूल्स का उपयोग सीखते हैं, फिर धीरे-धीरे जटिल एल्गोरिथम और सैद्धांतिक अवधारणाओं को समझते हैं।

2. चिकित्सा और स्वास्थ्य

- **ज्ञान आधारित कौशल:** मेडिकल विद्यार्थियों को पहले शरीर विज्ञान, फार्माकोलॉजी और रोगों का सिद्धांत सिखाया जाता है।
- **कौशल आधारित ज्ञान:** सर्जरी, रोग निदान और नर्सिंग जैसे क्षेत्रों में छात्रों को पहले व्यावहारिक अनुभव दिया जाता है- जैसे कि मरीजों की देखभाल और क्लीनिकल टेस्टिंग।

3. कला और डिजाइन

- **ज्ञान आधारित कौशल:** कला इतिहास और रंग सिद्धांत जैसे विषयों में पहले सैद्धांतिक पढ़ाई होती है।
- **कौशल आधारित ज्ञान:** ग्राफिक डिजाइन, पेंटिंग और मूर्तिकला में छात्र पहले व्यावहारिक कार्य करते हैं और बाद में इसके पीछे के सैद्धांतिक ज्ञान को समझते हैं।

4. प्रबंधन और व्यापार

- **ज्ञान आधारित कौशल:** व्यापार रणनीति, अर्थशास्त्र और वित्तीय मॉडल का गहन अध्ययन कराया जाता है।
- **कौशल आधारित ज्ञान:** नेतृत्व, वार्तालाप कौशल और उद्यमिता में व्यक्ति पहले व्यावहारिक रूप से काम करता है और फिर उसके पीछे के सिद्धांतों को सीखता है।

5. हस्तकला और तकनीकी कार्य

- **कौशल आधारित ज्ञान:** बढ़ईगिरी, मैकेनिकल, रिपेयरिंग और शेफ ट्रेनिंग जैसे क्षेत्रों में पहले व्यावहारिक स्किल विकसित की जाती है फिर उसकी सैद्धांतिक पृष्ठभूमि भी सिखाई जाती है।

समकालिक शिक्षा में दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग करके छात्रों को उद्योग और समाज के लिए बेहतर तैयार किया जा सकता है और भारत को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी एक नई पहचान दिलाई जा सकती है। विद्यार्थी ही हमारे देश का भविष्य हैं। कौशल आधारित ज्ञान और ज्ञान आधारित कौशल के समन्वय से हम 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के सपने को भी साकार कर सकते हैं।

–शहाना सुल्ताना
वरिष्ठ सहायक
पी.के. केलकर पुस्तकालय
भा.प्रौ.सं. कानपुर

भारत मां के वीरों

वतन पर मर मिटने वाले,
भारत मां के वीरों,
तुम ही हो इस दुनिया में,
हम सबके सच्चे हीरो ।।
मेरी क्या हस्ती सामने तेरे,
जैसे हो कोई जीरो,
तुम ही हो इस दुनिया में,
हम सबके सच्चे हीरो।।
शरहद पर गर,
कोई ललकारे,
तुम सीना उसका चीरो,
तुम ही हो इस दुनिया में,
हम सबके सच्चे हीरो ।।
हम भारतीय को है यकीं,
तुम सब पर शूरवीरों,
ले लोगे पीओके,
पाकिस्तान से,
गर अनुमति हो,
देश के वजीरों।।
वतन पर मर मिटने वाले,
भारत मां के वीरों,
तुम ही हो इस दुनिया में,
हम सबके सच्चे हीरो।।

–भरत सोमैया
वरिष्ठ तकनीशियन
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मौन में पुस्तकालय

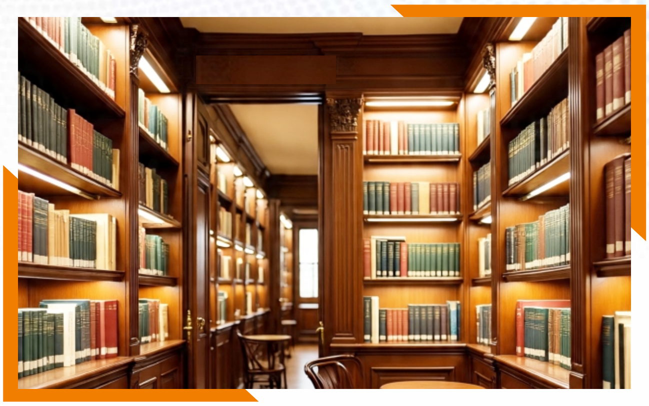

जब वाणी से रस हो निष्प्रभ, ज्ञान गगन में छा जाए नभ।
जब वाणी हो कटुता की छाई, शब्द बनें सिर्फ शोर की परछाई।
तब ओढ़ मौन का शांत चादर, मन हो जैसे निर्मल सागर।
वह मौन ही देगा दृष्टि प्रखर, ज्ञान-द्वार तक ले जाए निश्छल।
वह राह जहां दीप जलते हैं, ग्रंथों से मन पुलकित रहते हैं।
जहां बहती हो विचारों की धारा, वही है पुस्तकालय ज्ञान सितारा।
वहीं मिलेंगे शब्द महान, जिनमें छिपा प्रकाश अंशुमान।
वहीं मिलेगा तेज दिव्य बोध, जिससे आगे आशुतोष की सोच।
वहीं है दीपों का उजियारा, वहीं है मन का सच्चा किनारा।
जहां न कोई युद्ध न क्रंदन, बस पन्नों से हो आत्मरंजन।
न युद्ध, न क्रोध, न कोई तकरार, बस सपनों की होती है पुकार।
दीपक की लौ में खामोश रात, मन बनता है शक्ति का शांति घाट।
यही है वह पवित्र स्थान, जहां सोच पहनती है मुकुट महान।
हर कोने में, हर पाठक के संग- इतिहास पहनता है चुपचाप, हर रंग।
यद्यपि संघर्ष हो विकराल, न हो कहीं उसका कोई प्रतिपाल।
उसी में छिपा है निर्माण महान, उसी में बसता है जीवन का गान।
संघर्ष नहीं तो शक्ति कहां ? पौरुष नहीं तो भक्ति कहां ?
यही तप, यही है साधना, यही है मानव की आराधना।

–अंशुमान गुप्ता
पुस्तकालय अप्रेंटिस
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समर निमंत्रण

संताप की आंधी पिरोई, जब हृदय के गर्भ में,
नेत्र से होकर बहा था, जो कथा के मर्म में...
जब हृदय सागर स्वरूपी गरल का मंथन हुआ,
चल दिए सब देव-दानव श्रेष्ठता-संघर्ष में।

है समरभूमि ये जीवन, बांध लो तलवार अपनी,
इस उदधि से पार पाएं, थाम लो पतवार अपनी...
हम तमस को चीर पाएं, तुम जलाओ वो मशाल,
इस अनल से शीत पाएं, मोड़ दो गंगा विशाल!

जब मनस की पीर बढ़कर दे तुम्हें क्रंदन नया,
खेल जाओ हर चुनौती, बन चलो कुन्दन खरा!
छाया भी जब साथ छोड़े, मन हो दुख से ओत-प्रोत...
बंद मुट्ठी खोल पोछो अश्रु-धाराओं का स्रोत।

इस अकेलेपन के कांटों और अंतस का विरोध,
आशा का दामन संभालो, वक्ष को कर लो कठोर।
निशा के नीरव गगन में हर समय हो नया शोर,
रात के अवसाद में ही छिपी है एक नई भोर।

जब समय की तंग घड़ियां, रेत सी गिरती पटल पर,
जब प्रथा की स्याह लड़ियां, शूल सी चुभती विकल कर...
वर्जनाएं तोड़ तुम नए ज्ञान को आकार दो,
'भीष्म-प्रतिज्ञाओं' से नई पीढ़ियों को तार दो!!

—ज्योति मिश्रा
पी.एच.डी. छात्रा
भा.प्रौ.सं. कानपुर

ए शहर

क्यों है तू इतना बेसब्र, ए शहर?
क्यों घुले हर शाम फिजा में
थकावटों का जहर?
जैसे तू एक कदम भी ना थमता है
ना सूर्योदय कुछ तेरे लिए
ना कभी दिन ढलता है
तेरी रातें ऐसी जिनमें नींद नही
सितारे घुल जाते हैं
इसके उजाले में
क्यों भला तू कश्मकश अपनी
भरके चलता है एक प्याले में?
इस जमीन पर मेरा नाम भला
पर इमारतें तो तेरी हैं
खून तेरा बहे इन सड़कों में
तो आखिर कैसे रगें ये मेरी हैं?
तेरी ही परछाई हूं मैं
तेरे बनाए उजाले में
नहीं खबर है तुझको अब तक
ये बेसब्री तेरी अपनी है

—मो. सुफयान
बी.एस. मैथ एवं साइंटिफिक कम्प्यूटिंग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मेरा बनारस

मैं जन्मी बनारस में पर पिछले 25 वर्षों से आईआईटी कानपुर में रह रही हूं। आज शाम बैठे-बैठे मुझे बनारस के घाटों की याद आ गई। बचपन से लेकर आज तक जो समय उन स्थानों पर बिताएं आज एक बार फिर वह जीवंत हो उठा।

वैसे तो वाराणसी भारत का सबसे पुराना शहर है। यह भारत के आध्यात्म, धर्म, साहित्य, कला, संगीत संस्कृति और शिल्प का प्रमुख केन्द्र है। वाराणसी का नाम दो नदियों से मिलकर बना है वरुण और आसि जो गंगा नदी में मिलती है। काशी अर्थात 'प्रकाश का शहर' जिसे मोक्ष की नगरी भी कहते जिसे काशी के नाम से भी जाना जाता है। इस शहर के घाटों पर केवल स्नान और पूजा अर्चना के स्थान नहीं है, बल्कि ये हजारों वर्षों की संस्कृति, आस्था और इतिहास के साक्षी हैं।

कहा जाता है कि काशी के अधिकांश घाटों का निर्माण 18 वीं शताब्दी में मराठा और पेशवा शासकों ने करवाया था। इनमें से कई घाट प्राचीन काल से ही मौजूद हैं, लेकिन समय-समय पर उनका पुनर्निर्माण होता रहा। घाटों की संख्या लगभग 84 मानी जाती है और हर घाट का अपना अलग महत्व और उसकी कथा है। अस्सीघाट, दशाश्वमेध घाट, मणिकर्णिका घाट और पंचगंगा घाट प्रमुख घाटों में गिने जाते हैं।

अस्सीघाट - मान्यता है कि यही पर मां दुर्गा ने शुंभ-निशुंभ राक्षसों का वध किया था।

दशाश्वमेध घाट - यह घाट भगवान ब्रह्मा द्वारा शुंभ अश्वमेघ यज्ञ करने के कारण प्रसिद्ध है।

मणिकर्णिका घाट - यह मोक्ष देने वाला घाट माना जाता है।

पंचगंगा घाट - यहां पांच पवित्र नदियों का संगम माना जाता है।

आज भी बनारस के घाट दुनिया भर के श्रद्धालुओं और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यहां की सुबह और शाम की गंगा आरती का दृश्य अद्भुत होता है। इस समय ऐसा प्रतीत होता जैसे कि पूरी दुनिया ही उन घाटों पर बसी है। घाटों पर नाव की सवारी करते समय ऐसा लगता है जैसे समय ठहर गया हो और प्राचीन भारत की आत्मा हमें छू रही हो।

वाराणसी के घाट गंगा नदी के धनुष की आकृति होने के कारण मनोहारी लगते है। गंगा केवल काशी में ही उत्तरवाहिनी हैं तथा शिव के त्रिशुल पर बसे हुए सभी घाटों पर शिव स्वयं विराजमान है। विभिन्न विख्यात संत और महापुरुषों ने इन्ही घाटों पर आश्रय लिया जिनमें तुलसीदास, रामानन्द, रविदास आदि प्रमुख हैं।

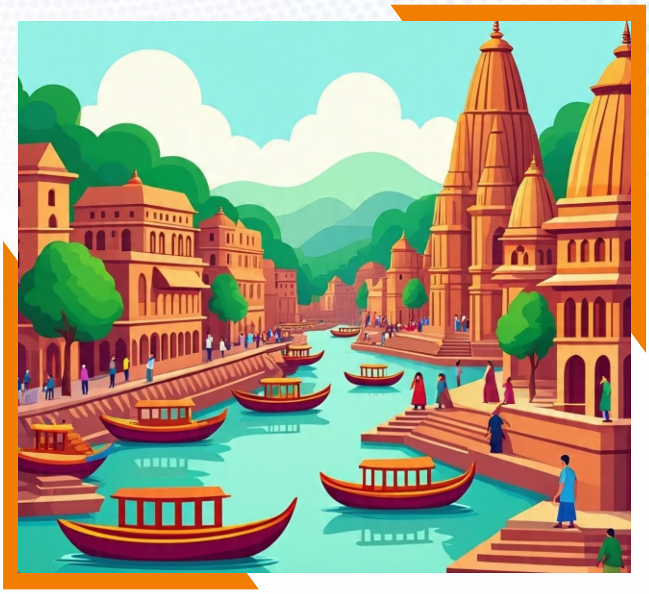

विभिन्न राजा महाराजाओं ने इन्हीं घाटों पर महल का निर्माण करवाया।

यहां होने वाले धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गंगा आरती, गंगा महोत्सव और देवदीपावली प्रमुख हैं। ये काशी के घाट अमूल्य हैं जिन्हें पहचानने के लिए किसी जौहरी की आवश्यकता नहीं है। बनारस के घाट केवल पत्थरों की सीढ़ियां ही नहीं बल्कि ये अनगिनत कथाओं, परंपराओं और विश्वासों का जीवंत इतिहास हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि आस्था, संस्कृति और समय का संगम ही काशी की आत्मा है।

तेरी गंगा सी पाक प्रीत से,
सुबह मेरी पारस हो गई,
डुबकी जो ली रूह ने सुबह
ये जिंदगी बनारस हो गई !

–श्रीमती अभिलाषा विश्वकर्मा
अध्यापिका
कैम्पस स्कूल
भा.प्रौ.सं. कानपुर

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।।

भावार्थ
यह चौपाई उत्तरकाण्ड में उद्धृत है। जिनकी जैसी प्रभु के लिए भावना है, उन्हें प्रभु उसी रूप में दिखाई देते हैं।

मेरे देश का सिपाही

सीमा पर जो खड़ा है वो मेरे देश का सिपाही है।
किसी का बाप, किसी का बेटा तो किसी का वो भाई है।
सीमा पर जो खड़ा है वो मेरे देश का सिपाही है।
रक्त में जिसके उबाल है, देश की सुरक्षा का सवाल है।
किसी का पति तो किसी का जमाई है।
सीमा पर जो खड़ा है वो मेरे देश का सिपाही है।
दिल में जिसके देशभक्ति है, अंदर उसके एक अजब सी शक्ति है।
नित नई अन्वेषों का जो राही है।
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
दुश्मनों के लिए जो एक तरफ चट्टान, और एक तरफ खाई है।
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
गद्दार को जिसने नष्ट करने की कसम खाई है,
देशभक्ति जिसके नस-नस में समाई है,
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
सरहद पर जिसने जान लगाई है, शत्रुओं का जो ग्राही है।
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
देश का वो शेर है, दुश्मनों से उसका बैर है।
अपनी जान की बाजी जिसने हर बार लगाई है।
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
देश-प्रेम की जिसने अलख जगाई है।
दुश्मनों को जिसने हर बार धूल चटाई है।
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
देश का वो रक्षक हैं, दुश्मनों का वो भक्षक है।
जिसके आने से दुश्मनों में मच जाती हैं तबाही।
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
जिसके कारण हम सुरक्षित रहते हैं।
अपने घरों में शांति से रहते है।
बनकर रहता है वो देवदूत की भांति परछाई वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
देश की आजादी दे रही है जिसकी गवाही
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
देश के लिए जो देता है कुर्बानी, दुश्मनों का जो करता है नाश।
जिसकी तिरंगे में लिपटी आती है लाश।
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।
करते है उस वीर का आभार
जिसने किए है हम पर बहुत उपकार।
देश ही बन बैठा है उसका परिवार
सबका मिले उसको प्यार।
यही है उसकी कमाई
वो और कोई नहीं बल्कि...
सीमा पर खड़ा मेरे देश का सिपाही है।

—एकता बब्बर
परिसरवासी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समकालिक शिक्षा के उद्देश्य
ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान
(एक अविस्मरणीय संस्मरण)

यह मेरे एक मित्र का संस्मरण है जिसे मैं आजीवन अपने खट्टे-मीठे अनुभवों में स्थान देता हूं तथा कभी-कभी एकान्तावस्था में यह अनुभव सोचकर प्रसन्नता का अनुभव करता हूं।

मेरे मित्र का नाम राहुल शर्मा है तथा वह मथुरा शहर में यमुना नदी के किनारे रहता था। यह उन दिनों की बात है जब वह अपने बचपन में मुहल्ले के लड़कों के साथ बेहिसाब खेल खेला करता था तथा अत्यधिक थककर शाम को घर आते ही छत पर सो जाता था। एक बार राहुल के पिता ने उसको इतिहास विषय का एक अध्याय याद करने को दिया तथा उन्होंने कहा कि मैं इस अध्याय के संभावित प्रश्न अगले दिन सुबह तुमसे पूछूंगा। राहुल ने भी इस पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की तथा जोश एवं निडरता से उसने कहा कि चिंता न करें, मैं कल आपको इस अध्याय के उत्तर सुना दूंगा।

अगले दिन सुबह उसके पिताजी ने जब प्रश्न पूछना शुरू किया तो अध्याय ठीक से याद न होने के कारण उसने बहाने बनाना शुरू कर दिया। तब उसके पिताजी ने उसे दंड के रूप में उससे कहा कि आज तुम्हें घर में भोजन नहीं मिलेगा। जब प्रश्नों के उत्तर सुनाओगे, तब ही तुम्हें भोजन मिलेगा।

चूंकि यह बात उसके बचपन की थी इसलिए वह खुश हुआ और सोचने लगा कि खाना तो मुझे बाहर भी कहीं न कहीं धर्मशाला या भंडारे में मिल जाएगा, तो अध्याय याद करने की क्या जरूरत? वह बिना सोचे समझे ही अपने दोस्तों के साथ सुबह घर से बाहर निकल गया और मस्ती करते हुए दिन भर अथक खेला। जब उसे भूख लगी तो उसने अपने दोस्तों से भोजन करने के लिए कुछ पैसे मांगे। उसके दोस्त यमुना नदी से सिक्के निकालने में निपुण थे। उन दोस्तों ने उससे कहा कि चुंबक में रस्सी बांधों और यमुना में फेंको, उसमें जितने भी सिक्के होंगे, चुंबक में लगकर तुम्हारे पास आ जाएंगे। यह जानकर वह बहुत खुश हुआ और उसने तुरन्त ही कुछ दोस्तों से चुंबक और रस्सी का इंतजाम करवाया और नदी किनारे चला गया।

वह घाट से नदी में उतरकर रस्सी में चुंबक बांधकर सिक्के ढूंढने की कोशिश करने लगा। बार-बार प्रयास करने पर लगभग 3 रुपये के सिक्के उस चुंबक में लग गए तथा उसने उन्हें अपनी पैन्ट की जेब में रख लिया। उसने फिर चुंबक नदी में आगे की ओर फेंका तथा मुड़कर घाट की ओर देखने लगा। तभी उसने

घाट की सीढ़ियों के नीचे एक सर्प देखा। यह देखकर ही उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। अब वह वहां से बचने का उपाय सोचने लगा तथा प्रण लिया कि आज यहां से बच गया तो प्राप्त 3 रुपये भी नदी में चढ़ा दूंगा और कभी नदी में इस तरह से नहीं उतरूंगा। वह चुपके से सीढ़ियों की ओर बढ़ा तथा झट से सीढ़ियों पर कदम रखा और वहां से तुरन्त भाग गया। तत्पश्चात् अपनी गलती के विषय में सोचने लगा कि मुझे सिक्के निकालने का ज्ञान तो दोस्तों ने दे दिया लेकिन उसका कौशल तो जल्दबाजी में मैंने उनसे सीखा ही नहीं कि कैसे इस कार्य को करना है, खतरा दिखाई देने पर कैसे बचाव करना है, नदी में उतरना भी है अथवा नहीं इत्यादि?

अंततः उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तथा घर जाकर पिताजी से आग्रह कर अध्याय याद करने के लिए एक दिन का अतिरिक्त समय मांगा। पिताजी ने कहा, ठीक है। लेकिन मेरी शर्त तो याद है न तुम्हें? मैं कल फिर पूछूंगा। उन्होंने राहुल की मम्मी से कहा कि अब इसे अपनी गलती का एहसास हो गया है, इसे आज खाना दे दो। कल अध्याय को यह याद करके सुना देगा। उस दिन सुबह से भूखा होने और खेलकर थकने के कारण शाम को उसने खाना ऐसे खाया कि भविष्य में उसे खाना मिलेगा ही नहीं और रात भर उस अध्याय को याद करने में लग गया। अगले दिन उसने अपने पिताजी की शर्त का पूर्ण पालन किया और उन्हें उस अध्याय के सभी उत्तर सुना दिए।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्मरण से हमें पता चलता है कि किसी भी कार्य को कुशलता से करने के लिये ज्ञान के साथ-साथ उसका कौशल भी अत्यन्त आवश्यक है। ज्ञान बिना कौशल और कौशल बिना ज्ञान वस्तुतः निरर्थक है।

–मनोज कुमार वर्मा
अधीक्षक
आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

भाषा विमर्श

समांतर कहानी

'सचेतन कहानी' और 'अकहानी' के बाद हिंदी कहानी में 'समांतर कहानी' का आंदोलन चला। इसके अगुआ थे 'नये कहानी' के सशक्त हस्ताक्षर और 'सारिका' पत्रिका के संपादक कमलेश्वर। यह वह समय था जब देश में चारों तरफ जनान्दोलनों का बोलबाला था, जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में समग्र क्रांति का नारा बुलंद था, आम आदमी पूंजीवादी शक्तियों के चंगुल में फंसा कराह रहा था और जनवादी ताकतों को कुचलने के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी पूरी तरह कटिबद्ध थीं। 'सारिका' के 'समांतर कहानी-विशेषांक-1' में कमलेश्वर ने 'मेरा पन्ना' स्तम्भ के अंतर्गत 'इतिहास के नंगे हो जाने', 'आम आदमी के दुविधा रहित होकर संघर्ष के लिए सन्नद्ध हो जाने, जीने के तमाम साधनों और स्रोतों पर पूंजी का प्रभुत्व हो जाने, और 'नंगे इतिहास' के द्वारा हमारी 'निष्क्रियता' और अन्यमनस्कता का फायदा उठाकर हमें छलते जाने का एहसास कराकर कहानीकारों को 'आम आदमी' की पीड़ा और उसके संघर्ष को मुखरित करने का आह्वान किया। डॉ. विनय ने समांतर कहानी में प्रतिष्ठित होने वाले 'आम आदमी' की व्याख्या करते हुए कहा है, ''आम आदमी सिर्फ आम आदमी है। वह किसान, मजदूर, क्लर्क, सर्वहारा वर्गों में बंटा हुआ न होकर एक संश्लिष्ट व्यक्ति (व्यक्तित्व) है।'' कमलेश्वर ने 'समांतर कहानी विशेषांक-1' में भीष्म साहनी की 'वाड् चू', से. रा. यात्री की 'अंधेरे का सैलाब', हृदयेश की 'गुंजल्क', मणि मधुकर की 'विस्फोटक श्रवणकुमार की 'नहीं, यह कोई कहानी नहीं', जैसी कहानियों को प्रकाशित करके समांतर कहानी- आंदोलन की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने 'सारिका' के समांतर कहानी- विशेषांक के रूप में विभिन्न भाषाओं को समांतर कहानियों के विशेषांक निकाले, देश भर में 'समांतर कहानी' पर गोष्ठियां आयोजित की और एक लंबे विचार-विमर्श का दौर चलाकर समांतर कहानी को अखिल भारतीय आंदोलन का रूप देने का प्रयत्न किया। हिंदी में गोविंद मिश्र, कामतानाथ, जितेंद्र भाटिया, सुधा अरोड़ा, मधुकर सिंह, इब्राहीम शरीफ, हिमांशु जोशी, मिथिलेश्वर, राकेश वत्स, स्वदेश दीपक आदि कहानीकारों ने इस आंदोलन को तीव्र करने में अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान किया। 'जाने किस बंदरगाह पर' (सतीश जायसवाल), 'छुट्टी का एक दिन' (अकुलेश परिहार), 'सौदा' (पाल भसीन), 'जोखिम', 'बयान' (कमलेश्वर), 'शहादतनामा' (जितेंद्र भाटिया) आदि कहानियां आम आदमी के संघर्ष को जीवन की समग्रता में देखती है और यह भी प्रमाणित

करती हैं कि नया युग नये प्रश्नों का सामना कर रहा है। इन कहानियों में संघर्षरत मनुष्य बराबर नये मूल्यों की स्थापना की दिशा में भी सक्रिय है।

समांतर कहानी की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि उसने भावुक रुचि में कैद लोगों के सामने आम आदमी की तकलीफों को उजागर करने वाली कहानियां बदले तेवर के साथ प्रस्तुत की। इसने भारतीय कथा-साहित्य में पुनः आम आदमी को प्रतिष्ठित किया, उसके प्रति जागरूकता पैदा की और कहानी को आम आदमी के संघर्ष से जोड़कर नयी हलचल पैदा की। इस कहानी आंदोलन से जुड़े रचनाकारों ने जीवन के विभिन्न संदर्भों में आम आदमी के संघर्ष को देखा और उसकी चिंताओं, तकलीफों और मजबूरियों को रेखांकित किया।

बहरहाल, इस कहानी आंदोलन को भी व्यापक समर्थन प्राप्त नहीं हुआ और जल्द ही यह आंदोलन भी बिखर गया।

आधार ग्रंथः

1. एक दुनिया समानांतर, राजेंद्र यादव।
2. कहानीः नयी कहानी, नामवर सिंह।
3. नयी कहानीः संदर्भ और प्रकृति, देवी शंकर अवस्थी।
4. हिंदी कहानी के आंदोलनः उपलब्धियां और सीमाएं, रजनीश कुमार।
5. हिंदी कहानीः समीक्षा और संदर्भ, विवेकी राय।
6. कहानी की बात, मार्कण्डेय।
7. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर।

–साभार
डॉ. अमरनाथ

सुधी आलोचक और प्रतिष्ठित भाषाविद् के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ. अमरनाथ का जन्म गोरखपुर जनपद (संप्रति महाराजगंज) के रामपुर बुजुर्ग नामक गांव में सन् 1954 में हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएं– नारी का मुक्ति संघर्ष, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और परवर्ती आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काव्य चिंतन, समकालीन शोध के आयाम, हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी के अंत में हिंदी आदि हैं।

तकनीकी लेख

ऊर्जा रूपांतरण एवं संरक्षण

ऊर्जा का अत्यधिक दोहन एवं दुरूपयोग पर्यावरण संकट का एक प्रमुख कारण बन गया है। अनुभव पर आधारित इस तकनीकी लेखन का उद्देश्य वर्तमान ऊर्जा संकट के समय एवं असहज करने वाले प्रदूषण के बारे में महसूस की जा रही आवश्यकता को उजागर करने का एक प्रयास है। इस प्रयास में ऊर्जा उत्पादन इसके रूपांतरण तथा संभावित संरक्षण उपाय पर विचार किया गया है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस समय में जब अधिकांश लोग अल्प व आधी-अधूरी सूचनाओं का सहारा लेते हुए दिखाई देते हैं वहीं पर यह भी उचित प्रतीत होता है कि सामान्य से दिखने वाली कुछ जानकारी समाज एवं प्रकृति के संरक्षण में महान योगदान दे सकती है। यह भी महत्वपूर्ण है कि सूक्ष्म प्रयास से भी दीर्घकालिक सुखद परिणाम मिल सकते हैं।

ऊर्जा सामान्य अर्थ

सामान्यतः ऊर्जा एक वृहद शब्द है एवं सदैव सर्व व्यापक है। भौतिकी में कार्य करने की क्षमता को ऊर्जा कहते हैं। साधारण बोलचाल की भाषा में ऊर्जा को विद्युत या बिजली भी कहते हैं। बिजली, ऊर्जा का एक रूप है जिसे विद्युत ऊर्जा कहते हैं। मानव जीवन में ऊर्जा की अनेक आवश्यकताएं है जिन्हें प्रकृति अनेक स्रोतों द्वारा पूर्ण करती है। ऊर्जा को अनेक स्रोतों जैसे कि प्राकृतिक गैस, तेल, कोयला या परमाणु पदार्थ से प्राप्त कर सकते हैं। अधिकांशतः ऊर्जा आवश्यकताएं इन्हीं पर निर्भर हैं। पवन, सौर, जल, बायोगैस भी ऊर्जा के अन्य स्रोत हैं। नीति आयोग के अनुसार, इस समय भारत में जून 2025 तक 473 गीगावाट (Giga Watt) विद्युत उत्पादन हो रहा है, इस उत्पादन में से लगभग 220 गीगावाट कोयला से हो रहा है। स्पष्ट है कि भारत मे ऊर्जा उत्पादन का ज्यादातर हिस्सा कोयले के दहन से होता है। मात्रा के आधार पर हम समझ सकते हैं कि विद्युत उत्पादन एवं कोयले

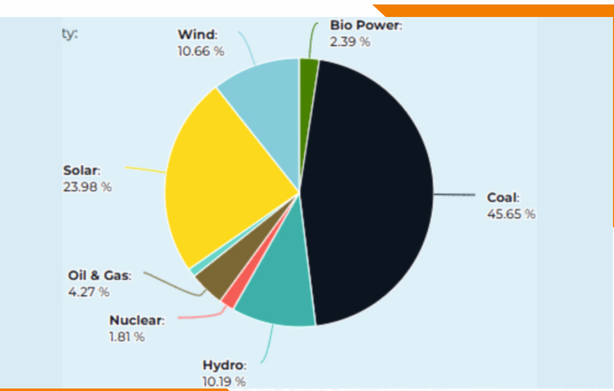

की कितनी खपत हो रही है। एक यूनिट (Kwh) बिजली बनाने के लिए लगभग 1 किलो कोयला लगता है।

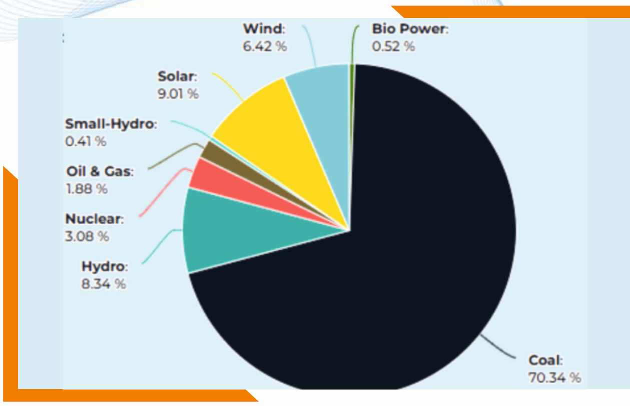

भारत में स्थापित 485 GW क्षमता व वास्तविक 473 GW विद्युत उत्पादन

भौतिक राशि को समझने के लिए उसके मापन का तरीका जानना बहुत महत्वपूर्ण है अर्थात अगर हमें भौतिक राशि का मात्रक पता है तो हम उस भौतिक राशि की मात्रा का अंदाजा लगा सकते हैं और मात्रा से ही गणनाएं और अंततः खर्चे या बचत का आकलन किया जा सकेगा। जब तक हम खर्च व आमदनी का ब्यौरा नहीं रखते तब तक यह पता लगाना कठिन है कि हम क्या कमा रहे हैं और क्या गवां रहे हैं।

ऊर्जा (विद्युत) को नापने के लिए अनेक मात्रक उपयोग में लिए जाते हैं जैसे कि वाट (Watt), किलोवाट, मेगावाट, गीगावाट, अक्सर अश्वशक्ति (हॉर्स पावर, एचपी) भी ऊर्जा के मापन में प्रयुक्त होता है जैसे कि हम अपने घरों में विद्युत संयोजन, विद्युत भार के हिसाब से हॉर्स पावर या किलोवाट मे लेते हैं। 1 किलोवाट 1000 वाट के बराबर है और एक हॉर्स पावर में लगभग 746 वाट होते हैं।

जेम्स वाट (1736-1819) के नाम पर ऊर्जा को नापने के लिए मात्रक 'वाट' का नाम रखा गया। वे भाप इंजन की तुलना घोड़ों की शक्ति से करने का प्रयास कर रहे थे। वाट ने निर्धारित किया कि एक घोड़ा एक मिनट में 33,000 फुट-पाउंड कार्य कर सकता है, इस प्रकार अश्वशक्ति की इकाई का चलन शुरु हुआ।

ऊर्जा के अन्य स्वरूप व ऊर्जा रूपांतरण

ऊर्जा के कई रूप हैं जैसे तापीय, विद्युत, परमाणु, विद्युत चुम्बकीय, यांत्रिक, रासायनिक, ध्वनि, आदि। दूसरी ओर, ऊर्जा रूपांतरण शब्द का प्रयोग तब किया जाता है जब ऊर्जा एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती है। ऊर्जा का स्थानांतरण हो या रूपांतरण, ऊर्जा की कुल मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होता है, और इसे ऊर्जा संरक्षण का नियम कहते हैं। ऊर्जा रूपांतरण, ऊर्जा के एक रूप को दूसरे रूप में बदलने की प्रक्रिया है। ऊर्जा रूपांतरण एक महतत्वपूर्ण भौतिकी अनुप्रयोग है। जैसे कि

कोयला, पेट्रोल, डीजल, घरेलू गैस (एलपीजी) पदार्थ हैं और उसमें कुछ ऊर्जा है, जब ईंधन को जलाया जाता है तो यह ऊर्जा ऊष्मा के रूप में प्रकट होती है।

क्या आपने कभी अपने साइकिल को पानी के पाइप से धोया है? अगर हां तो आपने यह भी देखा होगा कि पानी के पाइप की धार साइकिल के पैडल पर पड़ने से पैडल घूमने लग जाता है, यह सामान्य से दिखने वाली घटना ही ऊर्जा रूपांतरण का एक उदाहरण है। अर्थात पानी के पाइप में कुछ ऊर्जा थी वह ऊर्जा जब साइकिल के पैडल से टकराई तो यांत्रिक ऊर्जा में रूपांतरित हो गई जिसके कारण पैडल घूमने लगा। साइकिल के पैडल को पानी की धारा से घुमाया जा सकता है, इसके लिए पैडल तंत्र को पानी की धारा से शक्ति मिलती है। यह तंत्र अनिवार्यतः जलधारा की गतिज ऊर्जा को पैडल की घूर्णी गति में परिवर्तित करता है। यहीं पर अगर हम इस पानी की धार को साइकिल के पहिए पर मारें तो वह बामुश्किल ही घूम पाएगा क्योंकि साइकिल के पहिए को घुमाने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता पड़ेगी। अब अगर हम साइकिल के पहिए पर कुछ उभरी हुई संरचनाओं बना दें, जैसा की चित्र 1 में प्रदर्शित है तो कम प्रयास से ही साइकिल का पहिया भी घूमने लग जाएगा। जल विद्युत उत्पादन का महत्वपूर्ण सूत्र यही है।

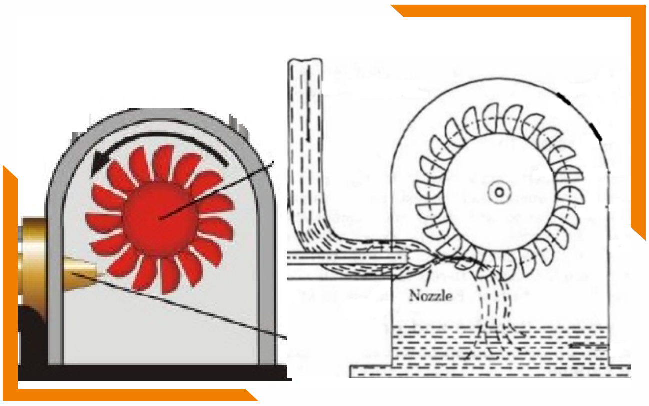

चित्र 1- जल स्रोत से टरबाइन को घुमाने की विधि तथा व्यवस्था

इंजीनियरिंग की भाषा में इस व्यवस्था को टरबाइन कहते हैं, पानी की धार से घूमने वाली पैल्टन व्हील टरबाइन (Pelton wheel turbine) होती है जिसके कटोरी नुमा ब्लेडों पर ऊंचाई पर स्टोर किए हुए जलधारा को एक जैट पाइप के सहारे प्रवेश कराया जाता है। जल विद्युत परियोजना में डैम इसीलिए बनाया जाता है कि पानी की पर्याप्त मात्रा ऊंचाई पर स्टोर करके रखी जा सके और लंबे पाइपों के द्वारा नीचे संयंत्र में लगी हुई टरबाइन में प्रवेश करा सकें। जल को जितनी अधिक ऊंचाई पर स्टोर करके रखा जाएगा उसमें ऊर्जा उतनी अधिक होगी। टरबाइन के कटोरी नुमा रोटर से टकराने के बाद जल अपनी गतिज ऊर्जा शाफ्ट को प्रदान कर देता है और लगभग नगण्य ऊर्जा वाला जल टरबाइन से गुरूत्वाकर्षण के कारण नीचे गिरता है। यह जल नहर या नाले आदि के माध्यम से संयंत्र से बाहर निकलता है एवं सामान्य उपयोग के लिए उपलब्ध रहता है।

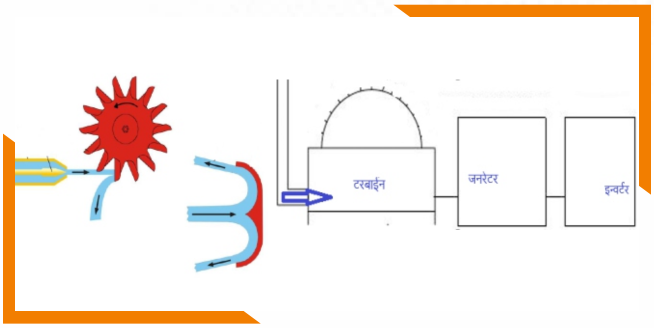

चित्र 2- टरबाइन ब्लेड पर जलधार पड़ना तथा शाफ्ट के साथ जेनेरेटर विद्युत उत्पादन

तो इसका अर्थ यह हुआ कि अगर ऊंचाई से गिरते हुए पानी के स्रोत के नीचे साइकिल के पैडल (टरबाइन) जैसी आसानी से घूमने वाली कोई यांत्रिक युक्ति रख दें तो वह घूमने लगेगी। इस यांत्रिक युक्ति की शाफ्ट पर अगर हम जनरेटर स्थापित कर दें तो विद्युत ऊर्जा मिलने लग जाएगी। अधिकांश जल विद्युत उत्पादन संयंत्रों में इसी तकनीक का उपयोग होता है। यही ऊर्जा का रूपांतरण है।

अगर हम विद्युत उत्पादन करना चाहते हैं तो हमें जनरेटर की शाफ्ट को घुमाना पड़ेगा। जनरेटर वह युक्ति है जो यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलता है। जनरेटर, विद्युत उत्पादन करने की यांत्रिक मशीन है। जनरेटर की शाफ्ट के घूमने से विद्युत बनती है। विद्युत उत्पादन के लिए जनरेटर की शाफ्ट को घुमाने के अनेक तरीके हो सकते हैं। डीजल जनरेटर सैट में जनरेटर की शाफ्ट को डीजल इंजन, थर्मल पावर प्लांट में स्टीम टरबाइन व जल विद्युत प्लांट में जल टरबाइन के द्वारा घुमाया जाता है। अभिप्राय यह है कि अगर हमें विद्युत उत्पादन करना है तो जनरेटर की शाफ्ट को किसी तरीके से घुमाना पड़ेगा। जनरेटर वह मशीन है जो ऊर्जा रूपांतरण का कार्य करती है। जनरेटर की शाफ्ट को बाह्य स्रोत से यांत्रिक ऊर्जा देकर घूर्णन गति प्रदान की जाती है, फलस्वरुप विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती है अर्थात जनरेटर, यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपांतरित करता है।

विद्युत दो प्रकार की होती है एसी और डीसी। जनरेटर जो बिजली बनाता है वह डीसी (Direct current, DC) होती है। हमारे घरों और व्यवसायिक उपयोग के लिए एसी (Alternating current, AC) विद्युत की आवश्यकता होती है। हमारे घरों में लगे हुए अधिकांश विद्युत उपकरण एसी ऊर्जा से संचालित होते हैं । विद्युत सब स्टेशन से जो विद्युत आपूर्ति घरों और व्यावसायिक उपयोग के

लिए भेजी जाने वाली विद्युत, एसी प्रकार की होती है तथा जब जनरेटर से विद्युत बनती हैं तो डीसी विद्युत मिलती है इसे एसी विद्युत में परिवर्तित करना पड़ता है, तभी जाकर यह घरेलू उपभोग में लायी जा सकती है। सोलर प्लांट या सोलर सेल से मिलने वाली विद्युत डीसी होती है, सोलर सेल से मिलने वाली विद्युत को हम सीधे-सीधे विद्युत उपकरण में नहीं भेज सकते। सोलर सेल से मिलने वाली विद्युत को घरेलू उपभोग लायक बनाने के लिए पहले तो बैटरी में सुरक्षित करना पड़ता है और फिर ऊर्जा परिवर्तक की सहायता से एसी में बदलना पड़ता है, यही उपकरण इनवर्टर होता है। इनवर्टर एक ऐसी विद्युत युक्ति है जो विद्युत उत्पादन के एक प्रकार की ऊर्जा को दूसरी प्रकार की ऊर्जा में रूपांतरित करता है।

विद्युत उत्पादन

ऊर्जा के रूप में विद्युत का उत्पादन मुख्यतः कोयले के दहन से होता है, जिसे थर्मल पावर प्लांट कहते हैं। इसमें कोयले का दहन करके बॉयलर में पानी से भाप बनाई जाती है तत्पश्चात भाप से, स्टीम टरबाइन को घुमाया जाता है। थर्मल पावर प्लांट में कोयले की ऊर्जा से स्टीम टरबाइन को घुमाकर यांत्रिक ऊर्जा में रुपांतरित करते हैं और फिर टरबाइन शाफ्ट की यांत्रिक ऊर्जा से जनरेटर को घुमाकर विद्युत उत्पादन किया जाता है। साथ ही साथ भारतवर्ष में जल विद्युत परियोजनाएं भी विद्युत उत्पादन का स्रोत हैं। भारत में लगभग 50 जीबी विद्युत उत्पादन, जल विद्युत संयंत्र के माध्यम से हो रहा है। जल विद्युत एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है, जो बिजली उत्पन्न करने के लिए जल की गतिज ऊर्जा का उपयोग करता है। भारत में जल विद्युत व सोलर ऊर्जा विकास की अपार संभावनाएं हैं और नवीकरणीय ऊर्जा बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। स्वच्छ ऊर्जा स्रोत के रूप में बड़ी सोलर परियोजनाओं को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

वैज्ञानिक माइकल फैराडे (Michael Faraday) ने विद्युत मोटर के घूमने के सिद्धांत के बारे में बताया। जनरेटर का विद्युत सिद्धांत भी महत्वपूर्ण है। चित्र तीन के अनुसार यह समझ सकते हैं कि अगर एक विद्युत चालक तार को चुंबकीय क्षेत्र के प्रभाव में रखकर घुमाया जाए तो विद्युत चालक तार में विद्युत प्रवाहित होने लगती है। विद्युत उत्पादन का सिद्धांत फराडे के नियम पर कार्य करता है। जनरेटर में भी यही होता है कि विद्युत चालन (conductor) में सक्षम चालक या तार को कुंडलियों (wire coils) की शक्ल में बनाकर चुंबकीय क्षेत्र (magnetic field) में रखा जाता है इस सम्मिश्रण से जब शाफ्ट घूमती है तो विद्युत उत्पादन होता है। कुछ लोग ऐसा भी सोचते हैं कि मोटर से ही विद्युत बना ली जाए, ऐसा संभव तो है लेकिन आर्थिक रूप से घाटे का सौदा है यानी हम चक्र को परिवर्तित करके उल्टी दिशा में चलाना चाह रहे हैं ।

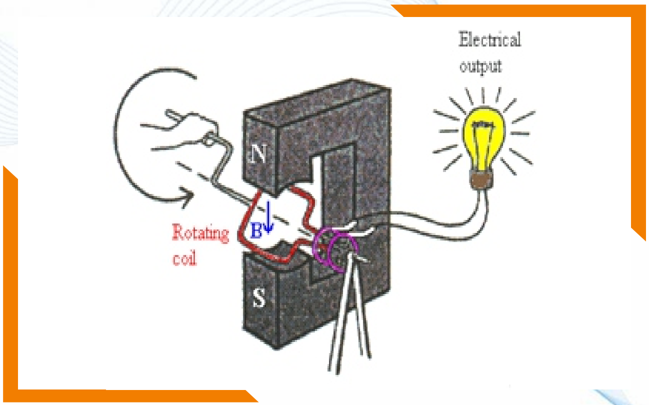

चित्र 3- जनरेटर का सिद्धांत

जाहिर सी बात है अगर जनरेटर की शाफ्ट घुमानी है तो कुछ ऊर्जा देनी पड़ेगी, जब ऊर्जा देनी पड़ेगी तो कुछ खर्चा करना होगा और जब कुछ खर्च होगा, लागत तो आएगी। इस लागत का ही सारा खेल है। तमाम शोध कार्य एवं वैज्ञानिक इसी प्रयास में लगे हुए हैं कि विद्युत उत्पादन में होने वाले खर्चों को कैसे कम किया जाए। प्रोफेसर सुब्रत सरकार (कोऑर्डिनेटर एनर्जी कन्वर्जन लैब, आईआईटी कानपुर), टरबाइन के ब्लेड और टरबाइन एफिशिएंसी को बेहतर करने के लिए शोध कार्य कर रहे हैं एवं उन्होंने अपने प्रयास से टर्बो मशीनरी लैब की स्थापना भी की है, जिसमें वह शोध छात्रों के साथ मिलकर अनेक संयंत्र संबंधी समस्याओं के समाधान देकर संयंत्र की दक्षता बढ़ाने में सहयोग करते रहे हैं।

यह लेख सामान्य पाठकों को नजर में रखकर लिखा जा रहा है इसलिए अत्यधिक इंजीनियरिंग एवं वैज्ञानिक गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं है। सामान्य शब्दों के सहारे हम ऊर्जा के उत्पादन, रूपांतरण, उपयोग एवं संरक्षण पर ही ध्यानाकर्षण कराना चाहते हैं।

भारतवर्ष में विद्युत उत्पादन की मात्रा 470 गीगावाट से भी अधिक है। इतनी अधिक ऊर्जा का उत्पादन करने के लिए कितनी ऊर्जा खर्च करनी होगी? आएं साधारण शब्दों में समझने का प्रयास करते हैं। मोटरसाइकिल के बारे में थोडा-बहुत सभी जानते हैं और यह भी जानते हैं कि इसको चलाने के लिए डीजल या पेट्रोल ईंधन खर्च होता है। हम माइलेज की बात करें तो एक लीटर ईंधन से गाड़ी जितने किलोमीटर चलती है यह उस मोटर वाहन की दक्षता हुई, और हम चाहते हैं कि कम से कम ईंधन खर्च करके हम अधिक से अधिक माइलेज प्राप्त करें ताकि अपना खर्चा कम किया जा सके। माना कि मोटरसाइकिल या स्कूटी 50 किलोमीटर का माइलेज दे रही है, और पेट्रोल की कीमत रु 100/लीटर है यानी प्रति किलोमीटर चलने पर 2 रु खर्च हो रहा है। 100 सीसी वाली मोटरसाइकिल या स्कूटी लगभग 5 किलोवाट हॉर्स पावर क्षमता की होती है। इसकी तुलना में 430 गीगावाट कितना बडा आंकडा

है? जरा सोचें!!

1 GW=1000MW = 10,00,000 kW
373 GW= 37,30,00,000 सैतिस करोड तीस लाख kW

इसके अलावा यह भी दिलचस्प है कि एक लीटर पेट्रोल के पूर्ण दहन के लिए आवश्यक वायु की लगभग मात्रा 10 घन मीटर (m^3) होती है। स्पष्टतः अगर हम अपने वाहन में 1 लीटर पेट्रोल खर्च कर रहे हैं तो प्रकृति से 10 घन मीटर आयतन के समतुल्य वायु को प्रदूषित कर रहे हैं। एक तरफ तो जहां शुद्ध वायु को कम किया वहीं दूसरी तरफ उसी शुद्ध वायु को अशुद्ध एवं हानिकारक प्रदूषित वायु में परिवर्तित भी कर दिया। अगर इसी विवरण को बृहद रूप से समझने का प्रयास किया जाए तो अंदाजा आसानी से लग सकता है कि वायु को प्रदूषित करने में ईंधन के दहन का कितना अधिक योगदान है और हम उसमें कितने सहायक हैं?

घरेलू विद्युत खपत और कोयले के दहन से ऊर्जा रूपांतरण

अब एक साधारण गणना के द्वारा समझते हैं कि कोयले के दहन से जो बिजली बनती है उसका वातावरण पर किस प्रकार से प्रभाव पड़ रहा है। तदनुसार अपने विवेक का इस्तेमाल करके हम पर्यावरण के प्रति अपनी भूमिका निर्धारित कर सकते हैं। हमारे घरों में जो विद्युत खपत होती है उसे यूनिट के हिसाब से नापा जाता है। एक यूनिट ऊर्जा खपत की वह मात्रा है जो 1000 वाट या 1 किलोवाट के हीटर को एक घंटा चलाने पर खर्च होती है। अगर हम 1 किलोवाट का हीटर 1 घंटे तक चलाएं तो एक यूनिट विद्युत खर्च हो जाएगी, जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि एक यूनिट विद्युत बनाने में लगभग एक किलो कोयले को जलाना पड़ता है। ऊष्मा संयंत्र में विद्युत का उत्पादन कोयले के दहन से होता है। जब एक किलो कोयला जलता है तब एक यूनिट विद्युत बनती है। मतलब साफ है कि अगर हमने एक kW के एक हीटर को एक घंटे तक चलाया तो एक किलो कोयले को जला दिया है। हालांकि वह कोयला थर्मल पावर प्लांट में विद्युत उत्पादन में जल गया, लेकिन जला तो है। भले वह हमारे घर में ना जला हो फिर भी उसका वातावरण में प्रभाव पड़ेगा ही।

जब कोयले का दहन होता है तो उसके लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है। कोयला, कार्बन का ही एक रूप है जैसे लकड़ी, चारकोल इत्यादि में भी कार्बन होता है और उनको जलाने के लिए भी हवा की जरूरत होती है। 1 किलो कोयला जलाने के लिए लगभग 10 किलो हवा की जरूरत पड़ती है। स्पष्ट है कि जब भी हम कोई ईंधन जलाते हैं तो उसके लिए वायुमंडलीय हवा की जरूरत पड़ती है। परोक्ष रूप से यह वायुमंडलीय हवा कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और अन्य अवांछित गैसों में बदल जाती है। अर्थात वायु का रूपांतरण भी हानिकारक तत्वों में रूपांतरित हुआ, साथ ही साथ हमारे वायुमंडल में उपस्थित शुद्धवायु की मात्रा में भी कमी आई।

कार्बन का रासायनिक संगठन और इससे संबंधित दहन की रासायनिक क्रिया के जरिए हम इसको समझ सकते हैं कि कार्बन के दहन के लिए कितनी ऑक्सीजन की मात्रा की जरूरत पड़ेगी।

कोयले के द्रव्यमान के अनुसार निम्नलिखित संरचना है:

कार्बन = 75%, हाइड्रोजन = 7%, ऑक्साइड = 13%
नाइट्रोजन = 2%, सल्फर = 1% एवं राख और अशुद्धियां = 3%

ईंधन के दहन की रासायनिक प्रक्रिया ऑक्सीजन की उपस्थिति में पूर्ण होती है तथा परिणाम स्वरूप कार्बन डाइऑक्साइड और ऊष्मा मिलती है।

$C+O2 \rightarrow CO2$ + ऊष्मा

रासायनिक गणनाओं के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि 1 किलो कोयले के दहन के लिए लगभग दस किलो वायु की जरूरत पड़ती है। हवा तो हमें प्रकृति से मुफ्त में मिल रही है, उसकी तो कीमत का आकलन नहीं किया जा सकता लेकिन कोयला लगभग रु 5/किलो की कीमत का मान सकते हैं तो एक यूनिट बिजली बनाने में कम से कम 5 रु का तो कोयला जलता है। इसके अलावा विद्युत उत्पादन संयंत्र में लगी मशीनरी, मानव संसाधन, इंफ्रास्ट्रक्चर, विद्युत पारेषण लाइन, सब स्टेशन, ट्रांसफार्मर, मेंटेनेंस और अन्य खर्चों की तरफ देखा जाए तो एक यूनिट बिजली बनाने में काफी व्यय होता है। आशा है कि यह संदेश विद्युत उपभोक्ताओं को विद्युत उपभोग करते समय अपने विवेक का कुछ उपयोग करने में सहायक होगा।

आईआईटी कानपुर मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर सुब्रतो सरकार के निर्देशन में एनर्जी कन्वर्जन लैब में छात्रों को ऊर्जा रूपांतरण के बारे में सैद्धांतिक एवं प्रयोगों के माध्यम से अध्ययन कराया जाता है। इस प्रयोगशाला में टरबाइन, इंजनों, रेफ्रिजरेशन और एयर कंडीशनिंग सिस्टम के एक्सपेरिमेंटल मॉडल प्रोफेसर सुब्रतो सरकार ने डेवलप किए हैं तथा उन्ही के माध्यम से छात्रों को इस मूलभूत इंजीनियरिंग अवधारणा से परिचित होने का अवसर मिलता है।

–प्रोफेसर सुब्रत सरकार
(कोऑर्डिनेटर एनर्जी कन्वर्जन लैब)
भा.प्रौ.सं. कानपुर

–डॉ. सी एस गोस्वामी
वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
यांत्रिक अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

विरासत

बहता पानी निर्मला

मुझे बचपन से नक्शे देखने का शौक है। आप समझेंगे कि कुछ भूगोल विज्ञान की तरफ प्रवृत्ति होगी- नहीं, सो बात नहीं; असल बात यह है कि नक्शों के सहारे दूर-दुनिया की सैर का मजा लिया जा सकता है। यों तो वास्तविक जीवन में भी काफी घूमा-भटका हूं, पर उससे कभी तृप्ति नहीं हुई, हमेशा मन में यही रहा कि कहीं और चलें, कोई नई जगह देखें, और इस लालसा ने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा है। नक्शों से यह फायदा होता है कि मन के घोड़े पर सवार हो कर कहीं चले जाइए, कोई रोक नहीं, अड़चन नहीं, और जब चाहे लौट आइए, या न भी लौटिए- कोई पूछने वाला नहीं कि हजरत कहां रम रहे।

यों तो नक्शों में तरह-तरह के रंगों से कुछ मदद मिलती है यह तय करने में कि कहां जाएं- जिसे हरी-भरी जगह देखनी हो वह नक्शों की हरी-भरी जगहों में घूमे, जिसे पहाड़ी प्रदेश देखने हों वह भूरे या पीले प्रदेशों में चला जाए, और जिसे एकदम अछूते, अपरिचित प्रदेश में जाने का जोखिम पसन्द हो वह बिलकुल सफेद हिस्सों की ओर चल निकले अनादिकालीन बर्फीले मरु-प्रदेशों में, जंगलों में, समुद्र में, समुद्र-द्वीपों में... नक्शों में कहीं लिखा रहता है कि, 'इस प्रदेश की सर्वे नहीं हुई- हिमालय के अनेक भाग ऐसे हैं'-या कि 'अगम्य जंगल!'-असमिया सीमा-प्रदेश में ऐसे स्थल हैं; जरा कल्पना कीजिए ऐसी जगहों में जा निकलने का आनन्द !

लेकिन इससे अधिक सहायता मिलती है जगहों के नामों से। बचपन में एक नाम पढ़ा था 'अमरकंटक' : यह नाम ही इतना पसन्द आया कि मैंने चुपके से कम्बल और दो-चार कपड़ों का बंडल बना लिया कि अभी चल दूंगा वहां के लिए! वह जाना नहीं हुआ, अभी तक भी अमरकंटक नहीं देखा है और इस प्रकार का कांटा अभी तक सालता ही है, पर नक्शे की यात्रा तो कई बार की है, और अमरकंटक के बारे में उतना सब जानता हूं जो वहां जा कर जान पाता। ऐसा ही एक और नाम था तरंगम्बाड़ी- यों नक्शों में उसका रूप विकृत हो कर त्रांकुबार हो गया है। 'तरंगों वाली बस्ती' सागर के किनारे के गांव का यह नाम सुन कर क्या आपके मन में तरंग नहीं उठती कि जा कर देखें? कई नाम ऐसे भी होते हैं जिनका अर्थ समझ में नहीं आता, पर ध्वनि ही मोह लेती है। जैसे 'तिरुकुरंगुडि' नाम सुन कर लगता है, मानो हिरनों का समूह चौकड़ी भरता जा रहा हो। कुछ नाम ऐसे भी होते हैं कि अर्थ जानने पर ही उनका जादू चलता है जैसे, 'लू-हित'; ऊपरी

ब्रह्मपुत्र के इस नाम को संस्कृत करके लोहित्या बना लिया गया है जिससे अनुमान होता है कि वह लाल या ताम्र वर्ण की होगी, पर वास्तव में लू-हित का अर्थ है 'तारों की राजकन्या' या ऐसा ही कुछ। ब्रह्मपुत्र का सौन्दर्य जिन्होंने नहीं देखा उनकी तो बात ही क्या, जिन्होंने देखा भी है वे भी क्या इस नाम को जान कर 'तारों की राजकन्या' के तरुण लावण्यमय रूप को देखने को ललक न उठेंगे?

''होनहार बिरवान के होत चीकने पात'' में कुछ होनहार बिरवा तो नहीं था, पर नक्शों के बगदादी कालीन पर बैठ कर हवाई यात्रा करने की इस आदत से यह तो पता लग ही सकता था कि आगे चल कर भी कहीं टिक कर नहीं बैठूंगा। बात भी ऐसी है, लगातार कुछ दिन भी एक जगह रहता हूं तो कुछ अपनी इच्छा से नहीं, लाचारी से; और उस लाचारी में बहुत से नक्शे जुटा कर फिर अपने लिए हीला निकाल ही लेता हूं। और आप सच मानिए, जीने की कला सबसे पहले एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की कला है- कम-से-कम आधुनिक काल में, जब मानव-जाति का इतना बड़ा अंश या तो प्रवासी है, यह शरणार्थी ही एक स्थान से दूसरे स्थान, एक पेशे से दूसरे में; एक घर से दूसरे घर इत्यादि !

यात्रा करने के कई तरीके हैं। एक तो यह कि आप सोच-विचार कर निश्चय कर लें कि कहां जाना है, कब जाना है, कहां-कहां घूमना है, कितना खर्च होगा; फिर उसी के अनुसार छुट्टी लीजिए, टिकट कटवाइए, सीट या बर्थ बुक कीजिए, होटल डाक-बंगले को सूचना दे कर रिजर्व कराइए या भावी अतिथियों को खबर दीजिए और तब चल पड़िए। बल्कि तरीका तो यही एक है- क्योंकि यह व्यवस्थित तरीका है। और इसमें मजा बिलकुल नहीं है यह भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि बहुत से लोग ऐसे यात्रा करते हैं और बड़े उत्साह से भरे वापस आते हैं।

दूसरा तरीका यह है कि आप इरादा तो कीजिए कहीं जाने का, छुट्टी भी लीजिए, इरादा और पूरी योजना भी चाहे घोषित कर

दीजिए, पर ऐन मौके पर चल दीजिए कहीं और को। जैसे घोषित कर दीजिए कि आप बड़े दिनों की छुट्टियों में मुम्बई जा रहे हैं, लोगों को ईर्ष्या से कहने दीजिए कि अमुक मुम्बई का सीजन देखने जा रहा है, मगर चुपके से पैक कर लीजिए जबरदस्त गर्म कपड़े और जा निकलिए बर्फ से ढंके श्रीनगर में! लेकिन अपनी भी कुछ बात कहूं। मैं दूसरे तरीके का कायल हूं यह तो आप समझ ही गए होंगे लेकिन जब निकलना ही है, तब एक तीसरा तरीका ही अख्तियार करता हूं। जैसे कहा तो सबसे यह कि बम्बई जा रहे हैं, मगर जब स्टेशन गए तो यह तय करके कि नैनीताल जा रहे हैं और वहां से हिमालय के भीतरी प्रदेशों में, और इस तरह जा निकले-शिलांग !

शिवसागर से आगे सोनारी के पास डि-खू नदी की बाढ़ में कैसे फंस गया था, इसका यही रहस्य है।

अंग्रेजी में कहावत है कि 'एक कील की वजह से राज्य खो जाता है'- वह यों कि कील की वजह से नाल, नाल की वजह से घोड़ा, घोड़े के कारण लड़ाई, और लड़ाई के कारण राज्य से हाथ धोना पड़ता है। हमारे पास छिनने को राज्य तो था नहीं, पर एक दांत मांजने के ब्रुश और मोटर की एक मामूली-सी ढिबरी के लिए हम कैसी मुसीबत में पड़े यह हमीं जानते हैं!

सोनारी एक छोटा-सा गांव है- अहोम राजाओं की पुरानी राजधानी शवसागर से कोई अठारह मील दूर। वहां भी नाम के आकर्षण से चला गया था। यों असम में 'सोना' या 'स्वर्ण' बहुत से नामों में है- सुबनश्री, सोना-भराली, वगैरह- और असम भी 'सोनार असम' सोने का असम कहलाता है। बरसात के दिन थे, रास्ता खराब, एक दिन सवेरे घूमने निकला तो देखा कि नदी बढ़ कर सड़क के बराबर आ गई है। मैं शिवसागर से तीन-चार मील पर था, सोचा कि एक नया दांत-ब्रुश ले लूं क्योंकि पुराना घिस चला था; और मोटर की भी एक ढिबरी ठीक करवाकर ही लौटूं- उसकी चूड़ी घिस जाने से थोड़ा-थोड़ा तेल चूता रहता था, वैसे कोई बहुत जरूरी काम नहीं था। खैर, इसमें कोई दो घंटे लग

गए, खाना खाने में एक घंटा और तीन घंटे बाद वापस लौटने लगे तो देखा, सड़क पर पानी फैल गया है। पानी गहरा नहीं होगा, यह सोच कर मैं मोटर बढ़ाता चला गया। आगे देखा, सब ओर पानी ही पानी है, सड़क का कहीं पता नहीं लगता, सिर्फ पेड़ों की कतार से अंदाजा लग सकता था। पर पानी बड़े जोर से एक तरफ से दूसरी तरफ बह रहा था, क्योंकि सड़क के एक तरफ नदी थी, दूसरी तरफ नीची सतह पर धान के खेत, जिन की ओर पानी बढ़ रहा था। पानी के धक्के से सड़क कई जगह टूट गई थी। मैं फिर भी बढ़ता गया, क्योंकि आखिर पीछे भी तो पानी ही था। पर थोड़ी देर बाद पानी कुछ और गहरा हो गया और उसके धक्के से मोटर भी सड़क पर से हट कर किनारे की ओर जाने लगी। आगे कहीं कुछ दीखता नहीं था क्योंकि सड़क की सतह शायद दो-तीन मील आगे तक बहुत नीची ही थी। सड़क के दोनों ओर जो पेड़ थे उनमें कइयों पर सांप लटक रहे थे। क्योंकि बाढ़ से बचने के लिए वे पहले सड़क पर आते थे और फिर पेड़ों पर चढ़ जाते थे।

मैंने लौटने का ही निश्चय किया। पर सड़क दिखती तो थी नहीं, अंदाज से ही मैं बीच के पक्के हिस्से पर गाड़ी चला रहा था। मोड़ने के लिए उसे पटरी से उतारना पड़ेगा और इधर-उधर सड़क है भी कि नहीं, इसका क्या भरोसा? मैं और एक जगह देख भी चुका था कि आंखों के सामने ही कैसे समूचा ट्रक दलदल में फंसकर गायब हो जाता है। इस मोटर को बिना घुमाए उलटे गियर में ही कोई ढ़ाई मील तक लाया, यहां सड़क कुछ ऊंची थी, उस पर गाड़ी घुमा कर शिवसागर पहुंचा।

शिवसागर से सोनारी को एक दूसरी सड़क भी जाती थी चाय बागानों में से हो कर, यह सड़क अच्छी थी पर इस के बीच में एक नदी पड़ती थी जिसे नाव से पार करना होता था। मैंने सोचा कि इसी रास्ते चलें, क्योंकि सामान तो सब सोनारी में था, मैं डाक बंगले से कुछ घंटों के लिए ही तो निकला था। शिवसागर में एक तो मोटर की ढिबरी कसवानी थी, और दूसरे दांत ब्रुश और कुछ तेल साबुन लेना था, बस। वह भी लौटने की जल्दी के कारण नहीं लिया था!

इस सड़क से नदी तक तो पहुंच गए वह भी बड़ी मुश्किल से क्योंकि रास्ते में बड़ी फिसलन थी और गाड़ी बार-बार अटक जाती थी। नदी में नाव पर गाड़ी लाद भी ली, और पार भी चले गए। यहां भी नदी में बड़ी बाढ़ आई थी और बहते हुए टूटे छप्पर बता रहे थे कि नदी किसी गांव को लीलती हुई आई है- एक भैंस भी बहती हुई आई, और पेड़-पौधों की तो गिनती क्या। उस पार नदी का कगारा ऊंचा था; मोटर के लिए उतारा बना हुआ था। लेकिन नाव से किनारे तक जो तख्ते डाले गए थे, वह ठीक नहीं

लगे थे, मोटर जब तख्तों पर आई और नाव एक तरफ को झुकी तो तख्ते फिसल गए, नाव दूर हट गई, मोटर नीचे गिरी, आधी पानी में, आधी किनारे पर, मैं जोर से ब्रेक दबाए बैठा था, पर ऐसे अधिक देर तक तो नहीं चल सकता था! लेकिन मैं तो मोटर के साथ खुद बंधा था, उतर कर समझा नहीं सकता था। खैर, आध घंटा उस स्वर्गनसैनी पर बैठे-बैठे, असमिया, हिन्दी और बंगला की खिचड़ी में लोगों को बताता रहा कि क्या करें, तब मोटर ऊपर चढ़ाई जा सकी। थोड़ा आगे ही ऊंची जगह गांव था, वहां मोटर रोक कर चाय की तलाश की, यहीं सोनारी से आए दो साइकिल सवारों से मालूम हुआ कि वे कंधे तक पानी में से निकल कर आए हैं- साइकिलें कन्धों पर उठा कर! मोटर तो कदापि नहीं जा सकती।

इस तरह इधर भी निराशा थी। पानी अभी बढ़ रहा था, यह गांव ऊंची जगह पर था पर यहां कैद हो जाना मैं नहीं चाहता था, इसलिए फिर नाव पर मोटर चढ़ा कर उसी रास्ते नदी पार की। सब ने मना किया पर मेरे सर पर भूत सवार था, और हठधर्मी का अपना अनूठा रस होता है!

रात में शिवसागर पहुंचे। एक सज्जन ने ठहरने को जगह दी, भोजन-बिस्तर का प्रबंध भी हो गया, पर दांत का ब्रुश तो उधार नहीं लिया जा सकता! सवेरे-सवेरे चल कर अस्सी मील दूर डिब्रूगढ़ पहुंचे वहां ब्रुश ले कर मुंह हाथ धो कर सुस्थ हुए, यहीं एक कमीज और एक पैंट खरीद कर कपडे बदले, रात के लिए एक कम्बल खरीदा। मन ही मन अपने को कोसा कि न नया दांत ब्रुश लेने के लिए सोनारी निकले होते, न यह मुसीबत होती क्योंकि इस की ऐसी तात्कालिक जरूरत तो थी नहीं, न मोटर की ढिबरी का मामला ही इतना जरूरी था। लेकिन अब उपाय क्या था?

इस तरह बारह दिन और काटने पड़े, क्योंकि सोनारी के सब रास्ते बन्द थे। लौट कर देखा, सोनारी के डाक बंगले में भी पानी भर गया था, कपड़े सब सील कर सड़ रहे थे, किताबें तो गल गई थीं। बचा था तो केवल स्नानघर में ऊंचे ताक पर रखा हुआ साबुन का डिब्बा, और दांतों का ब्रुश !

नक्शे में मैं अब भी देखता हूं। वास्तव में जितनी यात्राएं स्थूल पैरों से करता हूं, उससे ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूं। लोग कहते हैं कि मैंने अपने जीवन का कुछ नहीं बनाया, मगर मैं बहुत प्रसन्न हूं, और किसी से ईर्ष्या नहीं करता। आप भी अगर इतने खुश हों तो ठीक- तो शायद आप पहले से मेरा नुस्खा जानते हैं- नहीं तो मेरी आपको सलाह है, ''जनाब, अपना बोरिया-बिस्तर समेटिए और जरा चलते-फिरते नजर आइए।''

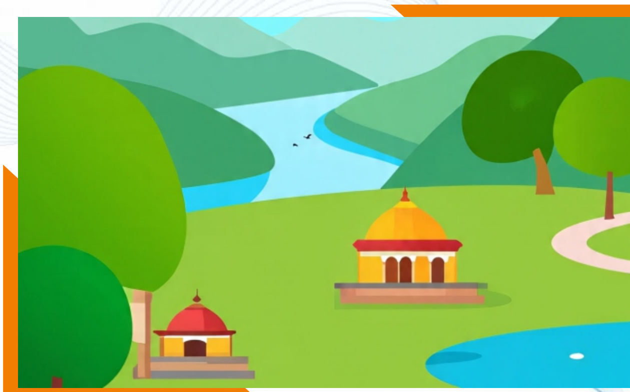

यह आपका अपमान नहीं है, एक जीवन दर्शन का निचोड़ है। 'रमता राम' इसलिए कहते हैं कि जो रमता नहीं, वह राम नहीं। टिकना तो मौत है।

–साभार
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश, देवरिया के कुशीनगर में हुआ। बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता।

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा पिता की देखरेख में घर पर ही हुई, जहां उन्होंने संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषा व साहित्य का अध्ययन किया।

1936-37 में 'सैनिक' और 'विशाल भारत' नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। उन्हें 1964 में 'आंगन के पार द्वार' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1979 में 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

गुरु बिनु भव निध तरइ न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई।।

भावार्थ

यह चौपाई उत्तरकाण्ड में उद्धृत है। गुरु के बिना कोई भी आगे नही बढ़ सकता है चाहे वो कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो।

समकालिक शिक्षा के उद्देश्य
ज्ञान आधारित कौशल अथवा कौशल आधारित ज्ञान

आजकल समकालिक शिक्षा की बहुत चर्चा है, जो वास्तविक समय में होने वाली एक शिक्षण पद्धति है, जो एक ही समय पर तो होती है, लेकिन एक ही स्थान पर नहीं होती। टेलीविजन समकालिक शिक्षा के लिए एक प्रारंभिक उपकरण रहा है। समकालिक शिक्षा का तात्पर्य आमने-सामने के माहौल में वास्तविक समय में सीखना होता है, जैसे कि कक्षा या व्याख्यान कक्ष में, जिससे छात्र और शिक्षक परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया कर सकें। हालांकि, कोविड-19 महामारी के बाद समकालिक शिक्षा में एक बड़ा बदलाव आया है। महामारी के कारण स्कूल बंद होने और कर्मचारियों के दूर से काम करने के कारण, समकालिक शिक्षण (सिंक्रोनस लर्निंग) में आमने-सामने के तत्व में कमी आई है। शिक्षार्थियों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सहित तकनीक के अन्य माध्यमों यथा-जूम, ऑनलाइन वेबिनार और पॉडकास्ट जैसे अनुप्रयोगों के माध्यम से वास्तविक समय में अपने प्रशिक्षकों और साथियों के साथ बातचीत करना सीखा। तात्पर्य यह है कि समकालिक शिक्षण पद्धति एक साथ और संवादात्मक शिक्षण के लिए एक सशक्त शिक्षा मॉडल है। नेतृत्व प्रशिक्षण (वीआईएलटी) सत्र, लाइव स्ट्रीमिंग पाठ, वेबिनार, समूह चर्चा, टीम असाइनमेंट आदि लाइव व्यक्तिगत या ऑनलाइन शिक्षण अनुभव सभी समकालिक शिक्षण के उदाहरण हैं। संक्षेप में कहा जाए तो समकालिक शिक्षण डिजिटल शिक्षण के लचीलापन और व्यक्तिगत शिक्षण की सहभागिता, दोनों ही प्रकारों का सर्वोत्तम लाभ प्रदान करता है।

इस प्रकार के शिक्षण के लिए व्यवसाय शिक्षण प्रबंधन प्रणालियों (एलएमएस) और वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल, यथा- जूम, माइक्रोसॉफ्ट क्लासरूम, गूगल हैंगआउट, गूगल मीट, स्काइप आदि पर निर्भर करते हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे कि इंस्टाग्राम, यूट्यूब, फेसबुक आदि के माध्यम से सीखना भी समकालिक शिक्षण (सिंक्रोनस लर्निंग) के अच्छे उदाहरण हैं, क्योंकि वहां पर किसी लाइव वीडियो को देखने और वहां मौजूद आइकन पर टैप करके अपनी राय या कोई टिप्पणी छोड़ने के क्रम में उस वीडियो-प्रसारण से व्यक्ति सीख रहा होता है, चाहे वह शिक्षण खाना बनाने, मेकअप करने, बागवानी करने या किसी अन्य कार्य-कला के संबंध में हो। देखा जाए तो आज की तेजी से विकसित होती दुनिया में, समकालिक शिक्षा की अवधारणाओं में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। आज से कुछ दशक पूर्व तक पारंपरिक शैक्षणिक मॉडल, जो मुख्य रूप से सैद्धांतिक ज्ञान पर केंद्रित थे, को अब अधिक गतिशील, कौशल-आधारित शिक्षण प्रणालियों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाने लगा है। विभिन्न उद्योगों में कुशल पेशेवरों की लगातार बढ़ती मांग में अधिक व्यावहारिक, हाथों-हाथ सीखने के दृष्टिकोण की आवश्यकता इसके सटीक उदाहरण हैं। परिवर्तन के इस दौर में कौशल-आधारित शिक्षा पर आधारित करियर की अवधारणा का विकसित होना, जो छात्रों की क्षमताओं को बाजार की मांगों के साथ जोड़ती है तथा यह सुनिश्चित करती है कि वे अपने चुने हुए क्षेत्रों में सफल होने के लिए व्यावहारिक कौशल से समृद्ध रहें।

ऐसे में, विश्व भर के शैक्षणिक जगत में विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा की पद्धति पर यह बहस छिड़ना स्वाभाविक ही है कि बच्चों को शिक्षा कैसे दी जानी चाहिए- ज्ञान के माध्यम से अथवा कौशल के माध्यम से। दरअसल, किसी भी परिवार, समाज या राष्ट्र के भविष्य के निर्माण की नींव (बिल्डिंग ब्लॉक्स) बच्चे ही होते हैं, क्योंकि आज वे जैसा और जो भी सीखते हैं, उससे ही उस परिवार, समाज या राष्ट्र के कल का निर्माण होता है। बच्चों का सीखना, चाहे हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अथवा घर पर रहते हुए माता-पिता एवं अभिभावकों के द्वारा हो, उनके द्वारा सीखा गया प्रायः सब कुछ अंततः इस विश्व के 'कल' में योगदान देने वाला होता है।

शायद इसीलिए हमारे पूर्वज कहा करते थे कि बच्चे गीली मिट्टी की तरह होते हैं। उन्हें जैसा और जो भी रूप और आकार प्रदान किया जाता है, वे वैसा ही बन जाते हैं। इसलिए बच्चों की शिक्षा प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके अंतर्गत अच्छे विद्यालयों का चुनाव करना आजकल माता-पिता के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक माना जाता है। स्पष्ट है कि जब कोई अभिभावक अपने बच्चे की शिक्षा के लिए कोई विद्यालय या विशेष शैक्षणिक पद्धति का चुनाव करता है, तो उसका उद्देश्य बच्चे को भविष्य की दुनिया के लिए तैयार करना और एक बेहतर इंसान बनने में मदद करना ही होता है।

यही कारण है कि अभिभावक विद्यालय का चुनाव करते समय विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हैं, यथा- शैक्षणिक पद्धति, पाठ्यक्रम, संकाय एवं बच्चे के समग्र विकास में योगदान देने वाले अन्य प्रमुख कारक। अभिभावकों की इस सक्रियता के कारण विश्व भर के शैक्षणिक जगत में विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा की पद्धति पर आजकल बहस छिड़ी हुई है कि बच्चों को शिक्षा कैसे दी जानी चाहिए- ज्ञान के माध्यम से अथवा कौशल के माध्यम से? वैसे, देखा जाए तो ज्ञान शिक्षण का सैद्धांतिक पक्ष होता है, जिसमें जानकारी, तथ्य और अवधारणाएं शामिल होती हैं। इसे व्याख्यानों और पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से प्राप्त की जाती है। इसलिए ज्ञान-आधारित शिक्षा का अर्थ है- सीखने के अगले चरण में आगे बढ़ने से पहले आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए पढ़ना, सुनना और देखना। वहीं, कौशल, अर्जित ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग होता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो किसी कार्य में कौशल को प्राप्त करने के लिए उससे संबंधित पूर्व में अर्जित ज्ञान को कार्यान्वित करना आवश्यक होता है। बता दें कि किसी भी कार्य में विशेषज्ञता प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका नियमित अभ्यास या परीक्षण और त्रुटि-उन्मूलन है। कौशल-आधारित शिक्षा का उद्देश्य किसी विशेष क्षेत्र में व्यावहारिक विशेषज्ञता विकसित करके ज्ञान को और सुदृढ़ करना होता है।

उदाहरण के लिए, एक बढ़ई को किसी प्रोजेक्ट को शुरू करने से पहले ब्लूप्रिंट को मापने और पढ़ने का ज्ञान होना चाहिए, लेकिन बढ़ई के किसी प्रोजेक्ट को सफलतापूर्वक परिणाम तक पहुंचाने के लिए यह ज्ञान पर्याप्त नहीं है। इसके लिए बढ़ई को अपने कार्यों को करने के लिए कौशल विकसित करने की भी आवश्यकता होती है। तात्पर्य यह है कि किसी कार्य से संबंधित ज्ञान होना व्यक्ति को उसमें कुशल नहीं बनाता है। इसी प्रकार, किसी कार्य में कुशल होने का तात्पर्य यह नहीं है कि व्यक्ति के पास उसमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक ज्ञान मौजूद हैं। बढ़ईगिरी का उदाहरण इन दो शिक्षण विधियों के बीच बहुत स्पष्ट अंतर प्रस्तुत करता है। गौरतलब है कि परंपरागत रूप से भारत में पेश किए जाने वाले अधिकांश पाठ्यक्रमों विशेषकर उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों यथा- बीए, बीएससी या बीकॉम में ज्ञान निर्माण करने पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में यह प्रवृत्ति तेजी से बदली है, विशेषकर जब से, डिग्री पाठ्यक्रमों में कुछ व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को वैकल्पिक रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है। कई शिक्षण संस्थानों ने अपने पाठ्यक्रमों में अब कौशल-आधारित घटक को शामिल करना शुरू कर दिया है, चाहे वह प्रयोगशालाओं में हो या अस्पतालों, समुदाय-आधारित कार्य, उत्पादन इकाइयों या कंपनियों में इंटर्नशिप जैसी सेटिंग में।

हालांकि, आज भी अधिकतर मामलों में, शिक्षार्थियों द्वारा अर्जित और नियोक्ताओं द्वारा अपेक्षित कौशल के बीच वियोग या अंतर का पाया जाना गंभीर चिंता का विषय है। इस अंतर को दूर करने के लिए कौशल-आधारित पाठ्यक्रमों में प्रतिमान बदलाव करना आवश्यक है। इस मामले में कुछ लोगों का मत है कि शिक्षार्थियों द्वारा अर्जित और नियोक्ताओं द्वारा अपेक्षित कौशल के बीच के अंतर को दूर करने के लिए शिक्षार्थियों को कौशल आधारित ज्ञान (स्किल बेस्ड नॉलेज) प्रदान किया जाना चाहिए, जबकि कुछ लोग यह मानते हैं कि उन्हें ज्ञान आधारित कौशल (नॉलेज बेस्ड स्किल्स) से युक्त किया जाना चाहिए। बता दें कि कौशल आधारित ज्ञान (स्किल बेस्ड नॉलेज) का अर्थ किसी विशेष कार्य या गतिविधि को करने के लिए आवश्यक ज्ञान और क्षमता का होना होता है। यह ज्ञान केवल सैद्धांतिक जानकारी तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसे व्यावहारिक रूप से लागू करने की क्षमता भी इसमें शामिल होती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को 'टाइपिंग' का कौशल आधारित ज्ञान है, तो इसका अर्थ यह है कि उसे न केवल यह पता है कि कीबोर्ड कैसे काम करता है, बल्कि वह तेजी से और कुशलतापूर्वक टाइप भी कर सकता है। इसी प्रकार, यदि किसी व्यक्ति को 'सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट' का कौशल आधारित ज्ञान है, तो इसका तात्पर्य यह है कि उसे न केवल कोडिंग के बारे में पता है, बल्कि वह वास्तविक सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन का निर्माण भी कर सकता है। सच कहा जाए तो कौशल आधारित ज्ञान केवल तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं है। इसमें संचार, टीम वर्क, और समस्या-समाधान जैसे सूक्ष्म कौशल (सॉफ्ट स्किल) भी शामिल हैं।

इसी प्रकार, ज्ञान आधारित कौशल (नॉलेज बेस्ड स्किल्स) से तात्पर्य उन कौशलों से है जो किसी व्यक्ति के ज्ञान, समझ और सूचना को लागू करने की क्षमता पर आधारित होते हैं। ये कौशल किसी व्यक्ति को किसी विशेष क्षेत्र में समस्याओं को हल करने, निर्णय लेने और कार्य करने में सक्षम बनाते हैं। ये सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने के बारे में नहीं हैं, बल्कि उस ज्ञान को वास्तविक विश्व की स्थितियों में लागू करने के बारे में भी है। उदाहरण के लिए, किसी बीमारी के बारे में जानकारी रखना ज्ञान है, लेकिन उस ज्ञान का उपयोग करके किसी रोगी की चिकित्सा करना कौशल है। आज के 'नॉलेज बेस्ड इकोनोमी' के दौर में ज्ञान आधारित कौशल बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह कौशल व्यक्तियों को अधिक प्रभावी ढंग से काम करने, बेहतर निर्णय लेने तथा अधिक सफलता प्राप्त करने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, यह कौशल व्यक्तियों को बदलते समय के साथ अनुकूलित करने एवं नई चुनौतियों का सामना करने में भी मदद करता है। यही कारण है कि आजकल अधिकतर विशेषज्ञ ज्ञान और कौशल-आधारित शिक्षा के बीच संतुलन की बात करने लगे हैं। जाहिर है कि ज्ञान और कौशल-आधारित शिक्षण का यह संयोजन शिक्षार्थियों को स्वतंत्र विचारकों में बदलने में महती भूमिका निभाता है, जिससे वे भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार होते हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे पास ज्ञान-आधारित और कौशल-आधारित दोनों तरह की शिक्षा प्रणालियां होनी चाहिए। साथ ही, शिक्षार्थियों को उनकी सीखने की शैली के आधार पर इन दोनों शिक्षा प्रणालियों में से किसी एक को चुनने की अनुमति होनी चाहिए। इस मामले में, हम शिक्षा के जर्मन मॉडल से प्रेरणा ले सकते हैं, जहां पर शिक्षार्थियों को विभिन्न स्तरों पर आगे बढ़ने के साथ-साथ उनकी क्षमताओं के आधार पर प्रणालियों के बीच बदलाव करने का अवसर प्रदान किया जाता है। भारत में इस विचार को गति देने के लिए, शिक्षार्थियों को उच्च विद्यालय स्तर से लेकर स्नातक स्तर तक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से परिचित कराया जाना चाहिए। तात्पर्य यह कि उच्च विद्यालय स्तर पर ही एक शिक्षार्थी, जो शोध या अकादमिक क्षेत्र में रुचि रखता है, उसे ज्ञान-आधारित शिक्षा का विकल्प चुनने में सक्षम होना चाहिए और एक शिक्षार्थी, जो विशिष्ट नौकरी बाजारों का पता लगाना चाहता है, वह विभिन्न व्यवसायों में पाठ्यक्रम चुन सकता है। इससे शिक्षार्थियों को आगे आने वाले संभावित करियर विकल्पों की बेहतर समझ मिलेगी और वे भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिए पहले से ही तैयार हो सकेंगे। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति दसवीं बोर्ड करने के बाद 11वीं और 12वीं में प्रवेश लेता है, तो शिक्षण संस्थानों में ऐसी व्यवस्था और साथ ही, वहां प्रवेश लेने वाले व्यक्ति को ऐसी अनुमति होनी चाहिए कि वह नियमित विषयों को लेने के अतिरिक्त कुछ उच्च स्तर के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का भी चयन कर सके। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो प्रत्येक स्तर पर, कौशल-आधारित घटक को किसी उद्योग या कंपनी के सहयोग से पढ़ाया जाना चाहिए, जहां शिक्षार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हो सके।

—साभार
श्री चेतनादित्य आलोक

साढ़े तीन दशकों से भी अधिक समय से आप पत्रकारिता को अपना धर्म मानकर निर्भीक, निर्भेद और निश्शंक लेखन कर रहे हैं। देश-विदेश से प्रकाशित होने वाली अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं पर्यावरणीय पहलुओं तथा वैश्विक घटनाक्रमों के अलावा प्रासंगिक एवं सामयिक विषयों पर अब तक आपके हजारों आलेख, राजनीतिक विश्लेषण, कहानियां, कविताएं, लघु कथाएं आदि प्रकाशित हो चुके हैं। 'इंडिया ऐज आइ नो इट' नामक एक छोटी सी पुस्तक 1998 में तथा आदिवासियों के जीवन, उनकी कला, साहित्य, संगीत, रीति-रिवाजों, परंपराओं आदि पर आधृत 'सौग ऑफ दि वूड्स' नामक पुस्तक 1993 में प्रकाशित। विशेष रूप से, 'इंडिया ऐज आइ नो इट' को आपके स्कैंडिनेवियन मित्रों ने बहुत पसंद किया। वहीं, 'सौग ऑफ दि वूड्स' को अनेक देशी-विदेशी मानव-विज्ञानियों ने सराहा।

जहां सुमति तहं संपति नाना।
जहां कुमति तहं बिपति निदाना।।

भावार्थ

यह चौपाई सुंदरकाण्ड में उद्धृत है। हे नाथ! पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि (अच्छी बुद्धि) और कुबुद्धि (खोटी बुद्धि) सबके हृदय में रहती है, जहां सुबुद्धि है, वहां नाना प्रकार की संपदाएं (सुख और समृद्धि) रहती हैं और जहां कुबुद्धि है वहां विभिन्न प्रकार की विपत्ति (दुःख) का वाश रहता है।

बाल बत्तीसी

कभी खाली न होने वाले घड़े की कहानी

बहुत समय हुआ पाटलीपुत्र में शुभदत्त नाम का एक आदमी रहता था। वह रोजाना लकड़ी का एक बोझा जंगल से काटकर लाता था और उसे बेचकर अपने परिवार का पालन करता था। एक दिन वह लकड़ी की तलाश में दूर जंगल में चला गया। वहां उसने स्वर्णिम वस्त्र और आभूषण पहने हुए चार यक्षों को देखा। यक्षों ने उसे डरा हुआ देखकर धीरज दिया और उससे पूछा कि वह किस प्रकार अपना गुजारा करता है। उसे गरीब जानकर उन्हें दया आ गयी और वे उससे बोले, 'तुम हमारे घर में नौकर हो जाओ, हम तुम्हारे परिवार का पालन करेंगे और तुम्हें कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। वह नौकरी करने के लिये तैयार हो गया और उनके साथ रहने लगा। वह उनके नहाने का सामान जुटा देता था और उनके बतलाए हुए दूसरे छोटे-मोटे काम कर देता था। जब भोजन का समय हुआ, तब उन्होंने उससे एक घड़े में से भोजन देने को कहा। घड़े को खाली देखकर वह कुछ झिझका। यक्षों ने फिर मुस्कराते हुए कहा, 'क्या तुम नहीं समझते? घड़े में हाथ डालो, जो तुम चाहोगे वही चीज इसमें मिलेगी। यह घड़ा जिस वस्तु की आवश्यकता होती है उसी को दे देता है।' उसने उनके कहने पर घड़े में हाथ डाला तो देखता है कि उसमें सभी खाने-पीने की चीजें मौजूद हैं। उसने उसमें से उनके इच्छानुसार भोजन करा दिया और खुद भी अपने इच्छानुसार जी भरकर भोजन किया।

अब वह रोजाना बड़ी भक्ति और लगन से उनकी सेवा करने लगा। केवल उसे अपने परिवार की चिन्ता थी। यह जानकर यक्षों ने स्वप्न में उसके दुःखी परिवार को संतुष्ट कर दिया। उनकी इस कृपा को देखकर उसे बहुत प्रसन्नता हुई। जब वह एक महीने उनकी सेवा कर चुका, तब यक्षों ने उसकी स्वामिभक्ति से प्रसन्न होकर उससे कहा, कोई वरदान मांगो। कहो तुम क्या चाहते हो? 'उसने कहा, 'यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे यह कभी खाली न होने वाला घड़ा दे दीजिये।' यक्षों ने उससे कहा, 'कोई दूसरी चीज मांगो। तुम इसे रख नहीं सकोगे। यदि यह टूट गया तो फिर यह तुम्हारे पास से चला जायगा।' उनके सचेत करने पर भी उसने कोई दूसरा वरदान पसंद नहीं किया। तब उन्होंने उसे वही घड़ा दे दिया। उसने उन्हें झुककर प्रणाम किया और बहुत प्रसन्न होते हुए घड़ा लेकर जल्दी अपने घर आ गया।

उसे वापस आया हुआ देखकर घरवालों को बहुत प्रसन्नता हुई। उसने चुपके से घड़े में से बहुत-सी खाने-पीने की चीजें निकालीं और भेद छिपाने के लिये उन्हें दूसरे बर्तनों में रख दिया। फिर उसने अपने रिश्तेदारों और परिवार के साथ भोजन किया। सब उसके दिये हुए इतने अच्छे पदार्थों को खाकर बहुत प्रसन्न हुए। अब उसने जंगल में से लकड़ी का बोझा लाना बंद कर दिया था और वह सब प्रकार का आनन्द भोग रहा था। एक दिन जब वह शराब के नशे में था, उसके रिश्तेदारों ने उससे पूछा, 'इन सब आनंदों को तुम किस प्रकार प्राप्त करते हो?' यह सुनकर वह घमंड में फूल गया। नशे के कारण घड़े की सारी करामात को उन्हें साफ बता दिया। फिर घड़े को लाकर और उसे अपने कंधे पर रखकर बड़ी शान से नाचने लगा। नाचते समय घड़ा उसके कंधे पर से फिसल गया और गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। फिर शीघ्र ही उस घड़े के सब टुकड़े आपस में जुड़ गये और जुड़कर वह अपने असली मालिकों के पास चला गया। इसे देखकर वह बहुत निराश और दुःखी हुआ, पर अब वह कर ही क्या सकता था? उसकी पहले जैसी ही दशा हो गयी और वही लकड़ी के बोझे फिर जंगल से लाने पड़े। उसकी यक्षों से फिर कभी भेंट नहीं हुई।

इसलिये तुम देखते हो कि अभागे मनुष्य, जिसकी बुद्धि मदिरापान अथवा दूसरी बुरी आदतों और मूर्खताओं से भ्रष्ट हो जाती है, यदि वे धन को किसी प्रकार प्राप्त भी कर लेते हैं तो भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। वह धन-वैभव उन्हें छोड़कर चला जाता है। सदाचारी और महान पुरुष ही इसकी रक्षा और उपभोग कर सकते हैं।

—साभार
पं० ब्रजभूषणलाल शर्मा
कल्याणकारी बाल-कहानियां
गीताप्रेस गोरखपुर

कार्यालयीन टिप्पणियां

Accepted provisionally	अनंतिम रूप से स्वीकृत
Accumulated balance	संचित शेष
Analytical estimating	विश्लेषणात्मक अनुमान
Benefit of adhoc relief	तदर्थ राहत हितलाभ
For perusal	अवलोकनार्थ
In supersession of	का अधिक्रमण करते हुए
In toto	संपूर्णतः, पूरी तरह से
Keep in abeyance	प्रास्थगित रखना
On deputation	प्रतिनियुक्ति पर
On the contrary	इसके प्रतिकूल, इसके विपरीत
Please sign in Hindi	कृपया हिंदी में हस्ताक्षर करें
Presumptive rate of pay	प्रकल्पित वेतन की दर
Status quo	यथापूर्व स्थिति
Supplementary test	संपूरक परीक्षण
Unclassified document	अवर्गीकृत दस्तावेज
With retrospective effect	पूर्वव्यापी प्रभाव सहित

अंतस के 27 वें अंक का विमोचन
26 जनवरी 2025

आईआईटी कानपुर में आयोजित टेककृति-2025 की झलकियां

संपादक- श्री विजय कुमार पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी
officer1_rp@iitk.ac.in

ईमेलः arkverma@iitk.ac.in; hindi_cell@iitk.ac.in
वेबः https://www.iitk.ac.in/new/antas

सम्पर्कः

राजभाषा प्रकोष्ठ
204, शैक्षिक कार्य भवन
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
पिन- 208016
दूरभाषः 0512-259-7122

फेसबुक | एक्स | राजभाषा प्रकोष्ठ | ई-पत्रिका | लिंक्ड इन | इंस्टाग्राम | यूट्यूब